RNI नं. : 7387/63
वर्ष : 62 अंक : 24
मुद्रण तिथि : 29-30 मार्च 2025
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक प्रेषण तिथि : 29 मार्च 2025-01 अप्रैल 2025
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
ISSN : 2456-611X
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

## भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर हार्दिक शुभकामनाएँ!

# संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

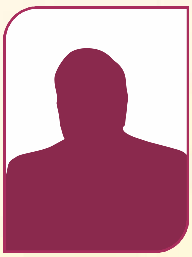
स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी
सिपानी, बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह
(बोहरा) पिपलिया कलां
MID No. : 128966

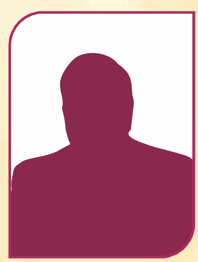
गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

## विश्व नवकार महामंत्र दिवस 9 अप्रैल को

**समय : प्रात: 8:01 से 9:36 तक**

जिनशासन के इतिहास में प्रथम बार **9 अप्रैल 2025** को '**विश्व नवकार महामंत्र दिवस**' मनाने का अवसर उपस्थित हो रहा है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य विश्व में शांतिपूर्ण वातावरण का प्रतिस्थापन करना है, ताकि सारी दुनिया इस महामंत्र की महिमा व विहंगमता से परिचित हो सके। इस आयोजन में अधिकाधिक नवकार मंत्र जाप का लक्ष्य रखें। प्रत्येक व्यक्ति दिनभर में कम से कम 9 मालाओं का जाप करने का लक्ष्य रखे।

यह केवल एक आध्यात्मिक आयोजन नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक शक्ति और धर्म की महानता को प्रदर्शित करने का एक अनुपम अवसर है। न केवल जैन समाज, बल्कि सकल समाज के हर वर्ग के श्रद्धालु इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले सकते हैं। जहाँ चारित्रात्माओं के प्रवचन संभावित हों, वहाँ प्रवचन से पूर्व अनुकूल समय तक का रख सकते हैं। जाप से पूर्व यहाँ दिए गए QR कोड को स्कैन कर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें।

- राष्ट्रीय महामंत्री

SCAN THE QR CODE & REGISTER NOW

# संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

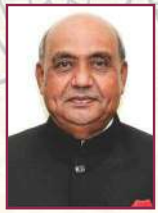
श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

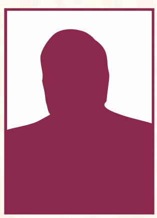
श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती बसंती देवी पींचा
नोखा/गुवाहाटी
MID No. : 151607

## चतुर्थ चरण

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा
डोंगरगाँव
MID No. : 143002

स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी
उदयपुर
MID No. : 112429

## कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

### द्वितीय चरण

* श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता

### तृतीय चरण

* श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * गुप्तदान-भीलवाड़ा * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव

### प्रथम चरण

* स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * गुप्त-बंगईगाँव * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लूणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता * श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम * श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता * श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत * श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा * श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम


|| जय गुरु नाना ||   || जय महावीर ||   || जय गुरु राम ||

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति**

(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

राम चमकते भानु समाना

**3100 एकासन**

अक्षय तृतीया

**30 अप्रैल 2025 बुधवार**

अक्षय तृतीया पर इक्षु रस का महत्त्व पहचाना,
श्रेयांश सम पारणा की इच्छा को माना।
वर्षीतप की महिमा को हृदय में उतारा,
अनुमोदना में एकासना का संकल्प है धारा।।

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ. भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

## संक्षिप्त परिचय

# मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा

| | | |
|---|---|---|
| **जन्म स्थान** | : | नोखा, बीकानेर (राज.) |
| **मूल निवासी** | : | देशनोक (राज.) (प्रवासी : दिल्ली) |
| **जन्म तिथि** | : | 12 जुलाई 2006 |
| **वैराग्यकाल** | : | लगभग 8 माह |
| **व्यावहारिक शिक्षा** | : | 12वीं उत्तीर्ण |
| **धार्मिक अध्ययन** | : | श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 1 से 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का 1 अध्ययन, पुच्छिंसु णं, लघुदंडक, गति-अगति, जीवधड़ा, श्री भगवती सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े |
| **धार्मिक परीक्षाएँ** | : | जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1 से 5 |
| **पदयात्रा** | : | लगभग 100 किमी. |

## पारिवारिक परिचय

| | | |
|---|---|---|
| **पड़दादाजी-पड़दादीजी** | : | स्व. श्री सोहनलाल जी-स्व. श्रीमती मनोहरी देवी सुराणा |
| **दादाजी-दादीजी** | : | स्व. श्री पारसमल जी-श्रीमती ईचरज देवी सुराणा |
| **बड़े दादाजी-बड़ी दादीजी** | : | गुलाबचंद जी-शांति देवी, चेतनमल जी-कंचन देवी, देवचंद जी-स्व. श्रीमती विमला देवी, स्व. श्रीमती तारा देवी सुराणा (सांसारिक धर्मपत्नी श्री मंगल मुनि जी म.सा.) |
| **पिताजी-माताजी** | : | नरेंद्र जी-जयश्री जी सुराणा |
| **चाचाजी-चाचीजी** | : | सुरेंद्र जी-मोनिका जी, प्रवीण जी-चाँदनी जी सुराणा |
| **बहन** | : | मुमुक्षु सुश्री स्नेहा जी सुराणा (आपके साथ ही दीक्षित), याशिका, अर्पिता सुराणा |
| **भाई** | : | ऋषभ, दर्शल सुराणा |
| **नानाजी-नानीजी** | : | हुक्मचंद जी-सुशीला देवी कुंभट |
| **मामाजी-मामीजी** | : | मनोज जी-संजू देवी, राजेश जी-रीना देवी, मुकेश जी-पिंकी जी कुंभट |
| **परिवार से दीक्षित** | : | श्री मंगल मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय बड़े दादाजी) |

## संक्षिप्त परिचय

# मुमुक्षु सुश्री स्नेहा जी सुराणा

| | | |
|---|---|---|
| **जन्म स्थान** | : | दिल्ली |
| **मूल निवासी** | : | देशनोक (राज.) (प्रवासी : दिल्ली) |
| **जन्म तिथि** | : | 1 जुलाई 2010 |
| **वैराग्यकाल** | : | लगभग 8 माह |
| **व्यावहारिक शिक्षा** | : | 8वीं उत्तीर्ण |
| **धार्मिक अध्ययन** | : | श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 1 से 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का 1 अध्ययन, पुच्छिंसु णं, लघुदंडक, गति-अगति, जीवधड़ा, श्री भगवती सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े |
| **धार्मिक परीक्षाएँ** | : | जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1 से 2 |
| **पदयात्रा** | : | लगभग 100 किमी. |

## पारिवारिक परिचय

| | | |
|---|---|---|
| **पड़दादाजी-पड़दादीजी** | : | स्व. श्री सोहनलाल जी-स्व. श्रीमती मनोहरी देवी सुराणा |
| **दादाजी-दादीजी** | : | स्व. श्री पारसमल जी-श्रीमती ईचरज देवी सुराणा |
| **बड़े दादाजी-बड़ी दादीजी** | : | गुलाबचंद जी-शांति देवी, चेतनमल जी-कंचन देवी, देवचंद जी-स्व. श्रीमती विमला देवी, स्व. श्रीमती तारा देवी सुराणा (सांसारिक धर्मपत्नी श्री मंगल मुनि जी म.सा.) |
| **पिताजी-माताजी** | : | नरेंद्र जी-जयश्री जी सुराणा |
| **चाचाजी-चाचीजी** | : | सुरेंद्र जी-मोनिका जी, प्रवीण जी-चाँदनी जी सुराणा |
| **बहन** | : | मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा (आपके साथ ही दीक्षित), याशिका, अर्पिता सुराणा |
| **भाई** | : | ऋषभ, दर्शल सुराणा |
| **नानाजी-नानीजी** | : | हुक्मचंद जी-सुशीला देवी कुंभट |
| **मामाजी-मामीजी** | : | मनोज जी-संजू देवी, राजेश जी-रीना देवी, मुकेश जी-पिंकी जी कुंभट |
| **परिवार से दीक्षित** | : | श्री मंगल मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय बड़े दादाजी) |

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

# आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में दिए जाने वाले **'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार'** के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

## 1. पुरस्कार के लिए पात्रता एवं नियम

(1.1) यह पुरस्कार आचरण पर आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है, वही व्यक्ति इस पुरस्कार हेतु नामांकित हो सकता है।

(1.2) इस पुरस्कार के लिए जो स्वयं को पात्र समझते हैं, आवेदन कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा भी इस प्रकार के श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम प्रस्तावित किया जा सकता है।

(1.3) पुरस्कार के लिए जाति, धर्म एवं आयु आदि का कोई बंधन नहीं रहेगा।

## 2. पुरस्कार का स्वरूप

(2.1) पुरस्कृत होने वाले समता मनीषी को दो लाख रुपए का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा किसी गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

## 3. आवृति - द्विवार्षिक

: निवेदक :
रिटायर्ड जस्टिस जे.के. रांका, जयपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार)

**प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :**
केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ,
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008
Email : ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

# आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

आवृति द्विवार्षिक

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने समाज व विश्व को समता दर्शन और व्यवहार की अनमोल विरासत प्रदान की। आचार्यश्री की पुण्यस्मृति में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा '**आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार**' हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

## 1. पात्रता :-

(1.1) यह पुरस्कार शिक्षा, समाज सेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जन सेवा-क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है।

(1.2) जनसेवा पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति अथवा संस्था, जो भारत में उपर्युक्त जन सेवा में कार्यरत हो, नामांकित किया जा सकता है।

## 2. आवेदन के नियम :-

(2.1) आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख हो। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकॉर्ड अर्थात् समाचार-पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र, स्मृति चिह्न के फोटोग्राफ आदि भी अवश्य भिजवाएँ।

(2.2) नामांकित व्यक्ति एवं संस्था की सेवा से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के लेटरहेड पर अनुशंसा-पत्र भी संलग्न किए जा सकते हैं। चूँकि यह पुरस्कार सेवा कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जा रहा है।

## 3. स्वरूप :-

(3.1) इस हेतु चयनित व्यक्ति अथवा संस्था को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से दो लाख रुपए की राशि का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

:::: निवेदक ::::
अजय पारख, रायपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार)

**प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :**

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)

मो.नं. : 7665001008 Email : ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

# सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

## 1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार Award of Excellence के स्वरूप में भारत सरकार की उच्च प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत, जो जैन धर्मावलंबी शीर्षस्थ पदाधिकारी के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर जैन समाज को गौरवान्वित करते हैं, वे इस पुरस्कार हेतु चयनित किए जाने के पात्र समझे जाते हैं।

## 2. पुरस्कार के नामांकन

(2.1) किसी भी उपयुक्त पदाधिकारी, जो जैन मतावलंबी हो, का उपर्युक्त पुरस्कार हेतु नामांकन प्रस्तुत किया जा सकता है।

(2.2) जिस व्यक्ति को नामांकित किया जा रहा है, कृपया उसका पूरा नाम, पता, प्रशासनिक पद, संपर्क विवरण, सेवाक्षेत्र, निष्पादन रिकॉर्ड आदि का विस्तृत उल्लेख नामांकित अथवा संस्तुति में समाविष्ट करें।

## 3. पुरस्कार का स्वरूप

(3.1) चयनित पुरस्कार विजेता को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से एक लाख रुपए का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

## 4. आवृति : वार्षिक

निवेदक :
आई.ए.एस. उत्तमचंद नाहटा, दिल्ली
संयोजक
(सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति
उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार समिति)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है।
प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

**प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :**

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008 Email : ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

# स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

## 1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला व संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला व संस्कृति और कथा, निबंध, नाटक, संस्मरण व जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर दिया जाता है।

## 2. पुरस्कार के नियम

(2.1) पुरस्कार हेतु प्रकाशित/अप्रकाशित (पांडुलिपि) अथवा दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आदेवन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती है।

(2.2) अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

(2.3) प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में (वर्ष 2016 से पूर्व नहीं) एवं घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिए अर्थात् पुरस्कार हेतु प्रस्तुत कृति का प्रकाशन वर्ष 2016 के पश्चात् का होना चाहिए।

(2.4) पुरस्कार मूल्यांकन के लिए कृति की मुद्रित अथवा पांडुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होंगी। पांडुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जाएँगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जाएँगी।

(2.5) अप्रकाशित कृति (पांडुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बँधी होनी चाहिए।

(2.6) प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण-पत्र साथ भेजें।

## 3. स्वरूप

(3.1) पुरस्कार के अंतर्गत संघ की ओर से 51 हजार रुपए की राशि का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

निवेदक : रिटायर्ड आई.ए.एस. प्रदीप बुरड़, जयपुर
संयोजक, स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति

आवृत्ति : वार्षिक

**प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :**

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008
Email : ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

## :: अनुक्रमणिका ::


रुक्मिणी विवाह........................................ 12
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र.................... 17
आदर्श के प्रतिरूप भगवान महावीर............. 19
श्रमणोपासक हेडलाइंस.............................. 23
गुरुचरण विहार समाचार............................ 24
विविध समाचार....................................... 40
विविध भेंट मार्फत.................................... 44
विनम्र श्रद्धांजलि.................................... 51
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति............... 55
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ............. 57


सुविचार

## संलेखना-संथारा (2)

शरीर अनित्य यह, क्षणिक चंचल यह।
अशुचि से बना यह, अशुचि से भरा है।।
आज चाहे कल इसे, छोड़ना पड़ेगा प्रज्ञ!
सहज तटस्थ रह, ज्ञानी कब डरा है।।
जीर्ण-शीर्ण जामा जैसे, देह को बदलना नहीं।
समझ सयाने मृत्यु, सत्य तथ्य खरा है।।
वीर कहे गौतम से, पंडितमरण मीत।
आत्म-व्याघ्र बरी कर, तन कठघरा है।।

*साभार – वीर कहे गौतम से*

# सुखी जीवन का स्रोत

चिंतन

**–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

शास्त्रों के सिद्धांतों का ज्ञान पालना एक बात है, जीवन जीने का ज्ञान पालना अलग बात है। कोरा ज्ञान जीवन में सुख नहीं दे सकता। जीवन में जो ज्ञान रम जाए, वह जीवन को सुखी बना देता है। ड्राइवर यह जानता है कि चढ़ाई के समय कैसे गाड़ी को कंट्रोल करना एवं दाएँ-बाएँ मोड़ते समय क्या सावधानी रखनी चाहिए। यदि वह इन तथ्यों का विज्ञान न रखे तो गाड़ी का मंजिल तक पहुँचना संदिग्ध बना रहता है। वैसे ही जीवन व्यवहार का ज्ञान न हो तो व्यक्ति सुखी नहीं बन सकता। जैसे रोड पर चलते समय दाएँ-बाएँ मोड़ आते रहते हैं वैसे ही सामुदायिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव व मोड़ आते रहते हैं। वे न आएँ यह संभव नहीं है। वे तो आएँगे। उनमें स्वयं को कैसे व्यवस्थित रखना इसका विज्ञान होना जरूरी है।

समुदाय में रहने वाले सभी सदस्यों की समझ एक जैसी नहीं हो सकती। सारे एक ही साँचे में ढले हुए नहीं होते। एक ही साँचे में ढाली गई चीजों में भी अंतर आ जाता है तो व्यक्तियों में अंतर न आए, यह संभव नहीं है। कई व्यक्ति किसी भी विषय को अत्यंत शीघ्रता से समझ लेते हैं तो अन्य कई ऐसे भी होते हैं जिन्हें अनेक बार समझाने पर ही विषय समझ में आता है। इसलिए कोई सोचे कि यह एक बार में ही क्यों नहीं समझ लेता तो ऐसा सोचने मात्र से उसमें वह समझ आ ही जाए जरूरी नहीं है। अतः समुदाय में रहते हुए उक्त कारणों से उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है। उन उतार-चढ़ाव की स्थितियों को पर्व सम कराने वाले होते हैं, जिससे जीवन में पुनः नई ऊर्जा का संचार होने लगता है। पर्व, गाँठ को भी कहा जाता है। पर्व से जैसे बाँस मजबूत रहता है, वैसे ही पर्व से आत्मीय भाव सघन हो जाते हैं। सामुदायिक जीवन की समरसता के लिए पर्व एक सशक्त कड़ी है। पर्व की भावना के अनुरूप जीवन को समरसता से सराबोर करते हुए, जीवन व्यवहार की अहमियत को समझते हुए सम्यक् प्रकार से जीवन जीने का प्रयत्न किया जाए।

फाल्गुन शुक्ल 14, मंगलवार, 22.03.2016

साभार- आरोह

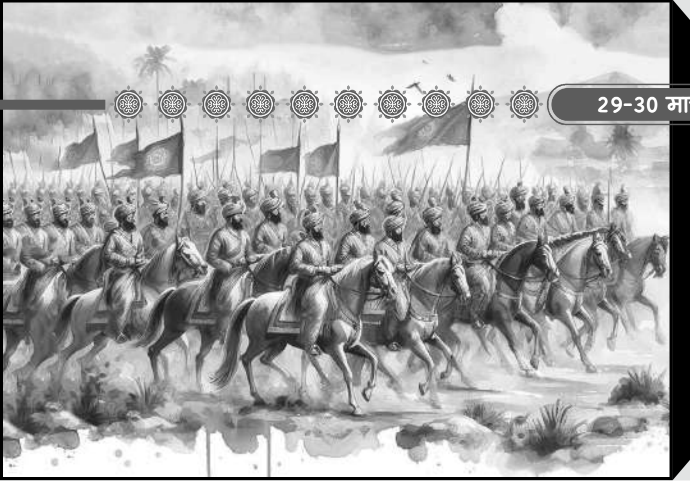

धर्मदेशना

# रुक्मिणी विवाह

# युद्ध

27-28 फरवरी 2025 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

किन्हीं दो व्यक्तियों या दो समूहों का पक्ष-विपक्ष में होकर परस्पर या एक पक्ष का दूसरे पक्ष पर प्रहार करना, मारना, काटना, हानि पहुँचाना युद्ध कहा जाता है। ऐसे युद्ध के लिए मनुष्य तभी तैयार होता है, जब उसमें से सात्विक भावना निकल जाती है और उसके स्थान पर राजसी या तामसी भावना अपना स्थान जमा लेती है। मनुष्य में जब तक सात्विक भावना रहती है, तब तक उसे चाहे कोई मार डाले, उसके शरीर को क्षत-विक्षत कर डाले या उसकी बड़ी से बड़ी हानि कर डाले तब भी वह अपने में प्रतिहिंसा की भावना कदापि नहीं आने देगा। इसके विपरीत यानी सात्विक भावना के अभाव में मनुष्य राग या द्वेष के वश होकर युद्ध के लिए तैयार होता है और युद्ध करता है।

युद्ध विशेषतः लालसा की पूर्ति के लिए होता है। फिर वह लालसा द्रव्य, भूमि या स्त्री की हो या यश-बड़ाई आदि की, परन्तु युद्ध का प्रधान कारण लालसा ही है। मनुष्य लालसा के वशीभूत ही भीषण रक्तपात करने-कराने को उतारू होता है। यद्यपि कभी-कभी लालसा के अधीन व्यक्ति से अपनी या दूसरे की रक्षा करने के लिए भी युद्ध करना पड़ता है, परन्तु इस प्रकार के युद्ध का कारण भी लालसा ही है। यदि वह पहला व्यक्ति लालसा के अधीन नहीं हुआ होता तो उस दूसरे व्यक्ति को रक्षा के नाम पर युद्ध क्यों करना पड़ता?

युद्ध न्याय की रक्षा के लिए भी किया जाता है और अन्याय की वृद्धि के लिए भी। किसी भी कारण से हो और किसी भी लिए किया जाए, धार्मिक दृष्टि से हिंसात्मक युद्ध निन्द्य और त्याज्य है। प्रसंगवश युद्ध का वर्णन किया जाए यह बात दूसरी है, परन्तु कोई भी धार्मिक व्यक्ति या धर्मशास्त्र युद्ध का कदापि समर्थन नहीं करते।

सैनिकों के मुख से रुक्मिणी-हरण का समाचार सुनकर शिशुपाल ने युद्ध की घोषणा कर दी। शिशुपाल की सेना युद्ध के लिए तैयार हो गई। कृष्ण द्वारा अपनी बहन का अपहरण सुनकर रुक्म भी बहुत क्रुद्ध हुआ। वह भी कृष्ण को जीवित पकड़ लाने या मार डालने की तैयारी करने लगा।

कुण्डिनपुर के प्रमुख नागरिकों ने विचार किया कि रुक्मिणी पहले से ही श्रीकृष्ण को चाहती थी। वह शिशुपाल को पति नहीं बनाना चाहती थी। फिर भी शिशुपाल को बुलाया और शिशुपाल बारात सजाकर आया। अब जब रुक्मिणी ने अपना इच्छित वर पा लिया है तब शिशुपाल और रुक्म का कृष्ण से युद्ध करना ठीक नहीं है। यदि कृष्ण ने रुक्मिणी की इच्छा के प्रतिकूल उसका अपहरण किया होता तो श्रीकृष्ण का कार्य अन्याय कहा जाता और हम लोग भी श्रीकृष्ण के विरुद्ध होकर न्याय का साथ देते तथा श्रीकृष्ण को दण्डनीय मानते, परन्तु स्थिति इसके विपरीत है। रुक्मिणी स्वयं ही श्रीकृष्ण को चाहती थी और उनके साथ गई है। अब शिशुपाल या रुक्म का श्रीकृष्ण से युद्ध करना निरर्थक और हानिप्रद है। यदि शिशुपाल युद्ध करने से रुक जाएगा तो फिर रुक्म भी युद्ध करने नहीं जाएगा। इसलिए चलकर शिशुपाल को समझाना चाहिए। यदि हमारे समझाने से शिशुपाल मान गया तो जनहत्या नहीं होगी।

इस प्रकार विचार कर वे प्रमुख नागरिक शिशुपाल के पास आए। कुण्डिनपुर के नागरिकों का आना सुनकर शिशुपाल ने अनुमान किया कि कृष्ण अकेला ही आया है।

इसलिए उसी ने इन सबको मेरे पास भेजा होगा और मुझे समझाने का जाल रचा होगा। उसने नागरिकों को अपने सामने आने देने की स्वीकृति दी। शिशुपाल के सामने पहुँचकर नागरिकों ने उसका अभिवादन किया। शिशुपाल ने नागरिकों को उनके आने का कारण पूछा। नागरिक कहने लगे— ''महाराज! न्याय कहता है कि कन्या वरे सो वर। कन्या का पति वही है, जिसे कन्या अपना पति बनाए। इसके अनुसार रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण को अपना पति बना लिया है। रुक्मिणी श्रीकृष्ण की पत्नी बन चुकी है। ऐसी दशा में अब युद्ध छेड़कर मनुष्यों की हत्या कराने से क्या लाभ? कदाचित आपने युद्ध में विजय भी प्राप्त की, तब भी जो आपको चाहती नहीं है, उसे आप अपनी पत्नी कैसे बना सकते हैं? इसलिए हमारी प्रार्थना है कि रुक्मिणी गई तो जाने दीजिए, हम आपका विवाह राजपरिवार की किसी दूसरी कन्या के साथ करा देंगे, लेकिन युद्ध में बड़ी जनहानि होगी। इसलिए आप युद्ध रोक दीजिए। कृष्ण यदि रुक्मिणी को बलात् ले गए होते तो हम आपसे युद्ध रोकने को नहीं कहते, परन्तु रुक्मिणी को श्रीकृष्ण बलात् नहीं ले गए हैं, अपितु रुक्मिणी स्वेच्छा से उनके साथ गई है।''

**शिशुपाल**— ''वाह, आप लोग मुझे खूब समझाने आए। आपको यह भी विचार नहीं हुआ कि हम यह बात किससे कर रहे हैं? यहाँ से टीका पहुँचने पर मैं बारात सजाकर रुक्मिणी के साथ विवाह करने के लिए आया। अनेक राजा लोग मेरे साथ आए। अब युद्ध से भय खाकर मैं दूसरी कन्या से विवाह कर लूँ और जिसके लिए आया उस रुक्मिणी को वह ग्वाला ले जाए, यह कैसे हो सकता है? हम क्षत्रिय युद्ध से भय नहीं करते। उस ग्वाले को हम अभी पकड़कर बाँध लेते हैं। उसकी क्या ताकत है कि वह हमारी भावी पत्नी को चुराकर भाग जाए? रुक्मिणी तो हमारी है ही, रुक्मिणी के बहाने हमें अपनी शूरता दिखाने और अपने शत्रु कृष्ण को अधीन करने का जो सुअवसर मिला है, उसे हम कदापि नहीं जाने दे सकते। फिर भी आप लोग आए हैं, इसलिए आप लोगों की बात रखने को हम इतना कर सकते हैं कि यदि ग्वाला रुक्मिणी को छोड़ देगा तो फिर हम न तो युद्ध करेंगे और न ही उसे मारेंगे। यदि आपको युद्ध रोकना ही है तो आप लोग जाकर उस ग्वाले को समझाओ। उससे कहो कि तू अकेला ही आया है। रुक्मिणी के विवाह के दहेज में प्राण क्यों देता है?''

**नागरिकों का प्रमुख**— ''श्रीकृष्ण से हम कुछ कहें तो कैसे? रुक्मिणी ने स्वयं ही उन्हें स्वीकार किया है, वे रुक्मिणी को चुराकर नहीं ले जा रहे हैं। रही उनके अकेले होने की बात, लेकिन कृष्ण ने अकेले ही बड़े कार्य किए हैं। बचपन में कंस को अकेले ही मारा था। कालीनाग को अकेले ही मारा था और गोवर्धन पर्वत भी अकेले ही उठाया था। वे अकेले हैं, फिर भी उन्हें जीतना कठिन है। इसलिए हम कहते हैं कि व्यर्थ ही मनुष्यों का नाश मत कराइए। उनको यह तो मालूम हो ही गया होगा कि आप अपने साथ इतनी सेना लाए हैं और आपसे युद्ध होने की आशंका उन्हें भी रही होगी, फिर भी वे अकेले ही आए तो अपने बल-पराक्रम के भरोसे पर ही आए होंगे।''

**शिशुपाल**— ''उसे हम जैसे किसी शूर से काम नहीं पड़ा है। इससे उसका साहस बढ़ रहा है। हमसे मुकाबला होने पर उसे मालूम होगा कि किसी की भावी पत्नी को चुरा ले जाना कैसा होता है?''

**नागरिक**— ''रुक्मिणी को आप भावी पत्नी कहते हैं, तो हम इसका एक उपाय बताते हैं, जिससे यदि रुक्मिणी आपकी भावी पत्नी होगी तो आपको मिल भी जाएगी और युद्ध भी रुक जाएगा। हम रुक्मिणी के स्वयंवर का प्रबन्ध कराते हैं। स्वयंवर मण्डप में आप भी बैठ जाइए और कृष्ण भी बैठ जाए। रुक्मिणी आप दोनों में से जिसके गले में वरमाला डाल दे, वही रुक्मिणी का पति हो।''

**शिशुपाल**— ''वाह, बड़ी अच्छी युक्ति निकाली। रुक्मिणी जब कृष्ण के रथ में ही बैठ गई तो अब वरमाला डालने में शेष ही क्या रहा? हम बारात सजाकर आए हैं, इसलिए अब चाहे रुक्मिणी की इच्छा हो या न हो, उसे हमारे साथ विवाह करना पड़ेगा। हम स्वयंवर में जाकर रुक्मिणी की वरमाला की प्रतीक्षा क्यों करें? वह तो हमारी पत्नी ही है। हम अभी उस ग्वाले को जीतकर रुक्मिणी को लाते हैं।''

**नागरिक**— ''यदि आपको हमारी यह बात भी स्वीकार नहीं है और आप श्रीकृष्ण से युद्ध ही करना चाहते हैं तो आप और श्रीकृष्ण द्वन्द्व युद्ध कर लीजिए। बेचारी सेना को मत कटवाइए। दोनों के युद्ध में जो जीते, वही रुक्मिणी का पति हो।''

**शिशुपाल**— ''अब आप लोगों के आने का भेद खुल गया। मालूम हो गया कि आप लोग कृष्ण की ओर से ही आए हैं। कृष्ण अकेला है। उसे मेरा भय है। इसी से वह चाहता है कि या तो युद्ध रुक जाए या स्वयंवर कर लिया जाए या जैसा मैं अकेला हूँ, उसी तरह शिशुपाल भी अकेला हो जाए, लेकिन उसकी यह चाल किसी मूर्ख पर ही काम कर सकती है। मैं उसकी चालाकी में नहीं फँस सकता। मेरे साथ ये सब योद्धा तमाशा देखने के लिए नहीं आए हैं? इनके होते हुए मुझे युद्ध करने की आवश्यकता भी क्या है? जान पड़ता है कि आप लोगों ने कृष्ण से घूस खाई है। इसी से उसका पक्ष लेकर आए हैं। चलो, यहाँ से चले जाओ। युद्ध के शुभ मुहूर्त के समय आप लोगों की ऐसी बातें मैं नहीं सुनना चाहता।''

**नागरिक**— ''हम तो इसलिए आए थे कि सेना सहित आप श्रीकृष्ण से युद्ध करके अपने को संकट में नहीं डालें, परन्तु आप तो अपने ही गर्व में हैं। हम फिर कहते हैं कि श्रीकृष्ण से युद्ध करने पर आपको बड़ा ही पश्चात्ताप करना पड़ेगा। इस पर भी आप अपनी हठ नहीं छोड़ते हैं तो हम भी देखते हैं कि आप कैसे वीर हैं और श्रीकृष्ण को जीतकर रुक्मिणी के साथ किस प्रकार विवाह करते हैं?''

यह कहकर नागरिक अपने-अपने घर पर चले गए। शिशुपाल की सेना युद्ध के लिए तैयार खड़ी थी। युद्ध के बाजे बज रहे थे। चारण लोग वीरों को संग्राम के लिए उत्तेजित कर रहे थे। अपने सैनिकों और साथ के राजाओं से शिशुपाल कहने लगा कि आप लोग मेरे साथ आए और नगर को घेरकर सब तरह का प्रबन्ध भी किया, फिर भी यह दुर्घटना घटी। नीच कृष्ण न मालूम कहाँ से तथा कैसे आ गया और यह षड्यंत्र न मालूम कैसे रचा गया? अपने को पता भी नहीं लग पाया। जो हुआ सो हुआ, लेकिन अब आप लोगों के होते हुए भी यदि वह ग्वाला रुक्मिणी को ले गया तब तो सबका आना तथा इतना प्रबन्ध करना निरर्थक होगा और लोगों में उपहास भी होगा।

शिशुपाल की बात सुनकर शिशुपाल के सेनापति और उसके साथ के राजा उससे कहने लगे— ''आप विश्वास रखिए, हम अभी कृष्ण को पकड़ लाते हैं। वह गोपियों का दूध, दही चुराते-चुराते बड़ी चोरी भी करने लगा है, परन्तु आज उसे मालूम हो जाएगा कि चोरी का फल कैसा होता है। उस दैत्य को दण्ड देने के लिए हम लोग बहुत हैं, इसलिए आप यहीं ठहरिए। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। यदि वह ग्वाला भाग नहीं गया तो आज अवश्य ही हमारे द्वारा काल-कवलित होगा।''

**शिशुपाल**— ''हाँ, आप लोग ऐसे ही वीर हैं। अच्छा तो जाइए और अपनी वीरता दिखाइए।''

टिड्डीदल के समान शिशुपाल की सेना श्रीकृष्ण को पकड़ने चली। शिशुपाल की प्रचंड सेना आती देखकर रुक्मिणी बड़ी चिन्तित हुई। वह विचारने लगी कि मुझ दुष्टा ने प्राणनाथ को संकट में डालकर बड़ा ही अनर्थ किया है। इससे तो अच्छा यही था कि मैं स्वयं ही आत्महत्या कर लेती या माता मुझे जन्म देते ही मार डालती। आज मेरे ही कारण यह झगड़ा मच रहा है। यद्यपि ये दोनों भाई बलवान हैं, लेकिन हैं तो दो ही व्यक्ति। इतनी सेना में दो आदमियों का विजय पाना बहुत ही कठिन है। यद्यपि लोहा कठोर होता है, फिर भी जलते हुए कोयले उसे गला ही देते हैं। इसी प्रकार बहुत आदमियों से केवल दो आदमी कब तक लड़ सकते हैं?

चिन्ता के कारण रुक्मिणी का मुख मुरझा गया। रुक्मिणी का मुरझाया हुआ मुख देखकर श्रीकृष्ण ने उससे पूछा— ''राजकुमारी! तुम उदास क्यों हो? कहीं पिता का घर छूटने का तो दुःख नहीं है। यदि यही दुःख हो तो हम तुम्हें अपने पिता के यहाँ पहुँचा दें।''

**रुक्मिणी**— ''किसी भी पतिव्रता स्त्री को पति के मिलने से जितनी प्रसन्नता होगी, उतनी प्रसन्नता पिता के घर रहने में कदापि नहीं हो सकती। पतिव्रता पति के यहाँ अपना जीवन व्यतीत करने में ही आनन्द मानेगी। मुझे पिता का घर छूटने का दुःख नहीं है, किन्तु इस बात की चिन्ता है कि मेरे लिए आप जैसे महापुरुष संकट में पड़ रहे हैं। लोग मेरे भाग्य की सराहना करते हैं, परन्तु वास्तव में मैं अभागिनी हूँ और मेरे अभाग्य के कारण ही आपको इतनी बड़ी सेना से युद्ध करना पड़ेगा।''

**कृष्ण**— ''मैं समझ गया कि तुम शिशुपाल की सेना देखकर यह कह रही हो कि इस विशाल सेना से ये दो आदमी कैसे तो युद्ध करेंगे और कैसे विजय प्राप्त करेंगे, परन्तु इस बात की चिन्ता मत करो कि यह सेना बहुत है और

ये दो ही आदमी हैं। एक ही सूर्य बहुत से अन्धकार को नष्ट कर देता है। तृण समूह को आग की जरा-सी चिनगारी भी जलाकर भस्म कर देती है। इसी प्रकार हम भी इस सेना को देखते-ही-देखते मार भगा देंगे।''

श्रीकृष्ण की बात सुनकर रुक्मिणी को धैर्य हुआ। उसकी चिन्ता दूर हुई, परन्तु कुछ ही देर बाद श्रीकृष्ण ने उसे फिर चिन्तित देखा। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से पूछा— ''राजकुमारी! तुम्हें फिर किसकी चिन्ता ने आ घेरा? क्या मैं इस सेना को परास्त न कर सकूँगा?''

**रुक्मिणी**— ''नहीं नाथ! आपका कथन सुनने के पश्चात् मुझे इस सेना की पराजय के विषय में किंचित् भी संदेह नहीं रहा। अब मुझे इस बात की चिंता है कि मैं अभागिनी पितृगृह के नाश का कारण बनूँगी। स्त्री का कर्तव्य है कि वह पतिगृह और पितृगृह, दोनों की कुशल चाहे और दोनों का कल्याण करे, परन्तु मैं इस कर्तव्य का पालन नहीं कर सकूँगी।''

**कृष्ण**— ''क्यों?''

**रुक्मिणी**— ''मेरा भाई रुक्म क्रोधी और हठी है। वह आपसे युद्ध करने अवश्य आएगा और इस कारण मैं पितृगृहघातिनी कहलाऊँगी।''

रुक्मिणी की बात सुनकर श्रीकृष्ण ने विचारा कि वास्तव में रुक्मिणी का कथन ठीक है। एक सहृदया स्त्री को इस प्रकार विचार होना स्वाभाविक है। उन्होंने रुक्मिणी से कहा— ''राजकुमारी! मैं तुम्हारी यह बात सुनकर और तुम्हारे सुन्दर विचार जानकर बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें किसी भी प्रकार दुःखित नहीं करना चाहता। इसलिए तुम चिन्ता दूर करो। मैं रुक्म को नहीं मारूँगा।''

श्रीकृष्ण से अपने भाई की प्राण-रक्षा का विश्वास मिल जाने पर रुक्मिणी की चिन्ता मिट गई। उसे प्रसन्नता हुई। इतने में ही शिशुपाल की सेना भी सामने आ गई। शिशुपाल की सेना को सामने देखकर श्रीकृष्ण ने फिर पाँचजन्य शंख बजाया और अपना धनुष उठाकर उसे टंकारा। शंख और धनुष की घोर ध्वनि से वहाँ की पृथ्वी काँपने-सी लगी। सेना के अनेक आदमी तो उस ध्वनि से भयभीत होकर ही भाग गए। जिनमें कुछ अधिक साहस था, वे आगे बढ़े और चारों ओर से श्रीकृष्ण को घेरकर मारो, पकड़ो आदि कहते हुए श्रीकृष्ण के रथ पर बाण-वर्षा करने लगे।

शिशुपाल की सेना द्वारा छोड़े गए बाणों को व्यर्थ करते हुए श्रीकृष्ण अपने बाणों से शिशुपाल की सेना को घायल करने लगे। शिशुपाल की सेना श्रीकृष्ण के कठिन बाण नहीं सह सकी। सैनिक लोग श्रीकृष्ण के बाणों से घायल हो-होकर गिरने लगे। सेना को इस प्रकार नष्ट होते देखकर शिशुपाल का सेनापति सेना को उत्तेजित करता हुआ आगे बढ़ा, परन्तु श्रीकृष्ण ने एक बाण से उसका मुण्ड-रुण्ड छिन्न-भिन्न कर दिया। सेनापति के मरते ही शेष सेना रणस्थल त्यागकर भागी। सेना को भागती देखकर श्रीकृष्ण ने भी धनुष रख दिया और शंख द्वारा विजयघोष करने लगे।

भागी हुई सेना शिशुपाल के पास गई। उसने सेनापति के मारे जाने और सेना के नष्ट होने का सारा वृत्तान्त शिशुपाल को सुनाया। सेनापति के मारे जाने का समाचार सुनकर शिशुपाल को बड़ा ही क्रोध हुआ। क्रोध के मारे वह अपने होंठ चबाने लगा। उसने शेष सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी और साथी राजाओं सहित स्वयं भी युद्ध के लिए तैयार हुआ।

सेना सहित शिशुपाल रणस्थल में आया। श्रीकृष्ण का रथ वहीं खड़ा हुआ था। श्रीकृष्ण को देखकर शिशुपाल अपनी सेना को उत्तेजित करता हुआ कहने लगा कि मैं अपने सेनापति का बदला लेने के लिए कृष्ण, बलदेव को मारे बिना कदापि नहीं छोड़ूँगा। शिशुपाल और उसकी सेना ने श्रीकृष्ण के रथ को चारों ओर से घेर लिया और वे रथ पर बाणवर्षा करने लगे। अपने पर बाणवर्षा होते देखकर श्रीकृष्ण ने भी अपना धनुष उठाया। उसी समय बलदेव श्रीकृष्ण से कहने लगे, भैया! यद्यपि अपराधी होने के कारण शिशुपाल दण्ड का पात्र है, फिर भी यह बुआ का लड़का भाई है और आपने इसके 99 अपराध क्षमा करने का बुआ को वचन दिया है। इसलिए इसको मारना मत। इसका अपमान ही इसके अपराध का पर्याप्त दण्ड है। बलदेव जी की बात स्वीकार करते हुए श्रीकृष्ण ने उनसे कहा कि मैं शिशुपाल का वध उसके 99 अपराधों तक नहीं करूंगा।

अपने सारंग धनुष द्वारा तीक्ष्ण बाण छोड़कर श्रीकृष्ण शिशुपाल की सेना का संहार करने लगे। शिशुपाल की सेना

प्रतिक्षण घटने लगी। यद्यपि शिशुपाल अपनी सेना का उत्साह बढ़ा रहा था, परन्तु अन्त में वह सेना को भागने से नहीं रोक सका। उसकी बची बचाई सेना युद्धस्थल छोड़कर भागी। शिशुपाल अकेला रह गया, परन्तु वह भी अधिक देर तक नहीं टिक सका। वह भी रथ छोड़कर अपने डेरे की ओर भाग गया। शिशुपाल और उसकी सेना के भागते ही श्रीकृष्ण ने पाँचजन्य शंख से विजयनाद किया।

शिशुपाल की हार का समाचार सारे नगर में फैल गया। रुक्म ने भी सुना कि शिशुपाल और उसकी सेना हार गई है। शिशुपाल की हार से रुक्म को समझ लेना चाहिए था कि जब अनेक साथी राजाओं सहित विशाल सेना का स्वामी शिशुपाल भी श्रीकृष्ण से हार गया है, तब मेरी क्या शक्ति है जो कृष्ण को जीत सकूँ। परन्तु क्रोध और अभिमान के वशीभूत रुक्म को यह विचार कैसे हो सकता था? रुक्मिणी को श्रीकृष्ण ले गए, यह समाचार सुनते ही उसने युद्ध की घोषणा तो कर दी थी और उसकी सेना भी एकत्रित तथा सुसज्जित थी। वह क्रोध करके कह ही रहा था कि उस निर्लज्ज ग्वाले को किंचित भी लज्जा नहीं है। उसे यहाँ किसने बुलाया था? वह बिना बुलाए ही आया और भेद पाकर बहिन को हरण किए जा रहा है। मैं आज पृथ्वी पर से कृष्ण का नाम ही उठा दूँगा।

रुक्म इस प्रकार क्रोध कर रहा था, परन्तु यह सोचकर श्रीकृष्ण से युद्ध करने नहीं गया कि शिशुपाल की सेना युद्ध कर रही है। वह सोचता था कि शिशुपाल की और मेरी सम्मिलित सेना ने यदि कृष्ण को मारा या परास्त किया तो विजय किसकी सेना ने की, यह विवाद खड़ा हो जाएगा। इसलिए पहले देख लेना चाहिए कि शिशुपाल की सेना युद्ध में क्या करती है। फिर मैं तो इस पृथ्वी को कृष्णविहीन करूँगा ही।

रुक्म ने जब यह सुना कि शिशुपाल और उसकी सेना कृष्ण से हार गई है, तब उसने अपनी सेना लेकर कृष्ण पर चढ़ाई कर दी। उसने सेना द्वारा कृष्ण के रथ को घेर लिया और कृष्ण के सामने जाकर कहने लगा— ''अरे निर्लज्ज ग्वाले! तेरा साहस इतना बढ़ गया है कि तू मेरी बहन का हरण करे। ले अपने इस अपराध का फल भोग।'' यह कहकर रुक्म श्रीकृष्ण पर बाण बरसाने लगा और श्रीकृष्ण उसके तथा उसकी सेना के अस्त्र-शस्त्र निष्फल करने लगे। इसी बीच में अवसर पाकर श्रीकृष्ण ने रुक्म की सेना के सेनापति को मार गिराया तथा रुक्म के हाथ का धनुष काटा डाला। धनुष कटने और सेनापति के मरने से रुक्म को बहुत ही क्रोध हुआ। वह गदा लेकर रथ से उतर पड़ा और श्रीकृष्ण के रथ पर झपटा। उसने जोर से अपनी गदा श्रीकृष्ण के रथ पर मारी, जिससे श्रीकृष्ण के रथ की ध्वजा टूट गई। श्रीकृष्ण ने विचार किया कि मैं रुक्मिणी को वचन दे चुका हूँ कि तुम्हारे भाई रुक्म को नहीं मारूँगा और रुक्म कायरों की तरह भागने वाला नहीं है। ऐसी दशा में यदि इसे स्वतन्त्र रहने दिया तो यह अस्त्र-शस्त्र चलाना बन्द नहीं करेगा। इस विचार से उन्होंने बलदेव जी को इशारा किया। श्रीकृष्ण का अभिप्राय जानकर बलदेव जी रथ से कूद पड़े। उन्होंने झपटकर रुक्म को पकड़ लिया और उसे बन्दी बनाकर रथ में डाल दिया। रुक्म के बन्दी होते ही उसकी सेना तितर-बितर होकर भाग गई।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

## 'अपने आचार्यदेव को जानें' प्रश्नोत्तरी का परिणाम (मार्च 2025)

| क्र. | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| 1. | अनिता जी सेठिया | गंगाशहर (राज.) |
| 2. | शीतल जी पगारिया | रतलाम (म.प्र.) |
| 3. | मुस्कान जी जैन | ब्यावर (राज.) |
| 4. | राधा बाई जैन | अंबागढ़ चौकी (ओड़िशा) |
| 5. | गुड्डी जी कांकरिया | कोटा (राज.) |
| 6. | ममता जी सेठिया | कोयंबटूर (त.ना.) |
| 7. | गीता जी कोठारी | कानोड़ (राज.) |
| 8. | लूणकरण जी भूरा | हावड़ा (प.बं.) |
| 9. | टीकमचंद जी पारख | मुंबई (महा.) |
| 10. | चिराग जी जैन | बड़ीसादड़ी (राज.) |
| 11. | प्रीति जी धम्माणी | जावरा (म.प्र.) |

ज्ञान सार

# श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

27-28 फरवरी 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

## वृक्ष शतक 8 उद्देशक 2

**पूर्वापर संबंध –** ज्ञान के द्वारा ही वृक्ष आदि की जीव संख्या बताई जाती है, अत: वृक्ष आदि का वर्णन किया जा रहा है।

**प्र.2619 परिग्रह कौन-सी कषाय के अन्तर्गत है?**

**उत्तर** परिग्रह लोभ कषाय के अन्तर्गत है क्योंकि 12वें श. के 5वें उ. में लोभ के 16 नाम बताए हैं। यथा- मूर्च्छा, गृद्धि (आसक्ति, ममत्व) आदि। ममत्व के कारण ही लोभ होता है।

**प्र.2620 श्रावक के पच्चक्खाण (त्याग) के कितने भंग (भेद) हैं?**

**उत्तर** श्रावक के पच्चक्खाण के 49 भंग पच्चीस बोल के थोकड़े में देखें। इन भंगों का अभिप्राय यह है कि जो जितने अंशों में प्रत्याख्यान करता है, उसके उतने अंशों में कर्म का नाश होता है। इसलिए श्रावक को अपनी शक्ति अनुसार अधिक से अधिक प्रत्याख्यान करना चाहिए। मानसिक विकल्प के बिना वचन और काया संबंधी करना, कराना घटित नहीं होता है।

**प्र.2621 आजीविकोपासकों (गोशालक के उपासक) के पच्चक्खाण के 49 भंग क्यों नहीं थे?**

**उत्तर** गोशालक सर्वज्ञ नहीं था इसलिए उसके उपासक इन भंगों के अर्थ से अपरिचित थे।

**प्र.2622 क्या संज्ञी तिर्यंच श्रावक के भी पच्चक्खाण के 49 भंग होते हैं?**

**उत्तर** संथारे के समय में उनके 49वाँ भंग होता है।

**प्र.2623 श्रावक के त्याग-प्रत्याख्यान में 2401 उत्तर भंग किस आधार से बताए गए हैं?**

**उत्तर** शास्त्र एवं टीका में 49 भंग ही बताए गए हैं किन्तु पुराने थोकड़े में पूर्व परंपरा से 2401 उत्तर भंगों की संख्या निम्नोक्त प्रकार से होने की संभावना लगती है। जैसे- प्रथम भंग की विरति-हिंसा करूँ नहीं मन से, शेष 48 भंगों की अविरति। इस प्रकार प्रत्येक भंग के 49 भंग हो जाते हैं। अत: 49 × 49 = 2401 उत्तर भंग होते हैं।

जितने अंशों में अविरति उतने अंशों में कर्मबंध। अत: जीवन में पच्चक्खाण में वृद्धि करते ही रहना चाहिए।

**प्र.2624 आगम में श्रावक के पच्चक्खाण के कितने भंग बताए हैं?**

**उत्तर** आगम में श्रावक के पच्चक्खाण के 735 भंग बताए हैं। श्रावक तीन काल की अपेक्षा 49 भंगों से पच्चक्खाण लेता है। यथा-

1. प्राणातिपात संबंधी अतीत के पापों से निवृत्त होता है,
2. वर्तमान में संवर करता है और
3. आगामी काल के पच्चक्खाण करता है।
4. इस तरह तीन काल की अपेक्षा स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के 49×3=

147 भंग (भेद) होते हैं।

5. इसी प्रकार स्थूल मृषावाद विरमण व्रत, स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत, स्थूल मैथुन विरमण व्रत और स्थूल परिग्रह-परिमाण व्रत के भी 147-147 भंग होते हैं। अतः श्रावक के 5 अणुव्रत की अपेक्षा 147 × 5 = 735 भंग होते हैं।

**प्र.2625 प्रव. सारो. गा. 1350 में 147 भंगों की अपेक्षा सम्पूर्ण व्रतों के कितने भंग बताए गए हैं?**

उत्तर 11,04,43,60,99,19,61,15, 33,35,69,57,695 (27 अंक) भंग बताए गए हैं।

**प्र.2626 अतीतकाल में किये गए पापों की क्रिया वर्तमानकाल में लगती है। एक उदाहरण दीजिए।**

उत्तर
1. उसने मुझे मारा था अथवा कटु वचनादि कहा था।
2. वर्तमान में यह चिन्तन करना कि मैंने उस समय उसे क्यों नहीं मारा (करना),
3. क्यों नहीं मरवाया (कराना),
4. दूसरे व्यक्ति ने उसे मारा, अच्छा किया (अनुमोदना)।

ऐसा करने से वे पाप वर्तमान में किये जा रहे पाप की तरह हो जाते हैं।

**प्र.2627 क्या श्रावक सभी (49) भंगों से पच्चक्खाण करता है?**

उत्तर भूतकाल के पापों की परिस्थितिवश श्रावक को प्रशंसा आदि भी करनी पड़ती है। इसलिए श्रावक अपनी शक्ति अनुसार ही पच्चक्खाण करता है, सभी (49) भंगों से नहीं।

**प्र.2628 भूतकाल में किये गए पापों का प्रतिक्रमण क्यों किया जाता है?**

उत्तर प्रतिक्रमण न करने से पूर्वकृत पापों की क्रिया लगती है अर्थात् वे पाप वर्तमान में किये जा रहे पाप के समान होते हैं। इसलिए प्रतिक्रमण किया जाता है।

**प्र.2629 भंते! जिस श्रमणोपासक ने पहले स्थूल प्राणातिपात का प्रत्याख्यान नहीं किया, वह पीछे उसका प्रत्याख्यान करता हुआ क्या करता है?**

उत्तर गौतम! वह अतीतकाल में किये हुए प्राणातिपात का प्रतिक्रमण करता है अर्थात् उस पाप की निन्दा करके उससे निवृत्त होता है। वर्तमानकालीन प्राणातिपात का संवर करता है और अनागत काल का प्रत्याख्यान करता है अर्थात् उसे न करने की प्रतिज्ञा करता है।

**प्र.2630 प्रतिक्रमण का क्या फल है?**

उत्तर शुद्ध चित्त से यथाविधि प्रतिक्रमण करने वाला उत्कृष्ट 15 भव में मोक्ष सुख प्राप्त करता है और उभयकाल प्रतिक्रमण करते हुए उत्कृष्ट रसायन (तन्मयता) आए तो तीर्थंकर गोत्र बाँधता है। ऐसा महालाभ प्राप्त कराने वाला और जन्म-मरण के दुःख को छुड़ाने वाला है प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण से **'छूटूँ पिछला पाप से, नया न बाँधू कोय'** यह उक्ति सिद्ध होती है।

**प्र.2631 आहार के विषय में गोशालक की क्या मान्यता थी?**

उत्तर गोशालक कहता था कि प्रत्येक जीव अक्षीण परिभोगी (सचित्ताहारी) है। सभी जीव सचित्त धान्य के प्राणियों का विनाश करके आहार करते हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

# आदर्श के प्रतिरूप
# भगवान महावीर

- सुरेश बोरदिया, मुंबई

भगवान महावीर जन्मकल्याणक शीघ्र ही आने वाला है। वैसे तो भगवान के सभी पाँच कल्याणक च्यवन, जन्म, दीक्षा, कैवल्य एवं निर्वाण कल्याणक कल्याणकारी होते हैं, लेकिन जन्मकल्याणक सर्वाधिक एवं व्यापक रूप से मनाया जाता है। सिर्फ जैन ही नहीं, अजैनों में भी जन्मकल्याणक का महत्व व्याप्त है।

भगवान के जन्म पश्चात् छब्बीस शताब्दियों का लम्बा समय निकल जाने के बाद भी इस अवसर की इतनी लोकप्रियता एवं व्यापकता एक सोच एवं शोध का अवसर माना जा सकता है। सोच एवं शोध से बहुत कुछ पाया जा सकता है। भगवान महावीर जन्मकल्याणक जैसे अवसर पर भी सोच के साथ-साथ शोध की भी आवश्यकता है। महावीर की तीनों लोकों में महिमा है। वे तीर्थंकर थे यह हमारी सामान्य सोच है, वास्तविक सोच है। इस सोच पर मात्र सामान्य सी ही शोध भी अगर की जाए तो पता चलता है कि महावीर तीर्थंकर ही नहीं बल्कि और भी बहुत कुछ थे।

और क्या थे ? यह शोध करने के लिए भगवान के जीवन चरित्र को सूक्ष्मता एवं गहनता से जानने की आवश्यकता है। पाँचों कल्याणक तो उनके जीवन के विशिष्ट अवसर कहे जा सकते हैं। आज आवश्यकता है इन पर जीवन के सामान्य से प्रसंगों को देखने या जानने की।

महावीर तीर्थंकर के अलावा एक सपूत भी थे। भगवान का जीवन बहुआयामी था। मात्र तीर्थंकर ही मान लेना पूर्णता या सत्यता नहीं कही जा सकती। माता-पिता के सपूत के रूप में उनकी जो पहचान है, वह पहचान तीर्थंकर से काफी भिन्न है। आप सोचेंगे कि जब तीनों लोकों में तीर्थंकर ही सर्वाधिक शक्तिशाली, सर्वश्रेष्ठ होते हैं तो फिर एक सपूत जैसी पहचान का क्या औचित्य कहा जा सकता है।

सपूत के रूप में महावीर की पहचान सामान्य नहीं, अति विशिष्ट है। आप सोचिए कि तीर्थंकर जैसे श्रेष्ठ रूप में जन्म लेने वाले महावीर ने अपने इस रूप से भी श्रेष्ठ साबित किया सपूत के रूप को। आज हम नारे गूंजाते हैं - त्रिशला नन्दन, त्रिशला का लाल, सिद्धार्थ नन्दन आदि। लेकिन किसी भी नारे में त्रिशला सिद्धार्थ के सपूत जैसा शब्द कभी सुनने में नहीं आया।

सपूत किसे कहा जाए? क्या परिभाषा होगी सपूत की? शाब्दिक अर्थ तो यही होता है- अच्छा पुत्र। अच्छा पुत्र किसे कहा जाए? क्या जो पुत्र अपने पिता की सम्पत्ति में वृद्धि करे, उसे? लेकिन यह कार्य तो भगवान के माता के गर्भ में आने यानी च्यवन के साथ ही हो गया था। जन्म से पहले ही सम्पत्ति में वृद्धि होने लगी थी। तभी तो नाम भी वर्धमान रख दिया गया। सिर्फ इस कारण से उन्हें सपूत नहीं कहा जा रहा। सपूत की वास्तविक परिभाषा तो यह है कि जो पुत्र अपने माता-पिता का आज्ञाकारी हो, उन्हें शारीरिक या मानसिक, किसी तरह का कष्ट न दे, माता-पिता को साता दे, वही सच्चा सपूत है।

इस परिभाषा के अनुसार महावीर सचमुच में सपूत थे। एक ऐसे सपूत, जिसने जन्म से पहले ही माता- पिता को कोई कष्ट नहीं दिया और ना ही उसके बाद। जन्म से पहले च्यवन हुआ। दसवें देवलोक से महावीर के जीव का माता के गर्भ में आगमन हुआ। गर्भ में रहते हुए महावीर ने सोचा कि मेरे हिलने-डुलने से मेरी माता को कष्ट होगा और उन्होंने हलन-चलन बन्द कर दिया। ऐसा होने से माता चिन्तित हो गई कि मेरे गर्भ में पल रही सन्तान को क्या हो गया! किसी अनिष्ट की आशंका से माता की चिन्ता बढ़ती गई। महावीर ने अपने ज्ञान से यह स्थिति जानकर पुनः हिलना-डुलना प्रारम्भ कर दिया। अब माता की चिन्ता दूर हुई एवं पूर्ववत प्रसन्नचित्त रहने लगी।

जन्म से पहले ही गर्भ में रहकर भी माता-पिता को कष्ट नहीं देना चाहते थे और जन्म के बाद भी नहीं। अब सोचा कि मेरे हलन-चलन बन्द करने मात्र से ही मेरी माता को जब इतना कष्ट हुआ है तो जब मैं दीक्षा लूंगा तो उन्हें कितना कष्ट होगा। महावीर ने अपने माता-पिता के भावी कष्ट की कल्पना करके संकल्प कर लिया कि माता-पिता के जीवित रहते हुए मैं दीक्षा नहीं लुंगा। माता-पिता को कष्ट होने से पहले ही उन्हें कष्ट से मुक्त कर दिया और इस संकल्प का उन्होंने पूर्णत: पालन भी किया।

क्या महावीर का अपने माता-पिता के प्रति इतना राग था, अनुराग था कि उन्होंने ऐसा संकल्प कर लिया था। यहाँ राग या अनुराग नहीं कहा जा सकता बल्कि भगवान का अपने माता-पिता के प्रति आदर, समर्पण कहा जा सकता है। माता-पिता के प्रति कृतज्ञता, विनय कहा जा सकता है, जो राग-अनुराग से काफी दूर था। इस निर्णय में महावीर की अहिंसा भी झलकती है।

एक अटपटी सी बात, अभी तक तो महावीर का जन्म भी नहीं हुआ, अहिंसा परमो धर्म का उपदेश भी अभी तक नहीं दिया, फिर अभी से अहिंसा? लेकिन यह पूर्ण अहिंसा थी। अहिंसा परमो धर्म का नाद तो बाद में गुंजाया, लेकिन इसका पालन स्वयं पहले किया। यही अहिंसा थी भगवान के संकल्प में। भगवान की अहिंसा जितनी विराट थी, उतनी ही सूक्ष्म भी थी। किसी जीव को मार डालना या उसकी घात कर लेना ही हिंसा नहीं बल्कि उसे कष्ट देना मात्र भी हिंसा की श्रेणी में आता है। जिस अहिंसा का उपदेश महावीर ने अपनी देशना में दिया था, उस अहिंसा का पालन पहले स्वयं ही करने लगे थे।

महावीर और उनके माता-पिता वाला प्रसंग आज के युग में बड़ा उपयोगी व प्रेरणादायक है। महावीर जन्मकल्याणक तो प्रति वर्ष बड़े धूमधाम से मनाते आ रहे हैं, लेकिन वस्तुस्थिति से अनजान जो भगवान ने किया था, क्या वह हम कर पा रहे हैं?

भगवान अपने माता-पिता के सपूत थे, लेकिन वर्तमान युग में सपूतों की बड़ी कमी देखी जा सकती है। माता-पिता को होने वाले भावी दु:ख को भी महावीर ने दूर कर दिया, उनके सुख के लिए अपनी दीक्षा तक को एक बार अपने संकल्प से विलम्बित कर दिया था। आज के समय में सभ्य, उच्च समाज में माता-पिता की बड़ी चिन्ताजनक रिथति देखी जा सकती है। अहिंसा परमो धर्म का नारा गूंजाने वाले भाई-बहन अपने माता-पिता का किस तरह पालन कर रहे हैं, आत्मचिन्तन का विषय है। कई माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रवधू आदि के द्वारा इतने उपेक्षित एवं तिरस्कृत है, जिसकी कल्पना भी झकझोर कर रख देती है। सन्तान द्वारा माता-पिता की न सेवा की जाती है, न आदर व सम्मान दिया जाता है।

जिसने जन्म दिया, उन्हीं की उपेक्षा? अनमोल मनुष्य भव देने वाले माता-पिता की अवहेलना! अब कल्पना करते हैं हम उन भवों की, जिसमें हमें माता-पिता ने जन्म नहीं दिया। निगोद , नारकी, स्थावर आदि कई भव है जिनमें हमें जन्म देने वाले कोई माता-पिता नहीं थे। ऐसे में हमारी हालत क्या हुई होगी? निगोद में स्वयं का शरीर तक नहीं मिला, स्थावर में पूर्ण इन्द्रियाँ नहीं मिली और नारकी में शरीर, इन्द्रियाँ मिल भी गई, लेकिन वहाँ कितने कष्ट भोगे होंगे! वहाँ माता-पिता ने जन्म नहीं दिया और जब-जब भी बिना माता-पिता के जन्म हुआ होगा तो कई कष्ट इसी तरह सहन करने पडे.होंगे। कैसी हालत हो गई होगी, उसे स्मृति में लाया नहीं जो सकता, लेकिन कल्पना में तो लाया जा सकता हैं।

यह मनुष्य भव जिसे जन्म दिया माता-पिता ने। यहाँ स्वयं का शरीर मिला, सभी पाँच इन्द्रियाँ मिली, सम्यक्त्व तक मिल गया; इन सभी से ऊपर मोक्ष में जाने के लिए आवश्यक मनुष्य जन्म मिला। किसकी देन? माता-पिता की देन। लेकिन इसी भव में ऐसे उपकारी माता-पिता की कहीं-कहीं कैसी दयनीय हालत देखने को मिल रही है। एक माता-पिता अपनी कई सन्तानों को जन्म देकर उनका पालन-पोषण कर लेते हैं, लेकिन वे कई सन्तानें मिलकर भी वृद्धावस्था में अपने माता-पिता का पालन नहीं कर सकती।

जिस वृक्ष ने जीवन दिया, शीतलता दी, छाँव दी, फल दिया, उसी वृक्ष को अनाथ अवस्था में धकेल दिया जाता है। वे वृद्ध माता-पिता अपने अन्तिम दिन किस

तरह व्यतीत करते हैं, इसके कई उदाहरण ऐसे मिल जाते हैं जिनमें बारी-बारी से एक-एक सन्तान के यहाँ कुछ निश्चित दिनों के लिए रहना पड़ता है। आज एक पुत्र के यहाँ तो कुछ दिन बाद दूसरे के यहाँ, इसी तरह क्रमश: रहना होता है। माँ-बाप की सम्पत्ति का बँटवारा करते-करते उनका ही बँटवारा कर दिया जाता है।

महावीर ने ऐसा न किया और न ही कहा। महावीर की अहिंसा को सही तरीके से देखने पर ही हम समझ पाएँगे कि उन्होंने हमें क्या कहा था। महावीर हमें जो कुछ कहना चाहते थे, वह उन्होंने स्वयं करके दिखा दिया था कि माता-पिता को कष्ट मत दो, उनका आदर करो। लेकिन अफसोस! हम न महावीर को समझ पाए और न ही उनके उपदेशों को और न ही उनकी अहिंसा को।

महावीर का जीवन अगर हम अच्छी तरह समझ जाएँ तो आज भाई-भाई के बीच भी विवाद की स्थिति पैदा नहीं होगी। भगवान महावीर का माता-पिता के प्रति जैसा आदर था, वैसा ही अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन के लिए भी था। एक आदर्श भाई के रूप में राम-भरत को याद किया जाता है, लेकिन उनसे भी अधिक आदर्श भाई महावीर थे।

माता-पिता के निधन के साथ ही महावीर का संकल्प पूरा हो चुका था। अब बड़े भाई से दीक्षा की आज्ञा मांगी तो बडे.भाई को महान दु:ख हुआ। भरे कंठ के साथ कहा माता-पिता हाल ही में हमें छोड़कर गये हैं और अब तुम! क्या तुम भी मुझे छोड़कर दीक्षा ले लोगे? इतने सारे वियोग के दु:ख मैं एक साथ कैसे सहन करूंगा मेरे भाई! दो साल तक के लिए तो रुक जाओ, तब तक मैं कुछ उबर जाऊंगा, फिर दीक्षा ले लेना।

जन्म के साथ ही जिस वर्धमान के सामने देवता और इन्द्र नतमस्तक थे, आज वे ही वर्धमान अपने भाई के सामने नतमस्तक हैं। बड़े भाई ने जो कुछ कहा उसका प्रत्युत्तर तक नहीं दिया। कोई प्रतिक्रिया नहीं, न तर्क। कोई निवेदन तक नहीं। अगर था तो सिर्फ एक समर्पण। जैसा समर्पण माता-पिता के सामने था, वैसा ही समर्पण अपने बड़े भाई के सामने भी। बड़े भाई के कथन में प्रेम, स्नेह उमड़ा हुआ था तो महावीर के मौन में आज्ञापालन।

पिंजरे में बन्द पक्षी के स्वतंत्र होने के समय उसे पुन: बन्द किये जाने जैसी स्थिति में भी मौन। कहा तो था नंदीवर्धन ने, महावीर ने तो सिर्फ सुना था और सुनकर उसे मौन में ही स्वीकार भी कर लिया। एक शब्द का उत्तर तक नहीं।

'**मौनम् स्वीकृति लक्षणम्**'। महावीर के मौन ने बडे.भाई को जैसे आश्वस्त कर दिया। बड़े भाई ने मौन को स्वीकृति समझ लिया और महावीर रुक गए दो वर्ष के लिए घर में। दीक्षा लेने जैसे स्व-पर उपकारी कार्य को भी महावीर ने दो वर्ष के लिए न्योछावर कर दिया भाई की आज्ञा के प्रति। इतना आदर, इतना आज्ञा पालन वर्तमान समय में बड़ा ही विचारणीय है।

महावीर द्वारा भाई की आज्ञा का ऐसा पालन आज के युग के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। लगता है कि भगवान महावीर ने हमें प्रेरणा देने के लिए ही ऐसा किया होगा। आज के समय भाई-भाई के प्रति प्रेम व समर्पण सब कुछ क्षीण होता जा रहा है। न बडे भाई के मन में छोटे के प्रति प्रेम और न ही छोटे के मन में बड़े भाई के प्रति आदर या समर्पण। रिश्ता तो अदृश्य होता जा रहा है और उभर रहा है तो वह है स्वार्थ का स्वर्ण मृग, जिसे पाने की लालसा हर भाई के मन में पनपती जा रही है।

जहाँ स्वार्थ है वहाँ ईर्ष्या भी अवश्य पनपेगी। भाई-भाई के आपसी रिश्ते को स्वार्थ एवं ईर्ष्या ने मृतप्राय: बना दिया है। पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे के समय स्वार्थ एवं ईर्ष्या का पलड़ा भारी रहता है। इंचभर जमीन के लिए रिश्तों को खतम कर दिया जाता है। जो भाई एक थाली में खाते थे वे आज एक घर में तो क्या, एक ही गली में भी नहीं रह पाते।

दो भाइयों के बीच बँटवारे का एक प्रसंग है- जमीन के दो हिस्से किये गये, जिसमें मात्र आधा इंच का फरक रह गया था। एक भाई के हिस्से में आधा इंच जमीन अधिक थी, जो दूसरे भाई को स्वीकार नहीं हुई। मामला तीसरे व्यक्ति तक पहुँचा। उसने दोनों को समझाया, लेकिन कोई फायदा नहीं।

तीसरे व्यक्ति ने अब कहा कि दोनों हिस्सों के बीच में एक फीट चौड़ी दीवार बना दी जाए, वह भी इस तरह कि दीवार के दोनों तरफ के हिस्से समान रहें। उस विवादित आधे इंच जमीन को दीवार में समाहित कर दिया जाए

और ऐसा ही किया गया। दोनों की सहमति से वह दीवार बना दी गई। उस दीवार के लिए दोनों ने अपने-अपने हिस्से की आधा-आधा फीट जमीन खुशी-खुशी दे दी। दीवार बना दी गई और अब किसी को भी शिकायत नहीं।

एक भाई दूसरे भाई को आधा इंच जमीन नहीं दे सका, लेकिन दीवार के लिए आधा फीट जमीन सहर्ष दे दी। इसे ईर्ष्या का एक ज्वलन्त उदाहरण कहा जा सकता है। एक फीट की उस दीवार ने भाई-भाई के रिश्ते को सदा के लिए खतम कर दिया। कहना तो यह होगा कि इस दीवार ने नहीं, बल्कि आधा इंच जमीन ने उनके रिश्ते को खतम कर दिया। यह था स्वार्थ का परिणाम। यह था ईर्ष्या का परिणाम।

महावीर का जीवन स्वार्थ और ईर्ष्या से परे था। जितना आदर माता-पिता के लिए था, उतना ही भाई के लिए भी था। भगवान महावीर का जन्मकल्याणक हम प्रतिवर्ष मनाते हैं, लेकिन उसे अभी तक प्रेरणा नहीं बना पाये। आवश्यकता है महावीर के जीवन को समझने की और समझकर उसी मार्ग पर चलने की। ऐसा करेंगे तो माता-पिता, भाई सभी को हम आदर-सम्मान दे सकेंगे। माता-पिता भाई को कष्ट देकर, उन्हें असाता पहुँचाकर, उनका अनादर करके हम क्या प्राप्त कर लेंगे?

महावीर ने जो जीवन जिया था, वह हमारे लिए शिक्षाप्रद है। उस जीवन को सही तरीके से समझेंगे तो यही लगेगा कि भगवान का जीवन और कुछ नहीं, बल्कि हमारे लिए एक प्रेरणा ही था। भगवान के '**अहिंसा परमो धर्मः**' उपदेश को मात्र नारों में नहीं, बल्कि हृदय में बसाने की आवश्यकता है।

माता-पिता, भाई के प्रति महावीर के समर्पित जीवन का एक-एक पल हमारे जीवन परिवर्तन के लिए सक्षम है। हम ऐसा कर पाते हैं तो कोई माता-पिता अपनी सन्तानों द्वारा न उपेक्षित रहेंगे, न ही तिरस्कृत। वे अपनी शेष जीवन यात्रा स्वाभिमान एवं सुखपूर्वक सम्पन्न कर सकेंगे और भाई-भाई भी आपसी प्रेमपूर्वक, स्वार्थ एवं ईर्ष्या रहित होकर रह सकेंगे। महावीर जन्मकल्याणक पर यही संकल्प लें कि हम अपने उपकारी माता-पिता, भाई आदि सभी को सम्मान दें, आदर दें। यही सोच हमें महावीर की अहिंसा का प्रत्यक्ष दर्शन करा सकेगी।

सभी पाठकों को महावीर जन्मकल्याणक की बधाई। हम सबका जीवन उनकी प्रेरणाओं से सुसंस्कारित हो, यही मंगलकामना।

# श्रमणोपासक सदस्यों हेतु विशेष सूचना

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की दिनांक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा (छ.ग.) में संपन्न कार्यसमिति बैठक में यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि श्रमणोपासक के ऐसे सदस्य, जिनके संपर्क सूत्र (मो.नं.) अभी तक संकलित नहीं हो पाए हैं, उन सदस्यों को श्रमणोपासक पत्रिका का प्रेषण बंद कर दिया जाए। अतः जिन सदस्यों ने अपने संपर्क सूत्र अभी तक अपडेट नहीं करवाए हैं, उन सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप अपने संपर्क सूत्र यथाशीघ्र ही श्रमणोपासक हेल्पलाइन नं. 9799061990 पर वॉट्सऐप के माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें, ताकि आपकी प्रति का प्रेषण जारी रह सके।**

**- सह-संपादिका**

- संथारा साधिका **साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा.** का 56 दिवसीय संथारे सहित पंडितमरण। अनेक संघों ने चार-चार लोगस्स के ध्यान सहित किये श्रद्धासुमन अर्पित।
- **9 अप्रैल, 2025** को **विश्व नवकार दिवस** को लेकर जन-जन में उत्साह। जैन-जैनेतर महापुरुषों ने इस दिवस को सफल बनाने हेतु प्रभावना की। अनेक जनों ने इस दिवस को 9 या इससे अधिक माला फेरने का लिया संकल्प।
- नोखामंडी एवं अमरावती संघ द्वारा आगामी वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत।
- 95 वर्षीय धर्मपरायणा जमना देवी लूणावत, नोखा नगर पालिका अध्यक्ष नारायण जी झंवर, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन भुजिया फैक्ट्री के कर्मचारियों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।
- आचार्य श्री रामेश का 33वां युवाचाचर्य पदारोहण दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का छठा उपाध्याय पदारोहण दिवस अपूर्व धर्मोद्योत के साथ देशभर में मनाया गया।
- जैनेतर प्रणव जी छाबड़ा, अर्चित जी सिडाणा, बागझाप निवासी प्रीति जी तामुलि एवं तेजपुर निवासी सुदीप जी चौधरी ने मद्य-मांस के आजीवन त्याग का संकल्प ग्रहण किया।
- अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के मुखारविंद से एक निश्चित आयु के पश्चात् व्यापार से निवृत्ति लेने का संकल्प ग्रहण कर कर्मबंध पर लगाम लगाने की ओर कदम बढ़ाया।
- महापुरुषों के सान्निध्य में तीन मासखमण, गाथा का स्वाध्याय, संवर, णमोत्थु णं, सामायिक, लोगस्स पाठ, आजीवन शीलव्रत सहित अनेकानेक ज्ञान-ध्यान, तपस्याओं का ठाट लगा।
- **बीकानेर** में **18 मई से 6 जून 2025 तक** होगा '**अभिमोक्षम**' शिविर का आयोजन। देशभर के बच्चों में इस शिविर हेतु अपूर्व उल्लास का माहौल।
- आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार, सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार एवं स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित। अंतिम तिथि **31 मई 2025** निर्धारित।
- श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के अंतर्गत '**आध्यात्मिक आरोग्यम्**' से संबंधित '**आनंदिनी**' कार्यक्रम हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारंभ।
- श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की प्रारंभिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी जारी। **6 जून 2025** से प्रारंभ होगी परीक्षाएँ।

# गुरुचरण विहार समाचार

''सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव हो''
- आचार्य भगवन्
''वर्तमान को सर्वश्रेष्ठ बनाएँ''
- उपाध्याय प्रवर

साधुमार्गी संघ के शान की,
जय बोलो गुरु राम की।
गुणरत्नों के भण्डार की,
जय बोलो गुरु राम की।।

जब भी हो गुरुदेव के दर्शन समझो तीरथ हो गया

नोखागाँव बना तीरथ धाम        जोरावरपुरा में धर्म का ठाट

## युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में श्रुतभक्ति दिवस सोल्लास सम्पन्न

मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराणा की जैन भागवती दीक्षा 30 अप्रैल, मुमुक्षु नेहा जी डोसी व मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली की दीक्षा 4 जून के लिए घोषित

संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. को भावांजलि

9 अप्रैल को विश्व नवकार मंत्र दिवस के लिए जन-जन में अपूर्व उत्साह

कांकरिया भवन, नोखा, समता भवन जोरावरपुरा, समता भवन नोखागाँव, बीकानेर (राज.)।

*रामेशाचार्य तपोनिधि, श्रुत चारित्र महान।*
*शीश झुका वंदन करूँ, नाना गुणों की खान।।*
*राजेश मुनिवर श्रुतनिधि, उपाध्याय गुणधाम।*
*नमन वाचनाचार्य को, बहुश्रुत हो अभिराम।।*

जिनकी संयम साधना की गूँज देश-विदेश में हो रही है ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा भक्ति-शक्ति के प्रतीक मारवाड़ अंचल को अपनी चरणरज से पावन और पवित्र कर रहे हैं। धोरां री धरती धन्य हो रही है। अध्यात्म की पावन धारा निरंतर प्रवाहित हो रही है। ओजस्वी-तेजस्वी प्रवचनों से धन्य इस

धरा का हर्षोल्लास देखते ही बनता है। जैन-जैनेतर सभी त्यागी महापुरुषों के दर्शन, प्रवचन श्रवण एवं अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर ज्ञानवृद्धि कर रहे हैं। **मुमुक्षु भाई लीलमचंद जी सुराणा**, धमतरी की जैन भागवती दीक्षा **30 अप्रैल** को **गंगाशहर-भीनासर** में एवं **मुमुक्षु बहन नेहा जी डोसी**, डौंडीलोहारा एवं **मुमुक्षु बहन साक्षी जी भंसाली**, डौंडीलोहारा की जैन भागवती दीक्षा **4 जून** को **बीकानेर** के लिए जैसे ही आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उद्घोषित हुई सर्वत्र हर्ष व खुशी का माहौल बन गया। जोरावरपुरा में श्रुतभक्ति दिवस के विराट आयोजन के बाद नोखागाँव गुरुवर राम के रंग में रम गया। यहाँ देश-विदेश से आगत दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। विभिन्न चातुर्मासों की घोषणा से जन-जन में धर्मोल्लास का माहौल छा गया। नोखागाँव के बाद **10 अप्रैल** को **भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव उदयरामसर** में, **20 अप्रैल** एवं **30 अप्रैल (अक्षय तृतीया)** को **गंगाशहर-भीनासर** में **दीक्षा प्रसंग** पर महापुरुषों का पधारना संभावित है।

## जैसी संगत वैसी रंगत

**1 मार्च 2025, कांकरिया भवन, नोखा।** प्रात:कालीन सामूहिक मंगमलय प्रार्थना **'श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवरा श्री जिनधर्म महान'** भजनों की मधुर स्वर लहरी में गायन के साथ सम्पन्न हुई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। तत्पश्चात् कांकरिया भवन से विहार हुआ। विहार के समय उपस्थित भाई-बहनों ने -

**जरा देर ठहरो भगवन् तमन्ना यही है।**
**अभी हमने जी भर के देखा ही नहीं है।।**
**सूना है यह आँगन और सूना है यह मन।**
**गुरुवर ना जाओ, यही कहती है हर धड़कन।।**

गीत की पंक्तियों ने संपूर्ण माहौल को भावपूर्ण बना दिया। हर कोई अश्रुधारा से भरे नेत्रों से पुनरागमन हेतु गुरुदेव को भारी मन से विदाई दे रहा था।

कांकरिया चौक से आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का पारख गेस्ट हाउस में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। मंगल प्रवेश पश्चात् विहार यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। इस विशाल धर्मसभा को प्रवचन की अमृत छटा से पावन करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपने दिव्य संबोधन में फरमाया कि **''अरिहंत भगवान के चरणों में वंदना का लाभ उन्हें कुछ नहीं मिलना है। वंदना हमारे लिए है कि मुझे भी अरिहंत बनना है। जैसी संगत वैसी रंगत। अरिहंतों की संगत करेंगे तो अर्हत्ता (योग्यता) प्रकट होने वाली है। सिद्ध बनने के लिए अरिहंत की परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ेगा। सिद्ध क्षेत्र एक नगर है। उसके लिए रास्ता 'नमो लोए सव्वसाहूणं' से होकर जाता है, यानी साधु बनकर ही प्रवेश किया जा सकता है। आचार्य, उपाध्याय व्यवस्था है। आत्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए साधु बनना होगा। आत्मा तक पहुँचाने वाला ज्ञान श्रेष्ठतम ज्ञान है। साधुओं के सान्निध्य से ही ज्ञान प्राप्त हो सकता है। उसकी भावना होगी तो उसको लाभ मिलेगा। पॉवर हाउस से संबंध जोड़ने के लिए वंदना करने से लाभ और सुख मिलेगा। मोह-ममत्व हटते ही रास्ते सुगमता से पार होते हैं। हमने क्रियाएँ तो बहुत की पर ममत्व कम नहीं किया। हमारा लक्ष्य अरिहंत बनना है। वंदना से भाव जुड़े और अरिहंत बनते जाएँ।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'वामा देवी के प्यारे'** गीत के साथ फरमाया कि अरिहंत प्रभु को छोड़कर हम इधर-उधर अन्य देवी-देवताओं के दर पर भटकते रहते हैं। देव, गुरु, धर्म पर हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'घर-घर मंगलाचार नाना रो राम आयो है'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। नोखा मंडी के सुश्रावक जी ने आचार्य भगवन् के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में विनती प्रस्तुत की। संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। अमरावती संघ ने चातुर्मास की विनती प्रस्तुत की। नोखा नगरपालिका अध्यक्ष नारायण जी झंवर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। परम गुरुभक्त युवारत्न 29 वर्षीय श्री राहुल जी संचेती, नोखा के आकस्मिक निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

## नानेश पट्टधर युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश का 33वाँ युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर का षष्ठम पदारोहण दिवस तप-त्याग के साथ सम्पन्न

# विनय बिना ज्ञान शून्य है

**2 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** भोर की पावन बेला में रविवारीय समता शाखा में गुरुभक्तों का उत्साह देखते ही बनता था। हर कोई आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशिष्ट आयाम से अपने जीवन को धन्य बनाने हेतु आतुर नजर आया। समता आराधना के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। पारख गेस्ट हाउस से विहार कर आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का समता भवन, जोरावरपुरा में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। सभी संप्रदाय के लोगों ने महापुरुषों की अगवानी की। **'राम गुरु पधारे हैं, ज्ञान की रोशनी लाए हैं'**, **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'** आदि जयघोषों से संपूर्ण विहार मार्ग गुँजायमान हो रहा था।

खेतमल जी हनुमानमल जी पींचा के प्लॉट पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**ज्ञान को सर्व प्रकार से प्रकाशित करो। क्षायिक ज्ञान केवलज्ञान सर्वरूप से प्रकाशित होकर जिसको भी प्राप्त होगा वह एकांत मोक्ष को प्राप्त करेगा। काल्पनिक सुख संसार से प्राप्त होता है। वास्तविक सुख (आत्मिक सुख) आत्मरमणता से प्राप्त होगा। जब तक आध्यात्मिक सुख नहीं मिलता तब तक दूसरी चीजें नहीं छूटती। 500 शिष्यों पर हुकूमत चलाने वाले भगवान के शिष्य बन गए। उनके आगे झुक गए।** मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में। **काँटे (शंका) को भगवान ने निकाल दिया। गौतम स्वामी का समाधान हो गया। विनय के बिना ज्ञान शून्य है। विनय धर्म हमारे जीवन में जुड़ जाता है तो सारी क्रियाएँ मूल्यवान बन जाती हैं। विनय बिना सारी क्रियाएँ निरर्थक है।** 'इदं न मम' **अर्थात् यह मेरा नहीं है। इस दृष्टि से सारी सृष्टि बदल जाएगी। कोई भी पदार्थ मेरा नहीं है। मेरेपन की बुद्धि का अभाव हो जाए। ज्ञान मेरा है, दर्शन मेरा है। ये दो शक्तियाँ मेरी हैं, जो अदृश्य हैं। ये शक्तियाँ हमारी आत्मा को शक्ति प्रदान करती हैं।** 'मानव का शुभ तन-मन पाया, व्रतधारी बनो, व्रतधारी बनो' **। व्रत-नियम धारण करने से कर्मबंधन से बच जाएँगे।**''

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का पावन प्रसंग महापुरुषों के जीवन से गुण ग्रहण करने का पावन अवसर है।

श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो जितना अपने आपको साधने वाला बनता है, उसकी क्षमता उतनी ही विकसित होती है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर अनुशासन एवं सिद्धांतों के प्रति अडिग रहने वाले महापुरुष हैं। सामायिक, स्वाध्याय व प्रतिक्रमण की आराधना कर हम सच्ची गुरुभक्ति का परिचय दें।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने आज के दिवस को प्रेरणा का दिवस निरुपित किया। श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि एक-एक सूत्र को जो गहराई से जानते हैं वे बहुश्रुत कहलाते हैं। आत्मबल के वे स्वयं धनी होते हैं व सभी को मजबूत बनाते हैं। उभय महापुरुष स्वयं शांत-प्रशांत भाव में रहते हैं और सभी को समभाव में रहने की प्रेरणा देते हैं।

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने **'भाग्यशाली होगा जो गुरु गुण गाएगा'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि ये महापुरुष श्रद्धा, आत्मविश्वास, संकल्पशक्ति, सत्यवादिता, मेधावी आदि अनेक गुणों को धारण करने वाले हैं। महापुरुषों के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए।

साध्वी श्री लघिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुष वचनसिद्धि के दाता होते हैं। उनके मुख से जो वचन निकल जाते हैं वे कार्य पूर्ण हो जाते हैं। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी महान पुण्यवानी का उदय है, जो हमें ऐसे गुरुवर मिले हैं। विश्व में भ्रमण करो तो भी ऐसे आचार्य एवं उपाध्याय प्रवर नहीं मिलेंगे।

साध्वी श्री सुनिधि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जिसने मेरे समकित की लौ जगाई है, जिसने मुझे मुक्ति की राह दिखाई है, ऐसे राम गुरु को करती हूँ वंदन। आपसे बिना माँगे ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। गुरु के बिना जीवन शुरू नहीं। हम भी सिद्ध अवस्था को प्राप्त करें।

साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि **'मेरे राम गुरुवर को ध्यान तो दिलाना, खजाना क्या दे गए गुरुवर नाना'**। हमने भी देव, गुरु, धर्म की नाव को स्वीकार किया है। हम भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से समर्पित हों। कितने भी आँधी-तूफान आएँ, हम अपनी श्रद्धा कम नहीं होने देंगे।

साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. ने गीत **'चादर दिवस है आज, खुशियाँ छाई हैं'** के साथ श्रुतभक्ति यानी जो जिनेश्वर भगवंतों ने स्वीकार किया उस पर अटूट श्रद्धा रखने के भाव फरमाए।

साध्वी श्री सुशक्ति श्री जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य को पाकर हम निहाल हो गए हैं। ज्ञान-ध्यान को हम निरंतर आगे बढ़ाएँ। साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री नानेश ने आचार्य श्री रामेश को खोज निकाला वैसे ही राम गुरु ने उपाध्याय प्रवर को खोज निकाला।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ के वरिष्ठ सुश्रावक एवं महेश नाहटा ने महापुरुषों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। कई भाई-बहनों ने 36 वंदना करने का नियम लिया। लगभग 100 उपवास सहित प्रचुर मात्रा में संवर, पौषध आदि हुए। रामेश-राजेश खुला प्रश्नमंच संपन्न हुआ।

## संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. को भावांजलि

**3 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् युगनिर्माता आचार्य भगवन् की आज्ञानुवर्तिनी संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के उदयपुर में संथारा सहित पंडितमरण पर स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। सभा में तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने शांत-प्रशांत मुद्रा में गीतिका **'तीन मनोरथ धारो रे साधु, तीन मनोरथ धारो'** के साथ फरमाया कि ''**पहली मनोकामना**

**श्रुतज्ञान की ज्योति होगी। बाहर कितनी भी ज्योति हो, किंतु आँखों में ज्योति नहीं तो बाहर के पदार्थ नहीं दिखेंगे। वैसे ही ज्ञान की ज्योति अंतर् में जागेगी तो अध्यात्म चेतना आएगी। संथारा कब लिया जाता है? धर्म-श्रद्धा से क्या लाभ होता है? धर्म-श्रद्धा होने पर जो साता और सुख में रचा-पचा था वह उससे विरक्त हो जाता है और अनगार धर्म को स्वीकार कर लेता है। जीवन की आशा भय पैदा करती है। संथारा लेने से पूर्व यह भाव बन जाते हैं कि जीवन की आशा नहीं और मरने का भय नहीं। जीवन से तृप्त हो जाएँगे तो मृत्यु आसान हो जाएगी। जब तक जिऊँगा निष्काम जिऊँगा। मेरी कोई चाह नहीं, केवल राह है। उस राह पर चलता जाऊँगा और यदि मौत आ जाए तो निःसंकोच मरण का वरण करूँगा। जीवन भी एक रण है। युद्ध करना पड़ता है। अपने से ही युद्ध करो। बाह्य युद्ध करने से क्या फायदा? बाहर का युद्ध वैर का बंध कराने वाला होता है। सारा जगत मेरे लिए मित्र है। ऐसी भावना भानी चाहिए।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संथारा साधिका श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. ने आत्मा से प्रेम किया। हम भी आत्मा से प्रेम करें। संथारा ग्रहण करने से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है? जीव अपने भवों को कम कर लेते हैं। रामप्रेम श्री जी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथ सिद्ध कर लिए।

साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि एक दिन भी भूखा रहा जाए तो मन विचलित होने लगता है। साध्वी श्री जी 56 दिन संथारे में जीए। ये भगवान का शासन है। यहाँ '**आर्ट ऑफ डेथ**' सिखाते हैं। हमारी मृत्यु सामान्य न होकर महोत्सव बने। साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. ने अपनी आत्मा को संथारे में तपाया है।

साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जिंदगी का सत्य है मृत्यु। जो जीवन को साध लेता है, उसका जीवन सत्य हो जाता है। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि भव्य जीवो! सोचते-सोचते अनादिकाल हो गया। अब तो जाग जाओ। संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. ने अपने अंतिम समय में आत्मा को जागृत कर संथारा ग्रहण किया। उभय गुरु-भगवंतों ने उनकी भावना अनुसार दीक्षा की आज्ञा दी और उन्होंने अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण किया।

संघ के वरिष्ठ सुश्रावक एवं महेश नाहटा ने साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. का जीवन परिचय देते हुए साध्वी श्री जी के महाप्रयाण को शासन की अपूरणीय क्षति बताया। अंत में संपूर्ण सभा ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर हार्दिक श्रद्धाभाव अर्पित किए।

## लाभ मिले तो गर्व नहीं करना

**4 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** देव, गुरु, धर्म को समर्पित प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से जीवन धन्य बनाने के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा को भगवान महावीर के अमृतवचनों से पावन करते हुए प्रशांतमना परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**वंदन करना लाभ, सुख, संपत्ति का हेतु है। सुख इंद्रिय विषय भी होता है, उसे भौतिक कहा है। आत्मिक सुख प्राप्त होने की बात कही है। कैसे मिलेगा? शाश्वत रास्ता हमें ज्ञात हो जाए और रास्ते पर चलने लग जाएँ तो आत्मिक सुख प्राप्त हो जाएगा। भौतिक सुख, धन सब मिल जाए तो उसका गर्व नहीं करना। जैसा हम चाहें वैसा फल न मिले तो उसमें शोक नहीं करना। लाभ होने पर गर्व नहीं करना। क्योंकि मिला कुछ नहीं। जो मिला है उसमें से कितना साथ ले जाओगे? कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है। फिर क्या लाभ हुआ? यदि आत्मिक ज्ञान हुआ तो लाभ है। वो संतुष्ट करने वाला हो। भौतिक पदार्थों का लाभ संतुष्ट करने वाला नहीं है। बाहर का कुछ भी प्राप्त होना लाभ को दर्शाने वाला नहीं होता। लाभ नहीं तो शोक भी नहीं करना। लाभ मिले तो**

**गर्व नहीं करना। जैसे ही पुण्यहीन होंगे ये चीजें अपने आप दूर हो जाएँगी। पूज्य गुरुदेव फरमाते थे कि व्यक्ति भोजन के लिए बैठा है, सामने प्रिय भोजन सामग्री रखी है और उससे आँखें तृप्त हो रही हैं। हाथ आगे बढ़ाकर कतली व राजभोग उठाए और मुँह में रखे। अच्छे लगे और सोचे कि मैं इसे नहीं छोड़ूँगा। पकड़ोगे तो पकड़ में आ जाओगे। छोड़ोगे तो छूट जाओगे। मरते दम तक आदमी जोड़ते रहता है। पाता क्या है? दुःख। आसानी से कौन कहता है कि हमने छोड़ दिया। शालिभद्र की कहानी से शिक्षा मिलती है कि संग्रह नहीं करना, गर्व नहीं करना। नहीं है तो शोक नहीं है। दान क्या दिया गया है उसका महत्व नहीं है, कितने शुभ भावों से दिया गया है उसका महत्व है। सुपात्रदान की महिमा का भाव बना रहता है तो उसे पुण्य का स्रोत समझो। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। अपने आप में धैर्य बनाए रखना। धैर्य है तो दुःख नहीं होगा, नहीं तो दुःखी हो जाओगे। धैर्य हमारे समभाव में वृद्धि करने वाला होगा। धैर्य है तो जीवन जीने का आनंद आसानी से ले सकते हैं। मेरा आनंद मेरे भीतर है। मेरी सोच मेरी समझ में हो तो मेरा आनंद कहीं जाएगा नहीं। भगवान का मार्ग राजमार्ग है, आनंद का मार्ग है। उस मार्ग पर दुःख हो ही नहीं सकता।''**

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सोच बदलते ही जीवन बदल जाता है। सोच सुधारो तो जीवन सुधर जाता है। सारी समस्याओं का समाधान धन से नहीं, धर्म से होता है। जो धर्म को धक्का दे देता है उसे संसार में धक्के ही खाने पड़ते हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा का निकुंभ (मेवाड़) से गुरुचरणों में पधारना हुआ। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं राष्ट्रीय महामंत्री जी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। नामदेव उच्च माध्यमिक विद्यालय में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

## कर्मों का बंध राग व द्वेष से होता है

**5 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** प्रातःकाल की मंगल बेला में सुमधुर प्रार्थना के रूप में प्रभु पार्श्वनाथ भगवान से विनती की गई कि हे भगवन्! मुझे इस भवसागर से पार लगा देना। तीर्थंकर भगवान की वाणी अभी भी मौजूद है, जिससे हम भवपार कर सकते हैं। प्रवचन सभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी के समक्ष धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए व्यसनमुक्ति के प्रणेता परमाराध्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**कर्मों का बंध कौन करता है? आत्मा या शरीर? यदि शरीर करेगा तो शरीर के साथ कर्म भी अलग हो जाएँगे। यदि आत्मा कर्मबंध करने वाली है तो सिद्ध भगवान भी आत्मा हैं। फिर तो सिद्ध भगवान भी कर्मबंध करेंगे। जो कर्मों से बँधी आत्मा है वही कर्मों का बंध करने वाली है। जो नहीं है वो कर्मों का बंध नहीं करती। कर्मों का बंध अनादिकाल से है। कर्मों का बंध राग और द्वेष से होता है। ये दो बीज हैं, जो जहाँ पड़ते हैं वहाँ कर्म पैदा हो जाते हैं। जैसा हमने अध्यवसायों के कर्मों का बंध किया है वैसा भोगना पड़ेगा। सम्यक्त्व का बोध होगा तो पता चलेगा कि आत्मा क्या है? हमारा अनंतकाल बीत गया। अज्ञान फैला हुआ है। ज्ञान की आँख प्रकट हो जाना बड़ी बात है। उसको आगे की झलक मिलने लग जाती है। कोई-कोई सीधे साधुव्रत स्वीकार कर लेते हैं। पहले श्रावक व्रत लेना कोई जरूरी नहीं है।**

**शरीर को नौका कहा गया है। किनारे तक पहुँचने का लक्ष्य बना लें। दिशासूचक यंत्र है तो सही दिशा में आगे बढ़ पाएँगे, नहीं तो नरक तिर्यंच में भटकते रहेंगे। करकंडु महाराज साधु बन गए और**

**प्रत्येक बुद्ध बन गए, फिर मोक्ष प्राप्त कर लिया। पिछली अवस्था में भी साधु बनकर सारे कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। धर्म स्नान करेंगे तो कर्मों का मैल कम होगा। हम अपना मनुष्य जन्म सफल करें। जो मिला है उसी का सदुपयोग करो। भविष्य की चिंता मत करो।''**

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. एवं साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक बियासना में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शासन दीपक श्री इभ्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का गुरुचरणों में पधारना हुआ। 70 वर्ष के बाद व्यापार से निवृत्ति लेने एवं गाड़ी चलाते समय व भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाइयों ने लिया। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का विहार बीकानेर-दिल्ली-उत्तर प्रदेश की ओर हुआ है।

## जैसा बीज बोएँगे, वैसा फल मिलेगा।

**6 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** सूर्योदय के पश्चात् मंगलमय प्रार्थना में **'तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** भक्ति गीतों का संगान हुआ। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु श्रावक-श्राविकाओं को आगमों की गूढ़ता बताते हुए जगत् उद्धारक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जो रात्रि व्यतीत हो गई है वो पुनः लौटकर नहीं आएगी। जिन्होंने इसे धर्म में व्यतीत किया वे सार्थक हो गए और जिसने नहीं किया वह निरर्थक हो गया। सिद्धांत को जानना और उसे प्रयोगात्मक रूप में उपयोग करना सार्थक हो पाएगा। बिना वीरता के धर्म मार्ग पर पैर रखना संभव नहीं हो सकता। दीनता को छोड़कर गतिशील बनें। दीनता हीन भावों का प्रतीक है। जिसने स्वयं को नहीं पहचाना वह दीन हो सकता है। जिसने स्वयं की पहचान कर ली वह दीन नहीं हो सकता। साधु के लिए कहा गया है कि वह अदीन होकर कार्य करें। समय आ जाए तो संथारे की आराधना की जा सकती है। उससे पहले वीरता से अपने कार्य करने चाहिए। असमय भी संथारा स्वीकार नहीं किया जा सकता। दीनता गरीबी का प्रतीक है। साधु की भिक्षा अदीन प्रवृत्ति की है। भगवान ऋषभदेव 1 वर्ष तक भिक्षा के लिए अदीन भाव से भ्रमण करते रहे और अपना पुरुषार्थ करते रहे। लाभ हो या न हो, लेकिन अकर्मण्यता नहीं आनी चाहिए। अपना कर्म करो परिणाम की आशा मत करो। जो भी क्रिया होगी उसका लाभ होगा। जैसा बीज बोया जाएगा वैसा ही फल मिलेगा। अदीनता, खिन्नता का बोध न करें। जब तक संभव हो पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। पुरुषार्थ करने वाले की कभी हार नहीं होती। बैठे रहने वाले की नैया पार नहीं होती। मनुष्य जन्म का मौका मिला है। इस जन्म में जो कार्य कर सकते हैं वह दूसरे जन्म में नहीं कर सकते। अभी भी कुछ हो सकता है।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'अहो अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो'** संयम गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि क्षमा करने में, तप करने में, दान देने में शूरवीर होना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दस मिनट नवकार मंत्र जाप करने तथा दिनभर में पाँच सामायिक करने के प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिए।

दोपहर में श्री संजय मुनि जी म.सा. ने तत्वज्ञान का बोध दिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

# संक्लेश स्थान का परित्याग करें

**7 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** दिन के शुभारंभ में मंगलमय प्रार्थना के रूप में प्रभु एवं गुरु भक्ति की गई। भक्ति आराधना के क्रम में प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा को भगवान महावीर के पावन संदेशों से अवगत कराते हुए संयम के सजग प्रहरी परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया, ''**वंदना करने के लिए भक्ति की आवश्यकता होती है। नमन और वंदना में अंतर है। नमन केवल 'मत्थएणं वंदामि' बोलना नहीं है। नमस्कार, वंदना विशेष स्तुतिपरक होते हैं, जिसमें गुणों का अभिवर्द्धन करने का भाव होता है। वंदना से गुणात्मक भाव प्रकट होता है। भाव के साथ स्तुतिपूर्वक वंदना की जा सकती है। मेरे भीतर भी वैसे गुण विकसित हों इसलिए स्तुति की जाती है। जैसा हम बनना चाहते हैं वैसा आदर्श हमारे सामने होना चाहिए। एकसूत्र - संक्लेश स्थान का दूर से ही परित्याग कर देना चाहिए। क्रोध आने पर उस स्थान को कुछ देर के लिए छोड़ दो। संक्लेश से बच जाओगे। कर्मों का बंधन संक्लेश से ज्यादा होता है। जरा कर्म देखकर करिए। तीर्थंकर देव में इतनी ताकत होती है कि वे पूरे लोक को गेंद बनाकर थोड़ा-सा धक्का दें तो पता नहीं कि वह गेंद कहाँ तक जाएगी, फिर भी कर्म से बच नहीं सकते। जो तुमको अच्छा नहीं लगे वैसा व्यवहार दूसरों के साथ भी न करें। समय पर जो सावधान हो वो अपने आपको संक्लेश से बचा सकता है। वंदना करेंगे तो बुद्धि पवित्र होगी। हम प्रयत्नशील बनें। हमें मौका मिला है, अपने आपको जितना साध लेंगे, उतना ही आगे बढ़ेंगे।**''

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी होना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक एकासन में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अपनी एक प्यास कच्चे पानी से नहीं बुझाने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। सालेम मिशन स्कूल, जोरावरपुरा में व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम हुआ। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने स्कूल में फरमाया कि विनय, विवेक जीवन में सबसे पहले जरूरी हैं। प्रात: जल्दी उठने और रात्रि में जल्दी सोने का नियम बहुत अच्छा है। माता-पिता व गुरुजनों को सदा सम्मान दें। छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या नहीं करने एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये। प्रतिदिन एक अच्छा कार्य करने का नियम भी सभी ने लिया।

शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ठाणा-2 का विहार मेवाड़ की ओर हुआ है।

# सम्यक्त्व है सुरक्षा कवच

**8 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** मंगलमय प्रार्थना में **'सिद्ध अरिहंत के गुण गाते चलो'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** गीतिकाओं के संगान से भक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में जिनधर्म का संक्षिप्त विवेचन करते हुए उत्क्रांति प्रदाता, विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**आत्मा की सतत रक्षा करनी चाहिए। कैसे होगी? पापकर्म का उपार्जन करता हुआ जीव हर्षित होता है। उसका सुरक्षा तंत्र समाप्त हो जाता है। पुण्यकर्म का उपार्जन करता है तो जीव सुरक्षित होता है। मिथ्यात्व आत्मा को असुरक्षा में डालता है। सम्यक्त्व में सुरक्षित रह सकते हैं। सम्यक्त्व चारित्र का मूल है। मूल सुरक्षित है तो चारित्र रूपी पेड़ अपने आप सुरक्षित है। सम्यक्त्व हो जाने के बाद हमारे जीवन में बहुत सारे गुण आने लगते हैं। मिथ्यात्व जैसा भय नहीं, सम्यक्त्व जैसा**

**निर्भय नहीं। सुरक्षा कवच है सम्यक्त्व, जो आत्मा को भटकाने वाला नहीं है। एक बार सम्यक्त्व आ जाए तो मोक्ष जाना निश्चित है। सम्यक्त्व से क्षमा का भाव आता है। आत्म-प्रशंसा व दूसरों की निंदा से बचें। प्रशंसा सुनना नहीं अपितु प्रशंसनीय कार्य करते रहना है।''**

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि चार प्रकार के श्रावक होते हैं - काँच के समान, पताका के समान, ठूँठ के समान, काँटे के समान सूखे हुए। सबसे श्रेष्ठ श्रावक काँच के समान साफ, निर्मल, पवित्र चित्त वाले होते हैं। पताका के समान श्रावक के मन में स्थिरता नहीं हो पाती। ठूँठ के समान श्रावक अपना स्वभाव नहीं छोड़ते है, झुकते नहीं है और काँटे के समान श्रावक साधु-संतों को कई बातें सुना देते हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली, जो गुरु पाए राम से'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जैनेतर प्रणव जी छाबड़ा एवं अर्चित जी सिडाणा ने मद्य माँस का आजीवन त्याग ग्रहण किया।

# धर्म मेरा प्राण व जीवन है

**9 मार्च 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** रविवार का प्रसंग होने से आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त '**रविवारीय समता शाखा**' आयाम से अपने जीवन को पावन करने हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। इस आयाम हेतु श्रद्धालुओं का उल्लास स्वत: ही परिलक्षित हो रहा था।

खेतमल जी हनुमानमल जी पींचा परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए दृढ़ संयम एवं क्रियाधारी परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया, ''**आगमों में अनेक रहस्य भरे हुए हैं।** 'संबुझह किं न बुझह' **दुनिया में धन मिलना, परिवार मिलना आसान है, लेकिन संबोध को प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है। समता शाखा की चिंतन मणियों में** 'हे चैतन्य देव! तू कौन है?' **इसका बोध होना जरूरी है। बाकी सब निरर्थक है। शरीर जीव सहित (सजीव) है, इससे भिन्नता का बोध होता है। हमारा ज्यादा लक्ष्य शरीर को बचाने का रहता है। आत्मा को बचाने का लक्ष्य गौण हो जाता है। जानना और देखना आत्मा का गुण है। शरीर से आत्मा निकल जाए तो शरीर सूँघ नहीं पाता, देख नहीं पाता, सुन नहीं पाता। देखता कौन है? आत्मा। जिसके रहने से वह क्रिया होती है, वह है चेतना। चेतना से बोध प्राप्त होता है। ऋषभदेव भगवान ने 98 पुत्रों को बोध दिया कि जिसके पास जितना धन है, उसे उतना ही भय रहता है। जिसको संतोष होता है, वह सुखी हो जाता है। सुनने से ज्ञान प्राप्ति का लाभ होता है। शरीर व आत्मा भिन्न-भिन्न हैं। गहरी अनुभूति के लिए बार-बार चिंतन-मनन करेंगे तो कुछ लाभ प्राप्त हो पाएगा। थोड़ा गुण भी जीवन में उतार लिया तो विरक्ति की भावना पैदा होगी। जब देव को ज्ञात हुआ कि अरणक श्रावक को धर्म से डिगाना असंभव है तो उसने परीक्षा ली। धर्म हमारी आत्मा है और धन हमारा शरीर है। धर्म चला जाए तो धन क्या काम आएगा? अरणक के दिल में धर्म जमा हुआ था। धर्म मेरा प्राण है। धर्म मेरा जीवन है। ऐसा सम्यक् बोध जब हमें प्राप्त हो जाता है तो दुनिया की कोई ताकत हमें डिगा नहीं सकती। सत्य धर्म की ताकत बहुत बड़ी होती है।''**

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान की वाणी सुनकर कइयों का जीवन बदल गया। संसार में सभी दु:खी हैं, जिनको सुखी होने के लिए कोई न कोई सहारा चाहिए। हमें पुण्ययोग से सारे साधन मिले हैं। धर्म की

शुरुआत श्रद्धा, सम्यक्त्व से होती है। सद्गुरु का मिलना दुर्लभ है। समभाव की प्राप्ति के लिए सामायिक जरूरी है।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुजाता श्री जी म.सा., साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा., साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंदों ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक दया/दयाभाव के अंतर्गत 40 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। जोरावरपुरा के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल एवं सकल जैन समाज की सेवा-भक्ति एवं धर्मनिष्ठा सराहनीय रही।

# संघ की सेवा निष्काम भाव से करें

**10 मार्च, 2025, समता भवन, जोरावरपुरा।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना कर जीवन को सफल और सार्थक बनाया जा सकता है। कोई धन कमाने में जिंदगी को सफल मान रहा है, कोई परिवार का पोषण करने में जीवन को सफल मान रहा है, कोई मान-सम्मान प्राप्त करने में जीवन को सफल मान रहा है। लेकिन भक्त सोचता है कि परमात्मा की भक्ति करके जीवन को सफल बनाऊँ। सुबाहुकुमार ने अपार वैभव को ठोकर मारकर संयम जीवन स्वीकार कर लिया। पूर्व में उन्होंने ऐसा सुंदर जीवन जीया और वर्तमान में निमित्त मिलते ही वे संयम के प्रति जागृत हो गए। संयम लेकर भी सुख-सुविधा, तेरी-मेरी, बाहरी उलझनों में पड़ गए तो जीवन सार्थक नहीं हो पाएगा। श्रावक को भी धीर-वीर-गंभीर होना चाहिए। आत्महित और संघहित में सदैव पुरुषार्थशील होना चाहिए। संघ की किसी भी बात का अनर्गल ढंग से कहीं प्रचार-प्रसार नहीं करना चाहिए। इधर-उधर की बातों में नहीं पड़ना चाहिए। अनावश्यक बात मुँह से न निकालें और न इधर-उधर चर्चा करें। ऐसा करने वाला घोर कर्मों का बंध करता है और संघ-समाज में दुविधा खड़ी करने वाला बन जाता है। संघ की सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिए। महापुरुषों के आयामों को जन-जन तक पहुँचाकर सच्ची गुरु समर्पणा दिखावें।

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने **'वामा देवी के प्यारे, तुम अश्वसेन के दुलारे'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। धन से नहीं, धर्म से ही जीवन का कल्याण होगा। जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, सच्चाई सर्वप्रथम होनी चाहिए। पूरी सभा ने **'जिनशासन के वीरों को, वंदन है अभिनंदन है'** स्वरलहरी से वातावरण को गुंजायमान कर दिया। संघ मंत्री ने अवसर का लाभ उठाने की अपील की। 1 घंटे तक मौन रहने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

### आचार्य भगवन् का नोखागाँव में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

# पाँचों इंद्रियों पर विजय प्राप्त करें

**11 मार्च, 2025, समता भवन, नोखागाँव।** आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-18 का **'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की'**, **'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'**, **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'**, **'भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछे सुख और साता'** आदि जयघोषों एवं **'जब भी हो गुरुदेव के दर्शन, समझो तीरथ हो गया'**,

**'खम्मा घणी, खम्मा घणी, म्हारे राम गुरु नें खम्मा घणी'**, **'आज गुरुदेव पधारे हैं, लगता है जैसे भगवान पधारे हैं'** आदि गीतों के साथ होली चातुर्मासार्थ ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ। जैन-जैनेतर सहित पूरा गाँव अगवानी हेतु उमड़ पड़ा।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**संसार के प्राणियों को दो भागों में विभक्त किया गया है - इंद्रियरामी व आत्मारामी। पाँच इंद्रियों के विषयों में रत रहता है तो वह इंद्रियरामी है। अनुकूल विषयों की खोज में रहने वाला प्राणी आत्मारामी है। जिसका मुख्य उद्देश्य आत्मा को खुराक देना है। एक स्वाद का अनुभव करने के लिए खा रहा है, दूसरा शरीर को टिकाने के लिए खा रहा है। साधना इस शरीर से करनी है, इसलिए खुराक दी जा रही है। दोनों में विचारों में बहुत बड़ा अंतर है। ज्ञानी पुरुष भोजन करते हुए कर्मों को काट लेता है और अज्ञानी कर्मों का बंध कर लेता है। उदाहरणतः स्थुलिभद्र मुनि को कोशा गणिका के यहाँ चातुर्मास की आज्ञा मिली। इस चातुर्मास में उनमें कोई विकार पैदा नहीं हुआ। रंगशाला में भी मन को शांत बनाए रखा, उनके मन में कोई विकार पैदा नहीं हुआ। मन को शांत बनाए रखना उनकी साधना थी। निरंतर चार महीने तक मुनिराज शांत भाव से रहे। परिणामतः कोशा गणिका बारह व्रतधारी श्राविका बन गई। तब उनके गुरु ने कहा, आपने महादुष्कर तप किया है। इंद्रियों पर हमारा नियंत्रण होना चाहिए। इंद्रियों पर नियंत्रण नहीं है तो कर्मबंध का कारण बन जाता है। स्वास्थ्य के लिए, रक्षा के लिए भोजन करना है, स्वाद के लिए नहीं। तभी कर्मों से बचा जा सकेगा। हम भी अनासक्त भाव से खाएँगे तो हमारी साधना भी रंग लाएगी। हमारी साधना का मुख्य लक्ष्य पाँच इंद्रियों को वश (कंट्रोल) में करना, जीतना है।**''

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान की वाणी पर श्रद्धा करने से ज्ञान बढ़ेगा। सभी समस्याएँ ज्ञान से हल होंगी। सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्था को मजबूत बनाएँ। राग-द्वेष को कम करने की दिशा में निरंतर अभ्यास करें। अपने से बड़े वृद्धजन की सेवा करेंगे तो मोह हटेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कंवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा., साध्वी श्री राजमति श्री जी म.सा., साध्वी श्री कविता श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'धन्य भाग्य हमारे, गुरु राम पधारे'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय श्रावक जी ने आचार्य भगवन् के आगमन को परम सौभाग्य का विषय बताया। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। वर्ष में 12 आयंबिल, 12 उपवास, 12 एकासन करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। राजकीय संस्कृत विद्यालय में नैतिक शिक्षा, व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम हुए।

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने तीर्थंकर चारित्र की सुंदर व्याख्या की। श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. ने बालक-बालिकाओं को तत्वज्ञान का बोध दिया। शासन दीपक श्री गौरव मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 का उग्र विहार कर गुरुचरणों में पधारना हुआ। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा एवं साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा. आदि ठाणा का 5 दिन पूर्व पदार्पण हुआ। 95 वर्षीय सुश्राविका जमना देवी लूणावत ने गुरुदर्शन कर जीवन धन्य किया। जोरावरपुरा से नोखागाँव के बीच जैन भुजिया फैक्ट्री के कर्मचारियों ने गुरुदर्शन कर व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

# विवाद नहीं, संवाद करें

**12 मार्च, 2025, समता भवन, नोखागाँव।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** के स्वरों से सभी प्रभुभक्ति, गुरुभक्ति में सभी लीन हो गए। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**एक शब्द है - 'वाद'। इससे बने शब्द हैं - संवाद, विवाद। वाद सामान्य वार्ता को कहा जाता है। वाद में तत्वज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। वाद में प्रतिप्रश्न करने, पूछने से ज्ञान की प्राप्ति होती है। संवाद से सब समस्याओं का हल हो जाता है। विवाद, जिसमें खिंचाव पैदा होने लगता है। विवाद से सदैव बचना चाहिए। जब अपनी बात की पकड़ हो जाती है तो विवाद होता है। यदि अपने भीतर नम्रता नहीं है तो दूसरों को आदर नहीं दे पाएँगे। शिष्य यदि केवलज्ञानी भी बन जाए तब भी उसे गुरु का विनय करना नहीं छोड़ना चाहिए। जब तक गुरु को पता नहीं चले तब तक गुरु सेवा लेते हैं। पता होने पर सेवा नहीं लेते। कषाय तीव्र होते हैं तो आत्मा की आवाज धीमी पड़ जाती है। अपने धन, दौलत, बंगले पर गर्व नहीं होना चाहिए। मनुष्य जन्म में हमने क्या खोया या क्या पाया, चिंतन करें। 'इदं न मम' से एकदम शांत-प्रशांत अवस्था प्राप्त हो जाएगी। जीव 18 पापों के सेवन से भारी हो जाता है।**''

श्री राजरत्न मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म इस भव, परभव और भव-भव में शरण देने वाला है। जीवन का लक्ष्य मोक्ष बने इसके लिए संयम जरूरी है। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आचार्य भगवन् ने सम्पूर्ण सभा को क्रोध नहीं करने का संकल्प करवाया। नोखागाँव साधुमार्गी जैन संघ ने आगामी 2026 के वर्षावास की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। भानूदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम आयोजित हुआ। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

# आत्मा में आनंद की अनुभूति करें

**13 मार्च, 2025, समता भवन, नोखागाँव।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** से आत्मोन्नति के भाव पोषित हुए। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमारी साधना का उद्देश्य क्या है? उद्देश्य को स्पष्ट करना चाहिए। साधु क्यों बने हैं? श्रावक बने हैं तो आत्मा में आनंद की अनुभूति करने का लक्ष्य रखें। आत्मा में आनंद प्रकट हो ऐसा हमारी आत्मा का लक्ष्य हो। आनंद को स्वयं के भीतर से प्रकट करना होगा। यह मेरेपन की बुद्धि से ढका हुआ है। सभी विपरीत दिशा में चल रहे हैं। हमारा लक्ष्य आनंद को प्राप्त करना है। कितने वर्षों से सामायिक कर रहे हैं? कैसा महसूस हो रहा है? पूणिया श्रावक की सामायिक परिपूर्ण थी। एक दिन सामायिक में मन नहीं लगा तो सोचने लगा कि मेरे से कोई अकरणीय कार्य तो नहीं हुआ है? पता करने पर ज्ञात हुआ कि जो भोजन उसने किया है, उसे पकाने लिए कंडा दूसरे के घर से लाया गया था। छोटी-सी बात का भी प्रभाव पड़ता है। छोटा-सा तार गाड़ी को रोक सकता है। नट-बोल्ट से गाड़ी पलटी मार सकती है। जो कार्य करो उसमें मन लगना चाहिए। रात को नींद कब आती होगी? हमारी चर्या यदि सही है तो सही समय पर नींद आएगी और सुबह भी जल्दी उठ सकेंगे। हमें भी विश्वास रखना चाहिए**

**कि हमारी सामायिक उत्तम हो। आत्मा के लिए वर्तमान में जो समय साध लिया वह आपका है। धर्म में कितनी रातें व्यतीत हुईं? ज्यादा समय अधर्म में निकाला या धर्म में? आत्मा में आनंद प्रकट करना है। मणिरथ राजा ने छल-कपट किया, क्या मिला? लोभ ऐसा पाप है, जो राग-द्वेष पैदा करता है। मैं कौन हूँ, इस पर विचार करें। धर्म क्या है, आत्मा क्या है? समय को सार्थक नहीं किया तो समय उत्तम फल नहीं देगा। हम पुद्‌गलों में फँसे हुए हैं। इनसे बाहर निकलने की जरूरत है।'' सुंदरलाल जी सुराणा ने सभा में खड़े होकर 70 वर्ष पश्चात् दीक्षा लेने का मानस प्रकट किया।**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु हमें एक दृष्टि देते हैं। लेकिन हमारी जैसी सोच होती है वैसा जीवन बन जाता है। दो विचारधाराएँ होती हैं- पहली, अभी अच्छे से अच्छा क्या कर सकता हूँ। दूसरी, अवसर की तलाश करना। अभी नहीं, अवसर आने पर फिर कभी। अपने वर्तमान को सर्वश्रेष्ठ करने का पुरुषार्थ करना है। जब आज सर्वोत्तम होगा तो कल भी सर्वोत्तम होगा। सुविधाएँ कभी भी पूर्ण नहीं होतीं। हमारे जीवन का सबसे बड़ा धन समय है। उसका उपयोग होना चाहिए। नोखागाँव वाले सभी अच्छा लाभ ले रहे हैं। हम पुण्य बढ़ाते चलें, काम अपने आप हो जाएगा। उपसाकदशांग सूत्र में कहा गया है कि पुरुषार्थ ही सब कुछ है। दु:ख स्वयं के द्वारा ही उत्पन्न किया हुआ है। मूल सोच हमारे जीवन में गहराई तक उतरनी चाहिए। जो मेहनत करना चाहता है वह आज करेगा, कल पर नहीं डालेगा। भगवान ने पूछा कि सोया हुआ व्यक्ति अच्छा है या जागा हुआ? जो धर्म करता है वह जागा हुआ है। संयम के भाव को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।''**

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने **'रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि क्रोध करने से नीच गति का बंध होता है। समभाव की साधना को जीवन में निरंतर आगे बढ़ाएँ।

साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा. ने **'होली आई रे, राम गुरु संग खेलो, होली आई रे'** गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। नोखा के नवयुवकों ने गुरुदेव के विराजने तक शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिए। आचार्य भगवन् के आह्वान पर कई भाई-बहनों ने माह में 2 दया करने का नियम लिया। कई भाई-बहनों ने वर्ष में 12 दया, 12 संवर करने का नियम लिया। होली चातुर्मासिक पर्व पर देश के अनेक स्थानों से श्रद्धालु भाई-बहनों ने प्रचुर मात्रा में उपवास, पौषध, दया, संवर, सामायिक, स्वाध्याय आदि धर्म आराधना कर जीवन धन्य बनाया।

जैसे ही आचार्य भगवन् ने 58 वर्षीय **मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराणा** पुत्र श्री नेमीचंद जी-जनक देवी सुराणा (धमतरी, चारमा, छत्तीसगढ़) की जैन भागवती दीक्षा की साधुमर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित **30 अप्रैल, 2025 (अक्षय तृतीया)** के लिए घोषणा की, पूरा माहौल जय-जयकारों से गुंजायमान हो गया। एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव द्वारा मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराणा का अभिनंदन किया गया।

## आत्मबोध होना दुर्लभ है

**14 मार्च, 2025, समता भवन, नोखागाँव।** प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि **''गुरु का उपदेश आत्मबोध के लिए है। आत्मबोध होना दुर्लभ है। तीन बोधि – ज्ञान, दर्शन, चारित्र हैं। सत्य को जानना जरूरी है। तेज आँधी, तेज धूप, रेगिस्तान की धूप से गर्म नहीं होती। मूसलाधार बारिश हो और पुराना कागज फटे नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हथोड़े से पापड़ टूटे नहीं, असंभव है। आत्मबोध का अर्थ है सच्चाई का बोध और वह सच्चाई यह है कि**

**आत्मा बाहर के पदार्थों से निर्लिप्त रहनी चाहिए। हमारे सुख–दुःख किस पर निर्भर हैं? संबंधों पर निर्भर है। भगवान फरमाते हैं जैसे तालाब का कमल पानी से गीला नहीं होता। वैसे ही आप भी निर्लिप्त रहें। निर्माण करने वाले आप स्वयं हो। अपना दुःख दूसरों को बताना सरल है। वास्तव में शिकायत खुद की करनी चाहिए। हमारे भीतर रहे हुए राग–द्वेष हमें परेशान कर रहे हैं।''**

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने ठाणांग सूत्र की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जाति–संपन्न, कुल–संपन्न व्यक्ति सिंह के समान दीक्षा लेता है और सिंह के समान पालन करता है। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सामायिक करने का आह्वान किया गया। कई भाई–बहनों ने तुरंत ही नियम लिया। 250 से अधिक संवर–पौषध हुए।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस 9 अप्रैल के उपलक्ष्य में कई भाई–बहनों ने 1 से 9 माला फेरने का नियम लिया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव ने 24 घंटे अखंड नवकार मंत्र जाप का संकल्प लिया। धर्मपरायणा श्रीमती पांचा देवी बोथरा, गुवाहाटी के देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। उदासर, भीम संघ ने गुरुचरणों में विनती प्रस्तुत की। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की 5 गाथाएँ कंठस्थ करने का नियम कई भाई–बहनों ने लिया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से 28 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री नेहा जी डोसी** सुपुत्री निर्मला देवी महेंद्र जी डोसी (डौंडीलोहारा, छत्तीसगढ़), 26 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री साक्षी जी भंसाली** सुपुत्री लीला देवी राजेंद्र जी भंसाली (डौंडीलोहारा, छत्तीसगढ़) की जैन भागवती दीक्षा **4 जून, 2025** को **बीकानेर** के लिए स्वीकृत हुई। **'जयवंता, जयवंता'** गीत से एवं **'राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाट है'** जैसे गगनभेदी जयघोषों से पूरा माहौल गूँज रहा था।

## धर्म तत्व को समझने वाले बहुत कम हैं

**15 मार्च 2025, समता भवन, नोखागाँव।** सुबह की मधुरम बेला में प्रभु एवं गुरुभक्ति में समर्पित प्रार्थना गीतों से संपूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। उपस्थित गुरुभक्तों ने सामूहिक रूप से प्रार्थना कर अपना जीवन धन्य बनाया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**धर्म का अधिकारी कौन? धर्म की आराधना करने वाला। जिसमें विवेक है वो धर्म का अधिकारी है। धर्म तत्व को समझने वाले कम होते हैं। भगवान महावीर की सभा में कई लोग उत्सुकतावश उपस्थित होते थे। तत्व रुचि रखने वाले बहुत कम लोग होते थे। आत्मा एवं शरीर की भिन्नता का बोध होना चाहिए। धर्म की गाइड लाइन क्या है? क्रोध, मान, माया और लोभ नहीं करना। सचित्त व अचित्त का विवेक होना। हमारे विचारों में झगड़ालु भाव नहीं होने चाहिए। ईमानदारी व आत्मभावों से विवेक का पालन करने वाला धर्म का अधिकारी बन सकता है। विवेक जड़ और चेतन को विकसित करने में है। धर्म किसे सुनाना? सोये हुए को या जगे हुए को? धर्म सुनाना सोए हुए को ताकि वो जाग सके और धर्म से जुड़े। मोह को हटाने से आत्मा का कल्याण होगा।**''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संकल्प–विकल्प में जो लगा रहता है वह संयम का पालन नहीं कर सकता। मोक्ष का लक्ष्य हमेशा स्मृति में रहे। साधु जीवन, संयमी जीवन में मैं सहायक बनूं, अपने ज्ञान, दर्शन, चारित्र में निरंतर वृद्धि करूं, ऐसा प्रयास हमारा होना चाहिए। अंत में 'जीया कब तक उलझेगा संकल्प–विकल्पों में' गीत

प्रस्तुत कर सबको आत्मविभोर कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। परम गुरुभक्त गुलाब जी बांठिया, कोटा के निधन पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। नोखागाँव संघ मंत्री गंगाराम जी लुणावत, किशनलाल जी कांकरिया, नोखा, सुशील जी बैद, बीकानेर राजेन्द्र जी बैद, नागपुर ने 75, गौतम जी बोथरा, दुर्ग ने 72, भीखमचंद जी बोथरा, अलाय, विनयराज जी लुणावत, प्रवीण जी पुगलिया, भीनासर, महेन्द्र जी सोनावत, गंगाशहर-भीनासर, विजयराज जी लुणावत ने 70, इंदरचंद जी लुणावत ने 65 वर्ष की आयु में व्यापार से निवृत्ति लेने का संकल्प आचार्य भगवन् के मुखारविंद से ग्रहण किया।

प्रतिदिन दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा एवं जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक आयोजनों में हजारों गुरुभक्तों ने उपस्थित होकर अपनी जिज्ञासाओं का आगमसम्मत सटीक समाधान प्राप्त कर हर्षानुभूति की। धर्मनगरी नोखागाँव रामराज के रंग में रंगा हुआ है।

## तपस्या सूची

| | |
|---|---|
| **संत-सती वर्ग** | |
| श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. | तेला तप |
| **श्रावक-श्राविका वर्ग** | |
| **आजीवन शीलव्रत** | मेघराज जी पार्वती देवी संचेती-नोखामंडी, राजेश कुमार जी-सरिता देवी सुराणा-नोखा, रतनलाल जी-कंचन देवी चौपड़ा-जोरावरपुरा, भूरचंद जी, नथमल जी बैद, विजयसिंह जी-कृष्णा देवी राजपूत, अशोक जी सुषमा देवी गांधी-मुम्बई, शांतिलाल जी बोहरा-सिलोड़, रतनलाल जी शीला देवी डूंगरवाल-भीलवाड़ा, पन्नालाल जी दाधीच, गौतम जी बोथरा, सरपंच पुरखाराम जी मेघवाल, विजय कुमार जी धन्नी देवी लूणावत, सुभाष जी सरोज देवी लूणावत, विजय जी बोथरा-बीकानेर, ज्ञानचंद जी जैन-हनुमानगढ़, रामेश्वरलाल जी जैन-गोलूवाला |
| **गाथा का स्वाध्याय** | **सवा लाख (1100 सामायिक सहित) -** बसंती देवी कांकरिया-नोखा, तारा देवी रथ (ओड़िशा)<br>**एक लाख -** चंपावती जी मांडोत-रतलाम |
| **उपवास** | **31 -** सुंदर बाई संचेती-नोखा<br>**36 -** प्रेरणा देवी संचेती<br>**9 -** सुश्री भंवरी जी संचेती |
| **संवर** | **200 -** ऊषा जी बोगावत-पांडरकवड़ा |
| **णमोत्थु णं** | **वर्ष में 2000 -** सुशीला देवी बोथरा (1100 सामायिक एवं 2000 लोगस्स भी) |
| **एकासना** | **38 -** झमकु देवी बोथरा (गतिमान) |

**-महेश नाहटा**

# गुरुचरणों में गुरुभक्ति का अर्घ्य

**नोखा में दिनांक 7-8-9 फरवरी को सम्पन्न महत्तम शिखर महोत्सव के अवसर पर चतुर्विध संघ ने अहोभाव व्यक्त कर अपनी गुरु समर्पणा का परिचय दिया था, उन्हें संक्षिप्त रूप से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।**

## अभिरामम् - अभिरामम्

अभिरामम् अभिरामम् राम गुरुवर अभिरामम्
बोलो अभिरामम् अभिरामम् राम गुरुवर अभिरामम्
गवरा नंदन अभिरामम्, नेमिनंदन अभिरामम्,
भूरा कुल चंदन अभिरामम्, देशनोक भी अभिरामम्,
सौम्य सूरत अभिरामम्, मुखमंडल चमके अभिरामम्,
सौम्य सुषमा अभिरामम्, चेहरा चमके अभिरामम्।
वाणी बरसे अभिरामम्, प्रवचन पीयूष अभिरामम्,
साधुमार्गी सरताज अभिरामम्, जिनशासन ज्योति अभिरामम्।।

- संकलित

## गुरुवचनों में है सच्चाई

कृपा गुरुवर की हुई है मुझ पर, तब ही मैं चढ़ पाया चढ़ाई।
गुरुवर आपके वचनों में है आगमसम्मत दिव्य सच्चाई।।
शास्त्र ज्ञान पाया बहुश्रुत जी से, मन में तप ने ली अंगड़ाई।
भीतर में प्रकाश भर गया, विनय तरंगें उठती आई।।
गुरुवर आपके वचनों में है आगमसम्मत दिव्य सच्चाई...

- संकलित

## सौ टंच खरा सोना है मेरे गुरुदेव

आचार्य श्री नानेश का विचरण थली प्रांत के सरदारशहर की तरफ हो रहा था। वैरागी राम गुरुदेव के सान्निध्य में विहाररत थे। आपकी क्रिया, निष्ठा एवं समर्पणा बेजोड़ थी। सरदारशहर के गणमान्य श्रावक ने वैरागी राम की परीक्षा लेने के लिए जेठ-आषाढ़ की भीषण गर्मी में उनसे कहा कि संयम की परीक्षा परीषहों से होती है। आप इस तेज धूप में रेत पर बिना हिले-डुले कब तक खड़े रह सकते हैं? और मुमुक्षु राम अपने संयम भावों को और दृढ़ करने हेतु उस भीषण धूप से तप्त रेत पर खड़े हो गए। वैरागी राम बिना हिले-डुले लगभग तीन घण्टे खड़े रहे। जब अन्य श्रावकों ने उनको हटने को कहा तभी मुमुक्षु राम वहाँ से हटे। आपकी ऐसी अडिगता ही आज शासन नायक के रूप में जिनशासन को दीप्तिमान कर रही है।

- रेखा नलवाया, बड़ीसादड़ी

राम चमकते भानु समाना

# विविध समाचार

## ✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

**प्रतापगढ़।** होली चातुर्मासिक पर्व के अवसर पर समता भवन में विशेष धर्माराधना हुई। इस अवसर पर आयंबिल 2, पौषध एवं दशमा पौषध, उपवास 17, एकासना 2, बियासना 1 आदि की आराधना हुई।

**- कमलेश मालू**

## ✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

**बीकानेर।** शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-12 सेठिया कोटड़ी में एवं पर्याय ज्येष्ठ साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-14 समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं।

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा दिवस पर 9 फरवरी को प्रवचन सभा में शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने भजन '**आया आया यह दीक्षा दिवस आया, आचार्यश्री जी रा गुण गावां**' प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य प्रवर की संयम यात्रा ज्ञान, क्रिया एवं महाव्रतों के शुद्ध पालन के साथ गतिमान है। आवश्यकता है कि हम सभी उनकी आज्ञा के अनुसार चलें।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरु के संयम का क्या कहना! जैसे रामायण में दशरथ का महत्व है वैसे ही नाना गुरु संघ व शासन को रत्न सौंपकर गए हैं। गुरु राम शासन की भव्य प्रभावना कर रहे हैं।

साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने '**सत्य संयम के साकार क्या गुण गाएँ**' गीत के साथ फरमाया कि आचार्य भगवन् आधि, व्याधि एवं उपधि से दूर अपनी आत्मा में स्थित हैं। आपश्री जी ने संयम के 50 वर्षों को गुणमय बनाया है। हम भी वैसा जीवन बनावें।

साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम सुनकर पाप और धर्म का मार्ग जानते हैं। जानने तक सीमित न रहें। सुनकर कल्याण के मार्ग पर चलें। दूसरों के अवगुण एवं बुराई आदि न देखें, न उनकी चर्चा करें। किसी को कठोर शब्द न बोलें। कैसी भी स्थिति हो मनोबल को कमजोर नहीं करें।

इंदौर में संथारा साधिका साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. के पंडितमरण का समाचार ज्ञात होने पर 26 फरवरी को चारित्रात्माओं के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने '**मरणो जाणनो...**' भजन के साथ साध्वीवर्या के विविध गुणों- बचपन से धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण, परिवार से पाँच सदस्य दीक्षित, जैन सिद्धांत रत्नाकर उत्तीर्ण, अद्भुत स्मरण शक्ति आदि का विवेचन फरमाया।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम जीवन की सम्यक् आराधना करते हुए अंतिम समय संलेखना संथारा आना बहुत बड़ी बात है। केवल गुणों का कीर्तन ही नहीं करें, उन्हें आचरण में भी उतारें। साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी जी सदैव मृदुभाषी रहे। संयम जीवन को दृढ़ता के साथ जीया। साध्वीश्री जी की माताजी ने अपने वर्षीतप पारणे पर नाना गुरु को 5 लड्डू बहराने के अभिप्राय को परिवार से

5 सदस्यों की दीक्षा से प्रमाणित कर दिया।

राष्ट्रीय महामंत्री, स्थानीय संघ मंत्री एवं स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गुणानुवाद किया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया। **- सुरेंद्र पारख**

**गंगाशहर-भीनासर।** शासन दीपक श्री राकेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-10 के पावन सान्निध्य में 2 मार्च को जैन जवाहर विद्यापीठ में आचार्य श्री रामेश युवाचार्य दिवस, श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का उपाध्याय पदारोहण दिवस एवं स्मृतिशेष आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. का युवाचार्य चादर प्रदान दिवस अपूर्व धर्मोद्योत के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा के प्रारंभ में श्री रामनंदन मुनि जी म.सा. ने गीतिका के माध्यम से पंचम गति को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि स्वाध्याय करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। जीवन में पुरुषार्थ एवं धैर्य जैसे गुणों को लेकर चलना चाहिए।

श्री राकेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कैसी भी परिस्थिति हो दबाव में आकर निर्णय नहीं करना चाहिए। जो सम्यक् प्रकार के निर्णय करेगा, वह जीवन की हर ऊँचाई को प्राप्त करेगा। आचार्य श्री नानेश ने बिना किसी दबाव के उत्तराधिकारी के रूप में योग्य युवाचार्य का चयन किया, वे आज आचार्य श्री रामेश के रूप में शासन की प्रभावना कर रहे हैं। इस अवसर पर अनेक भाई-बहनों ने उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप किये।

श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल द्वारा महत्तम महोत्सव के अंतर्गत तप-त्याग करने वाली बहनों का 8 मार्च को अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बालिका मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं बहूमंडल द्वारा स्वागत गीत से हुआ। कार्यक्रम में मुमुक्षु बहन सुश्री प्रियंका जी सेठिया का अभिनंदन किया गया। बहूमंडल की बहनों ने नाटिका द्वारा मुमुक्षु बहन का स्वागत किया। मुमुक्षु बहन ने संयमी जीवन पर भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित गणमान्यजनों द्वारा '**राम धुन की सरगम**' पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, जवाहर विद्यापीठ अध्यक्ष-मंत्री, स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्री, भाजपा जिलाध्यक्ष सुमन जी छाजेड़, महिला मंडल एवं बहूमंडल की वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों सहित अनेक विशिष्ट महानुभावों व सदस्यों की उपस्थिति रही।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व धर्म-ध्यान, तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री जयेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि एक भव खुद के लिए जीएँ अर्थात् अब बचा हुआ जीवन खुद के लिए जीएँ।

शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा., साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा. ने प्रेरणादायक उपदेश फरमाया।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जहाँ आवश्यक हो वहाँ गुप्तदान देना चाहिए। जहाँ दूसरों को प्रेरणा मिलती हो वहाँ प्रकट में दान देना चाहिए। जीवन में पुरुषार्थ करना जरूरी है। भाग्य के भरोसे न बैठकर पुरुषार्थी बनना चाहिए।

इस अवसर पर सामायिक के 2 धर्मचक्र हुए। स्थानीय संघ मंत्री ने अक्षय संयम महोत्सव 2025 की तैयारी हेतु प्रेरणा दी।

इंदौर में साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. एवं उदयपुर में साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर गुणानुवाद करते हुए आपश्री के शीघ्रातिशीघ्र मोक्षगामी बनने की भावना व्यक्त की गई। सभी ने सामूहिक 4-4 लोगस्स का ध्यान किया।

**- चंचल कुमार बोथरा, प्रमिला देवी बोथरा**

## ✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

**ब्यावर।** उदयपुर में विराजित संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के पंडितमरण के समाचार ज्ञात होने पर आयोजित गुणानुवाद सभा में श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें संथारा साधिका जी के गुणों को ध्यान में रखकर जीवन जीना है।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जीवन क्षणभर का है। उम्र घटती जा रही है और हम भटकते जा रहे है। चारों तरफ अधंकार ही अंधकार छाया हुआ है। इसे तीर्थंकरों की वाणी से दूर किया जा सकता।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा जीवन अनित्य है। मनुष्य जन्म से कौनसी गति मिलेगी यह हमारे पर निर्भर है। साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. ने संथारे से अपना अंतिम समय साधना में समर्पित कर दिया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भी गद्य-पद्य में गुणानुवाद किया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

पर्याय ज्येष्ठ श्री अनन्त मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में आचार्य श्री रामेश का युवाचार्य पदारोहण एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का उपाध्याय पदारोहण दिवस श्रुतभक्ति दिवस के रूप में त्याग, तप, संवर, पौषध, एकासन के रूप में मनाया गया।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत '**गुरु राम, गुरु राम, तू ही है गुरु नाना का राम**' प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य श्री रामेश व उपाध्याय प्रवर को पहचान पाना मुश्किल है। उपाध्याय प्रवर जंगल के फूल के समान हैं, जो अकेले होते हुए भी चारों तरफ खूशबू देते हैं। हमें नाना गुरु के राम एवं राजेश मुनि जी से प्रेरणा लेनी चाहिए।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने '**हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी, युग युग जीओ मेरे गुरु रामलाल जी**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आज का विशिष्ट दिवस श्रुतभक्ति दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के इतिहास में पहली बार श्री राजेश मुनि जी म.सा. को उपाध्याय प्रवर पद की चादर ओढ़ाई गई।

**- नोरतमल बाबेल**

## ✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

**खोर (जावद)।** शासन दीपिका साध्वी श्री चारित्रप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सुसान्निध्य में श्रुतभक्ति दिवस धर्मोल्लास के साथ 2 मार्च को मनाया गया। समता शाखा पश्चात् प्रवचन सभा में साध्वीवर्या जी ने नौ आचार्यों एवं उपाध्याय प्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए '**भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली, जो गुरु पाए राम से**' गीत के साथ फरमाया कि हमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करते हुए इस छोटी-सी जिंदगी में राग-द्वेष से बचना चाहिए। यहाँ साधुमार्गी सम्प्रदाय के केवल 5 घर होने पर भी सामूहिक एकासन में 18 एकासन, 51 सामायिक एवं 2 संवर आदि तप हुए। प्रतिदिन दोपहर में शास्त्रवाचन हुआ।

द्वितीय दिवस साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. के पंडितमरण के समाचार ज्ञात होने पर गुणानुवाद सभा में साध्वी श्री सरोज श्री जी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। देवता भी इसके लिए तरसते हैं। हमें पंडितमरण प्राप्त हो, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

**- विनोद कुमार गांग**

## ✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

**हिंगणघाट।** शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का गोलछा परिसर में मंगलमय पदार्पण हुआ। आपश्री जी के पावन सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व धर्मोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयंबिल 1, सामायिक पचरंगी 166, उपवास 5 एवं एकासना 11 आदि तपस्याएँ सम्पन्न हुई। प्रातः प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा आदि का ठाट लग गया।

**- कनकमल ओस्तवाल**

# SPF सफरनामा

# सेवा और अध्यात्म की अनूठी यात्रा

प्रिय सदस्यों,

SPF (साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम) की यात्रा सेवा और आध्यात्मिकता की दिशा में निरंतर बढ़ते रहने की कहानी है। हमारे प्रयास, उपलब्धियाँ और समर्पण संघ के सभी सदस्यों तक पहुँचाने के लिए आइए इस सफर को साझा करें!

## यात्रा का संक्षिप्त विवरण

**2019 –** जोधपुर चातुर्मास में एसपीएफ का पहला प्रस्ताव

**2020–22 –**
- एसपीएफ की वेबसाइट एवं मोबाइल एप्प लॉन्च (under maintenance, will be live soon) एडवाइजरी बोर्ड के मार्गदर्शन में कोर कमेटी का गठन

**2022 –**
- एसपीएफ कनेक्ट का उदयपुर में सफल आयोजन

**2023 –**
- E&Square : Enlightenment & Enrichment - दो दिवसीय व्यक्तित्व विकास एवं आध्यात्मिक संगोष्ठी

**2023 (अप्रैल) –** कई प्रभावशाली सत्र :
- Time Management
- Magical
- व्यावसायिक जीवन में क्षमापना
- करियर काउंसलिंग
- मनी लॉन्ड्रिंग, PMLA और ITA पर सत्र

**2024 –**
- I Cube : Innovate, Illuminate, Inspire
- भीलवाड़ा में 2 दिवसीय माइंडफुल इंडिपेंडेंस कार्यक्रम
- भीलवाड़ा में एसपीएफ स्टॉल
- हर घर एसपीएफ – एसपीएफ परिवार का विस्तार
- नए एसपीएफ सदस्यों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम
- नई कोर कमेटी और अंचल संयोजकों का गठन

**2024–2025 :**

**दिसंबर 2024 -** एसपीएफ स्टॉल और वक्ता महत्तम सोमनस आंचलिक कार्यक्रम में –

**50 दिन -** 50 व्यसनमुक्ति अभियान – नशामुक्त समाज की ओर एक कदम

**एसपीएफ स्टॉल - नोखा**

आइए इस सफर को आगे बढ़ाएँ - संघ हृदय में और सेवा भावना से!

**- टीम एसपीएफ**

# विविध भेंट मार्फत

## 01 फरवरी से 28 फरवरी 2025 तक

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

**संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)**

39,68,000/- कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम
2,20,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर

**संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)**

70,000/- स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी परिवार, उदयपुर

**महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)**

19,00,000/- विमल जी सिपानी, बेंगलुरु
10,00,000/- रिद्धकरण जी सिपानी, बेंगलुरु
5,00,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर
5,00,000/- विनोद कुमार जी एवं दिनेश कुमार जी श्रीश्रीमाल, वडोदरा/ब्यावर
1,00,000/- दिलीप जी चोरड़िया, दिल्ली
71,000/- खेतमल जी श्रीश्रीमाल, बालोद
61,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, रामपुरहाट
51,000/- अशोक कुमार जी विनोद कुमार जी डागा गंगाशहर/कोलकाता
5,100/- भंवरी देवी सेठिया, कोलकाता
1,100/- गुप्तदान, दिल्ली
1,000/- दिलीप जी चोरड़िया दिल्ली

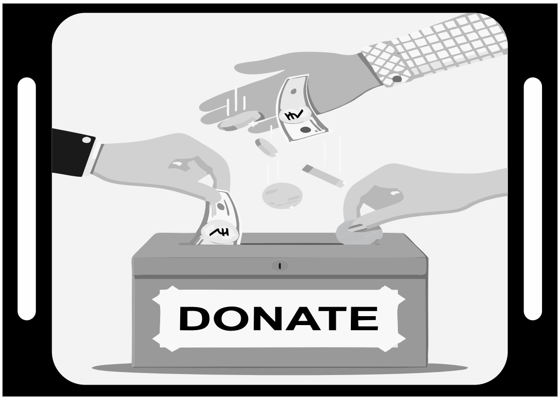


**समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)**

**समता भवन, रावतसर**

51,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, संगरिया

**विहार सेवा संयोजन सदस्यता**

1,00,000/- शांति देवी, कविंद्र जी, संतोष जी छाजेड़, बीकानेर/दिल्ली

**दानपेटी योजना**

16,000/- प्रेमचंद जी व्होरा, बदनावर
12,500/- महावीर कुमार जी कोठारी, होलेनरसीपुर
11,340/- बसंतीलाल जी नागिन जी नांदेचा (प्राचीश्री जी परिवार), बदनावर
9,000/- राजेश कुमार जी बोहरा, कुशलनगर
6,000/- रमेशचंद जी छाजेड़, काकोड़
5,921/- अनिल जी लूणिया, बदनावर
5,700/- हीरालाल जी श्रीश्रीमाल, बदनावर
5,500/- प्रेमचंद जी शैलेंद्र जी कोठारी, बदनावर
5,100/- कैलाशचंद जी दक, कुशलनगर
5,100/- सुशील जी वैभव जी टंच, बदनावर
4,820/- नितेश जी बोहरा (गोलू भैया), बदनावर
4,500/- सुमित कुमार जी बुरड़, बेंगलुरु
4,100/- विशांत जी सिद्धार्थ जी कोटड़िया, शहादा
4,030/- दिलीप जी ओरा, नागदा
3,600/- निर्मल कुमार जी चपलोत, नागदा
3,500/- समता महिला मंडल, सैंथिया
3,330/- संदीप जी कांठेड़, नागदा

3,000/– महेंद्र कुमार जी छाजेड़, काकोड़
2,600/– सुरेश जी दुग्गड़, कपासन
2,480/– विजय जी बाफना, बदनावर
2,150/– अनिल जी ओरा, नागदा

**2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** अशोक जी चंडालिया, कपासन, सुरेश जी जितेंद्र जी नागावत, कुशलनगर, अशोक जी कोठारी, होलेनरसीपुर, लोकेश जी कोठारी, होलेनरसीपुर, महावीर जी देसरला, पांडवपुरा, रोशनलाल जी नंदावत, श्रीरंगपट्टनम्, विजय जी संघवी, नागदा, हीरालाल जी गांधी, पेटलावद, कमला बाई तेजमल जी मेहता, पेटलावद

2,070/– रवि जी संघवी, नागदा
2,020/– जवाहरलाल जी वोहरा, नागदा
1,950/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, कठियार
1,860/– दीपक जी आनंदीलाल जी मांडोत, करवड़
1,800/– सुरेशचंद जी बंबकी, केआर पेठ
1,710/– मनीष जी चपलोत, नागदा
1,700/– छगनलाल जी सिपानी, दिल्ली

**1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** मनोज कुमार जी पुगलिया, हावड़ा, गुप्तदान, कपासन, समता भवन कपासन, कन्हैयालाल जी श्रीमाल, चामराजनगर, पारस बाई चोरड़िया, अछोली

1,400/– प्रतापचंद जी मूथा, वापी
1,300/– किशोर जी जैन, नागदा
1,270/– प्रकाश जी संदीप जी कोठारी, बदनावर
1,230/– महेश जी दीपेश जी शाहजी, थांदला
1,200/– गौतम जी गोलछा, हावड़ा
1,170/– मुकेश जी सागरमल जी चौधरी, थांदला

**1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** सुभाष जी गौरव जी वीर जी चोरड़िया, हावड़ा, लीलमचंद जी बोथरा, हावड़ा, शिखरचंद जी हीरावत, हावड़ा, प्रभुलाल जी बाघमार, कपासन, कन्हैयालाल जी सिरोया, कपासन, महेंद्र जी नितेश जी भंसाली, बेंगलुरु, अरुण जी नागौरी, बेंगलूरु, किरण कुमार जी श्रीमाल, चामराजनगर, संजय जी श्रीमाल, चामराजनगर, अशोक जी बोहरा, प्रियपटना, परेश जी बोहरा, प्रियपटना, शांतिलाल जी बोहरा, कुशलनगर, गौतमचंद जी ख्यालीलाल जी बोहरा, कुशलनगर, रतनलाल जी राजेंद्र जी डागा, कडूर, लालचंद जी डागा, कडूर, पवन जी पितलिया, चन्नरायपट्टना, संजय जी दक, चन्नरायपट्टना, अशोक जी देसरला, चन्नरायपट्टना, सुनील जी बम्बकी, केआर पेठ, राहुल जी रोहित जी गन्ना, केआर पेठ, मदनलाल जी गन्ना, होलेनरसीपुर, अभय जी कोठारी, होलेनरसीपुर, मनीष जी गांधी, होलेनरसीपुर, कुशवंतलाल जी पोरवाल, पांडवपुरा, गौतम जी पितलिया, पांडवपुरा, जम्बू कुमार जी जारोली, पांडवपुरा, महेश जी पितलिया, पांडवपुरा, विजय जी पोरवाल, श्रीरंगपटना, चंदनमल जी सिंघवी, नागदा, विनोद जी जैन, नागदा, दिनेश जी ओरा, नागदा, चन्द्रशेखर जी जैन, नागदा, राजेंद्र जी अक्षय जी भड़कतिया, बदनावर, प्रकाश जी प्रवेश जी श्रीश्रीमाल, बदनावर, किरण जी मूथा, वापी, डूंगरमल जी हिंगड़, वापी, जम्बू कुमार जी मूथा, वापी, जगदीश जी चंडालिया, वापी, वैभव जी मूथा, वापी

1,070/– कमल जी लवनीश जी पोखरना, बदनावर
1,044/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागदा
1,020/– रवि जी सुनील जी पंवार, बदनावर
1,010/– कांतिलाल जी मयूर जी चोरड़िया, बदनावर

**1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** सुरेश जी दुगड़, हावड़ा, रवीन्द्र जी सेठिया, हावड़ा, सुरजीत जी चंडालिया, कपासन, राजेंद्र जी पोखरना, कपासन, रिकेश जी पंवार, बदनावर, अशोक जी इंद्रप्रकाश जी खाब्या, जेठाणा

750/– राजू जी सिरोया, कपासन
750/– शांतिलाल जी बाफना, अछोली
700/– रमेश कुमार जी गन्ना, चन्नरायपट्टना
700/– नवरतन जी तलेसरा, वापी
700/– कुलदीप जी मूथा, वापी
700/– पुष्पराज जी तलेसरा, वापी
600/– मदनलाल जी चण्डालिया, कपासन
600/– अनिल जी पोखरना, कपासन
600/– प्रवीण कुमार जी तलेसरा, वापी
551/– दीपक जी प्रकाशचंद जी शाहजी, थांदला

515/– विजय जी रतनलाल कटकानी, पेटलावद
510/– संजय कुमार जी कोठारी, प्रियपटना

**500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** गुप्तदान, हावड़ा, संग्राम सिंह जी सोनी, बेंगलुरु, लक्ष्मीलाल जी नागावत, कुशलनगर, भंवरलाल जी संचेती, कडूर, गुप्तदान, कडूर, भगवतीलाल जी पुनित जी गन्ना, चन्नरायपट्टना, सुरेश जी, नागदा, मनोज जी कोठारी, नागदा, हेमन्त जी संघवी, नागदा, विशाल जी लुणिया, जेठाणा, गौतमचंद जी नाहर, जेठाना, शांतिलाल जी बैद, बनमनखी, हरखचंद जी गोलेछा, काकोड़, विकास जी तलेसरा, वापी, राजेंद्र जी गोलेछा, काकोड़, अनिल जी सोहिल जी शाहजी, थांदला, राजेश जी सतीश जी कवाड़, थांदला, अशोक जी बाफना, अछोली, दुलीचंद जी बाफना, अछोली, हीराचंद जी राखेचा, अछोली, **कपासन से–** कालूलाल जी सांखला, मनोहरलाल जी चंडालिया, मदनलाल जी दुगड़, संतोष जी चंडालिया, गोरधनलाल जी चंडालिया, शांतिलाल जी मारवाड़ी, भैरूलाल जी सिरोया, छीतरमल जी चंडालिया, ललित जी कोठारी, लोकेश जी बाघमार, भगवतीलाल जी चंडालिया, उत्तम चंद जी चंडालिया

## इदं न मम

1,11,000/– उत्तमचंद जी कोठारी, बेंगलुरु
42,000/– सुभाष जी छाजेड़, दुर्ग
40,000/– सुनीता जी मनोज जी संचेती, बेलगाम
33,000/– पारसमल जी अशोक जी चिप्पड़, प्रतापगढ़
27,000/– अशोक कुमार जी मोगरा, नीमच
22,000/– खेमचंद जी छाजेड़, धमधा
15,000/– नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज
11,001/– ज्ञानचंद जी रांका, जयपुर
11,000/– राजेंद्र जी चंडालिया एवं परिवार, उदयपुर
11,000/– कमलचंद जी बच्छावत, कोलकाता
11,000/– श्यामलाल जी डागा, कोलकाता
11,000/– प्रकाशचंद जी भंडारी, चेन्नई
11,000/– कृष जी मेहता, इंदौर
11,000/– सुरेश चंद जी सिंघवी, गंगापुर
11,000/– राज मेडिकोज, बीकानेर
10,200/– नारायण चंद जी पींचा, दिल्ली
10,000/– लीला देवी चपलोत, उदयपुर
7,100/– अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरदिया, अहमदाबाद
6,000/– कैलाशचंद जी कोठारी, गंगापुर
5,100/– महावीर कुमार जी बैद, हावड़ा
5,100/– विशांत जी सिद्धार्थ जी कोटड़िया, शहादा
5,100/– ललित जी पारख, राजनांदगाँव
5,100/– अरुण कुमार जी पारख, बालोतरा
5,100/– लीला बाई सोनी, बिरमावल
5,000/– पन्नालाल जी सामसुखा, बंगईगाँव
5,000/– सुरेशचंद जी खिंवसरा, चेन्नई
5,000/– मनोहरलाल जी खिंदावत, पिपलियामंडी
3,110/– गुप्तदान, जगदलपुर
3,100/– चांदमल जी बाघमार, कपासन
3,100/– अभयराज जी बच्छावत, करीमगंज
3,100/– नवल सिंह जी मोदी, चित्तौड़गढ़
3,000/– श्रेणिकराज जी श्रीश्रीमाल, बिरमावल
2,200/– पारसमल जी पीपाड़ा, बिरमावल
2,200/– अशोक जी श्री श्रीमाल, बिरमावल
2,200/– प्रकाश जी पीपाड़ा, बिरमावल
2,200/– श्रेणिक कुमार जी पीपाड़ा, बिरमावल
2,100/– लक्ष्मीलाल जी माधवलाल जी छाजेड़, चिकारड़ा
2,100/– अशोक कुमार जी बोहरा, चिकारड़ा
2,100/– मांगीलाल जी बाँठिया, कानवन
2,100/– अरविन्द कुमार जी जैन, कोटा
2,100/– निरंजन जी श्री श्रीमाल, बिरमावल
2,000/– पवनकुमार जी जैन, गंगापुर
2,000/– महेंद्र जी पीपाड़ा, बिरमावल
1,121/– गुप्तदान, जगदलपुर
1,110/– गुप्तदान

**1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** दिनेश कुमार जी जैन, जयपुर, महावीर जी मधु जी खजांची, सूरत, भगवती देवी जैन, सवाई माधोपुर, रमेशचंद जी ज्ञानेंद्र जी जैन, सवाई माधोपुर, महावीर जी जैन, जयपुर, विमलचंद

जी पंवार, कानवन, शांतिलाल जी बैद, बनमनखी, विकास जी माणकलाल जी रांका, उदयपुर, गजेन्द्र जी सहलोत, उदयपुर, अरविन्द जी बैद, दिल्ली, वीरेंद्र जी पीपाड़ा, बिरमावल, मोनिका जी जैन, संगरिया, चंदन जी जैन, संगरिया, सरोज जी लोढ़ा, संगरिया, कमलेश जी जैन, संगरिया, सीमा जी जैन, संगरिया

1,000/– सोनराज जी बांठिया, दुर्ग

555/– कमला बाई पुखराज जी चौपड़ा, सेलम्बा

**500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, नरेन्द्र जी जैन, बजरिया, कमला देवी लादूलाल जी जैन, बजरिया, गुप्तदान, दिल्ली, नाथूलाल जी जारोली, निम्बाहेड़ा

### जीवदया

50,000/– ललित धनराज चोरड़िया, राहुरी फैक्ट्री (गुरुदेव के 50वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में)

11,000/– पीयूष कुमार जी सतीश कुमार जी बरड़िया, अमरावती

5,000/– गुप्तदान, अहमदाबाद

4,500/– कुसुम देवी लोढ़ा, बीकानेर (श्री ललित कुमार लोढ़ा की पुण्यस्मृति में)

3,000/– गुप्तदान, रावटी

2,100/– पारसमल जी छल्लाणी, सोनाली बाजार

2,100/– कानमल जी डालचंद जी सतीश जी चोरड़िया, दाढ़ी

2,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, वापी

2,100/– दिलीप जी बाफना, बेल्लारी/नोखा

2,100/– ओमप्रकाश जी बोथरा, गंगाशहर/सूरत

2,000/– पारसमल जी जैन, खरियार रोड

1,500/– अहान जी पीयूष जी सरिता जी मांडोत, पुणे

1,500/– आशा देवी हजारीमल जी बरड़िया, गुड़ी

1,111/– हर्ष जी जैन, ब्यावर

1,110/– गुप्तदान

**1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** राजेंद्र कुमार जी बम्ब, हावड़ा, अनीश जी नाहर, हावड़ा, हनुमानमल जी पानमल जी सुराणा, गंगाशहर, गुप्तदान, संगरिया, कमल जी गुलगुलिया, गंगाशहर, सौ. रेखा जी दिलीप कुमार जी कोटड़िया, शहादा (शिवानी–जीनेश कुमार जी कोटडिया, पूना के पुत्र (चि.तोष) के जन्मोत्सव पर)

1,000/– गुप्तदान

700/– गुप्तदान, हावड़ा

700/– अक्षय कुमार जी जैन, जयपुर

**500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–** भंवरी देवी सरला देवी गोलछा, विराटनगर, महेंद्र जी बोथरा, गंगाशहर, सुरेशचंद जी जैन, सवाई माधोपुर, मोहनलाल जी जैन, जयपुर, रुक्मणि जी कैलाशचंद जी जैन, सवाई माधोपुर, गुप्तदान

### साहित्य प्रकाशन

2,100/– सूरज देवी कांकरिया, पीलीबंगा

### समता संस्कार पाठशाला

500/– गुप्तदान

### समता सरिता सेवा निधि (विहार सेवा)

21,000/– कन्हैयालाल जी जारोली, देवगढ़

11,000/– पीयूष कुमार जी सतीश कुमार जी बरड़िया, अमरावती

1,000/– अंजलि जी जैन, ब्यावर

1,000/– गुप्तदान, रावटी

500/– ओमप्रकाश जी बोथरा, सूरत (गुरुदेव के 50वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में)

### समता साहित्य स्टाल अनुदान

51,000/– रिखबचंद जी बैद, दिल्ली

21,000/– कोठारी परिवार, बैंगलोर (संथारा साधिका साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा. के पंडितमरण एवं मुमुक्षु चाहत जी कोठारी की दीक्षा के उपलक्ष में)

7,200/– गुप्तदान

5,000/– विजय कुमार जी टंच, बदनावर

5,000/– सुशील जी गोरेचा, रतलाम

### श्रमणोपासक भेंट

5,100/– सुनील जी चोरड़िया, तिरुपुर (गृहप्रवेश पर)

5,100/– अशोक कुमार जी पारख, राजनांदगाँव (राशि पारख के विवाह के उपलक्ष्य में)

5,100/- शांतिलाल जी मुकुंद जी अनिल जी ढाणी, डूंगला (शेषमल जी ढाणी की पुण्यस्मृति में)

3,100/- जयप्रकाश जी कोटड़िया, नंदुरबार (विरदी बाई नथमल जी कोटड़िया के जीवित एवं स्वर्ण सीढ़ी समारोह के उपलक्ष में)

2,100/- जेठमल जी मोहनलाल जी कोटड़िया, शहादा (प्रियंका जी सेहली जी के मासखमण, शैलेष जी के 9 व डॉ. प्रियंका जी के 8 की तपस्या के उपलक्ष में)

2,100/- उमेश जी राकेश जी जैन, सवाई माधोपुर (सलज एवं साल्वी के विवाहोपलक्ष्य में)

2,100/- महावीर प्रसाद जी जैन, अलीगढ़ (बिटु पुत्री निर्मल कुमार जी जैन, बामनवास संग निर्मल पुत्र रामधन जी जैन सोलतपुरा वाले, अलीगढ़ के शुभविवाह पर)

2,100/- मोहनलाल जी मुकेश कुमार जी चोरिया, सूरत (चि. आकाश संग ज्योति के विवाहोपलक्ष्य में)

2,100/- सूरजमल जी नाहर परिवार, छोटी सादड़ी (सौ. अंचल पुत्री आलोक जी नाहर संग निहाल पुत्र सुजीत जी मूथा, सतारा के शुभविवाह के उपलक्ष में)

1,100/- कमला देवी कोचर, कोलकाता (गृहप्रवेश पर)

1,100/- विनय जी लीलमचंद जी हीरावत, अहमदाबाद (सीए इंटर होने की खुशी में)

1,100/- पुष्पेंद्र जी जैन, जयपुर (हनी (नानेश) संग रानू के शुभविवाह के उपलक्ष में)

1,100/- सौ. रेखा जी दिलीप कुमार जी कोटड़िया, शहादा (शिवानी-जीनेश कुमार जी कोटडिया, पूना के पुत्र (चि.तोष) के जन्मोत्सव पर)

500/- पदमचंद जी राजेंद्र जी जैन, सवाई माधोपुर (अपने पिताजी की पुण्यस्मृति में)

### सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

11,000/- बिमल कुमार जी संचेती, विशाखापट्टनम्

5,000/- कैलाश जी बोहरा, बाड़मेर

1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी डागा, रायपुर

### समता छात्रवृत्ति (महिला समिति)

11,000/- पीयूष जी सतीश जी बरड़िया, अमरावती

2,100/- आदित्य कुमार जी बाँठिया, बाड़मेर

---

**:: विशेष ::**

श्रमणोपासक सदस्यता-70, महिला समिति सदस्यता-33, साहित्य सदस्यता-5

---

**::: 1 अप्रैल 2024 से 28 फरवरी 2025 तक :::**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

| *दिनांक* | *राशि* | *अन्य विवरण* |
|---|---|---|
| ***एस.बी.आई. बैंक*** | | |
| 02.04.24 | 1,100/- | UPI सिद्धार्थ |
| 04.04.24 | 500/- | नकद |
| 06.04.24 | 1,000/- | UPI आदित्य जैन |
| 12.04.24 | 501/- | UPI विपुल जैन |
| 19.04.24 | 1,100/- | UPI विकास |
| 19.04.24 | 1,000/- | NEFT अशोका रेजीडेंसी |
| 13.05.24 | 5,100/- | नकद |
| 14.05.24 | 1,100/- | UPI सिंपल |
| 14.05.24 | 800/- | UPI सचिन |
| 07.06.24 | 4,000/- | NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो |
| 10.06.24 | 21,000/- | By Trf. |
| 17.06.24 | 2,100/- | UPI पारसमल जैन |
| 19.06.24 | 2,960/- | UPI रचना |
| 19.06.24 | 1,920/- | UPI सुनीत विनोद |
| 01.07.24 | 3,133/- | IMPS |
| 01.08.24 | 3,133/- | UPI विमल कुमार |
| 16.08.24 | 2,100/- | TRF |
| 18.09.24 | 5,000/- | UPI निकुंज शाह |
| 20.09.24 | 9,000/- | UPI ऋषभ जैन |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 01.10.24 | 1,000/- | UPI आयुर्षी | 31.12.24 | 45,000/- | नकद तरुण कुमार |
| 04.10.24 | 30,000/- | Ch. 1218 DCB | 31.12.24 | 36,850/- | नकद तरुण कुमार |
| 04.10.24 | 2,500/- | नकद | 01.01.25 | 45,000/- | नकद |
| 20.10.24 | 1,500/- | UPI रानी जैन | 08.01.25 | 5,500/- | नकद |
| 23.10.24 | 2,000/- | UPI महावीर | 14.01.25 | 2,800/- | नकद |
| 02.11.24 | 2,000/- | UPI महावीर | 23.01.25 | 1,100/- | UPI राजेश |
| 02.11.24 | 2,100/- | UPI मनोज | 03.02.25 | 3,103/- | IMPS विमल कुमार |
| 01.12.24 | 5,100/- | IMPS शांता बाई प्रेमचंद | 07.02.25 | 1,750/- | Ch. 64584 |
| 02.12.24 | 1,945/- | UPI प्रतीक शाह | 23.02.25 | 5,100/- | IMPS नम्रता मनोज कुमार |
| 27.12.24 | 33,150/- | नकद तरुण कुमार | **ए.यू. बैंक** | | |
| 28.12.24 | 5,000/- | UPI नीलम जैन | 16.11.24 | 2,400/- | UPI शशांक जैन |

- **उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें।**
- **दिनांक 21-22 जुलाई, 2024 को भीलवाड़ा में संपन्न कार्यकारिणी बैठक में हुए निर्णयानुसार अब आगामी अंकों में न्यूनतम ₹1,100/- की राशि प्रदान करने वाले दानदाता का नाम ही प्रकाशित किया जाएगा।**

।। जय गुरु नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरु राम।।

# श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

**(अंतर्गत : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)**

**समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)**

**परीक्षा कार्यक्रम : जून 2025** **समय : दोपहर 12 से 4 बजे तक**

## प्रारंभिक व वैकल्पिक परीक्षाओं की समय सारिणी

| दिनांक | परीक्षा का नाम | प्रश्न पत्र |
|---|---|---|
| 06/06/2025 | जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | प्रथम |
| 08/06/2025 | जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | द्वितीय |
| 10/06/2025 | जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | तृतीय |
| 12/06/2025 | जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | चतुर्थ |
| 14/06/2025 | जैन सिद्धांत मनीषी, विशारद | पंचम |
| 16/06/2025 | जैन सिद्धांत मनीषी, विशारद | पष्ठम |
| 18/06/2025 | जैन आगम कंठस्थ - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | - |
| 19/06/2025 | जैन स्तोक - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | - |
| 20/06/2025 | राष्ट्र भाषा - भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | - |
| 21/06/2025 | जैन संस्कृत - प्राकृत भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद | - |

**नोट :-** 1. परीक्षार्थी सुविधानुसार परीक्षा केंद्र ले सकते हैं।

2. परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी अपना आवेदन समता भवन, बीकानेर कार्यालय में 5 मई, 2025 तक अनिवार्यत: जमा करावें।

3. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 7231933008

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

# भावभीनी श्रद्धांजलि

# स्मृतिशेष सुश्राविका किरण बाई देशलहरा

जीते जी सब कथाएँ बनती हैं,
जाने के बाद सभी गुणगान करते हैं।
लेकिन जिन्हें याद करके आँखें नम हों,
वे ही व्यक्तित्व महान होते हैं।।

**सुश्राविका किरण बाई देशलहरा** का जन्म कवर्धा निवासी सुश्रावक स्व. श्री चम्पालाल जी कात्रेला के घर-आँगन में स्व. श्रीमती तीजीबाई कात्रेला की कुक्षी से 14 अगस्त 1953 को हुआ। आपके माता-पिता द्वारा आपको संस्कारों की पुण्य धरोहर प्राप्त हुई। आपका विवाह 27 फरवरी 1969 को लगभग 16 वर्ष की आयु में सांकरा (महाराष्ट्र) निवासी सुश्रावक स्व. श्री हेमराजजी-श्रीमती बादामबाई देशलहरा के पुत्र श्री उत्तमचंदजी देशलहरा के साथ संपन्न हुआ। आपने वैवाहिक जीवन पूर्ण कर्तव्यता के साथ प्रारंभ किया। आपने दो पुत्रियों- सौ. नीलु-श्री संजय जी ओस्तवाल, भोपाल एवं सौ. नीतु-श्री नवरतन जी पारख, अहमदाबाद को जन्म दिया तथा द्वय संतानों को धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान की। आपके 4 दोहितियाँ भी हैं। सम्पूर्ण परिवार श्रीमती किरणबाई के मार्गदर्शन में संस्कारों से परिपूर्ण बना है। श्रीमती किरणबाई अपने जीवनकाल में अनेक तपस्याओं के साथ लगभग 40 वर्षों पूर्व आचार्य श्री नानालालजी म.सा. से आजीवन शीलव्रत, रात्रि भोजन त्याग तथा जमीकंद त्याग का आजीवन पच्चक्खाण ग्रहण कर अपने जीवन को धार्मिक प्रवृत्ति के साथ आगे बढ़ाया। आपके पति श्री उत्तमचंद जी रायपुर में व्यापारिक कार्य करते हैं। आपने अपने परिवार को एकसूत्र में बांधकर अच्छी शिक्षा व संस्कारों का पाथेय प्रदान किया है।

आप समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान शासन नायक परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट आस्थावान थीं, जिससे आपको परम गुरुभक्त, अद्भुत संघ समर्पिता के नाम से जाना जाता था। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. द्वारा आपको '**छत्तीसगढ़ की शेरनी**' के नाम से संबोधित किया गया था। आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप इतनी निडर और संघ समर्पित थी कि अगर किसी से भी शासन विरुद्ध कोई अवहेलना हो जाती तो उसके लिए सचेत करने में पीछे नहीं रहती थी। आपके परिवार से कई आत्माओं ने संयमी जीवन अंगीकार किया है।

ऐसी परम गुरुभक्त सुश्राविका श्रीमती किरण बाई जी का आकस्मिक स्वर्गवास शारीरिक अस्वस्था के चलते **4 दिसम्बर 2024** को रायपुर में समाधिपूर्वक हो गया। **आपकी देहदान की इच्छा के अनुरूप आपका पार्थिव शरीर रायपुर के एम्स हॉस्पिटल में संघ, समाज व परिवारजनों की साक्षी से दान किया गया, जो कि अपने आप में अभयदान का ही एक अनूठा उदाहरण है।**

# विनम्र श्रद्धांजलि



**गंगाशहर।** सुश्रावक भीखमचंद जी सुपुत्र स्व. श्री मुलतान चंद जी बोथरा का 8 जनवरी को निधन हो गया।

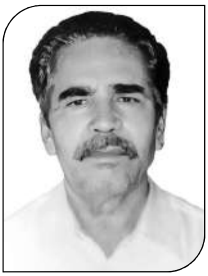

आप साध्वी श्री केसर कँवर जी म.सा. के सांसारिक भाणेज तथा साध्वी श्री सुपर श्री जी म.सा. के सांसारिक मामाजी थे। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अपूर्व निष्ठा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

**भीनासर।** सुश्रावक शेरमल जी सुपुत्र स्व. श्री पूनमचंद जी रामपुरिया का 26 जनवरी हो देहावसान हो गया। आप सरलता, सहजता, सौम्यता की मूर्ति थे। आचार्य भगवन् एवं चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा का लाभ लेने का लक्ष्य रखते थे। आपने आचार्य श्री नानेश से बचपन में ही शीलव्रत धारण कर लिया था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

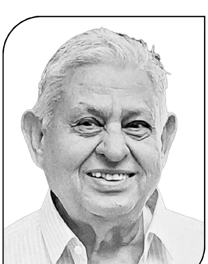

**कोटा/देशनोक।** सुश्रावक गुलाबचंद जी सुपुत्र स्व. श्री सौभागमल जी बांठिया का 15 फरवरी को 82 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपने जीवनकाल में चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते हुए अठाई, पाँच, तेला, उपवास सहित अनेक तप किये। प्रतिदिन 5 सामायिक करने का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

**जयपुर।** सुश्रावक मनोज कुमार जी सुपुत्र संघ महाप्रभावक सदस्य पुखराज जी मुकीम का 58 वर्ष की आयु में 18 फरवरी को देहावसान हो गया। सरलमना, उत्साही कार्यकर्ता मनोज कुमार जी ने अपने पिताजी के अध्यक्षीय कार्यकाल में जयपुर में सम्पन्न श्री मदन मुनि जी म.सा. के चातुर्मास में अभूतपूर्व सेवाएँ प्रदान की। आप कैंसर से पीड़ित थे और आपने पूर्ण समभाव के साथ इस रोग का मुकाबला किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

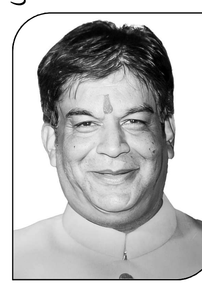

**पाँचू।** सुश्राविका बाधू देवी धर्मपत्नी स्व. श्री केशरीचंद जी बरड़िया, सूरत प्रवासी का 95 वर्ष की

आयु में सात दिवसीय चौविहार संथारे सहित 19 फरवरी को महाप्रयाण हो गया। आपने पूर्ण सजग अवस्था में साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. के मुखारविंद से 13 फरवरी को गंगाशहर में चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। सरल स्वभावी,

मृदुभाषी, मिलनसार, शीलव्रतधारी श्रीमती बाधू देवी की आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपके लगभग 75 वर्षों से रात्रिभोजन एवं सचित्त पानी का त्याग था। प्रतिदिन मौनपूर्वक सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

**कहादुल/शहादा।** सुश्रावक कंवरलाल जी सुपुत्र मोतीलाल जी लोढ़ा का 77 वर्ष की आयु में 20 फरवरी को निधन हो गया। आप सेतरावा के निवासी थे। प्रतिवर्ष आचार्य भगवन् के दर्शन करने का लक्ष्य रखते थे। आपके सांसारिक परिवार से साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. एवं साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. शासन की प्रभावना कर रही हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

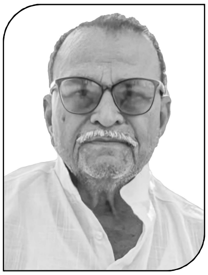

**शहादा।** सुश्रावक नरेंद्र जी सुपुत्र मूलचंद जी चोरड़िया का 23 फरवरी को 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय ममेरे भाई, साध्वी श्री रिद्धप्रभा जी म.सा. के संसारपक्षीय चचेरे भाई थे। आप चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

**गुवाहाटी।** सुश्राविका पांचा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री फुसराज जी बोथरा का 28 फरवरी को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपने 21 फरवरी को बेले की तपस्या में सागारी तिविहार एवं 26 फरवरी को चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान पांचा देवी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

**दिल्ली।** सुश्राविका चंद्रकला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमल जी बैद, गंगाशहर निवासी, दिल्ली प्रवासी का 79 वर्ष की आयु में 4 मार्च को निधन हो गया। आप हंसमुख, मिलनसार, धर्म भावना से ओत-प्रोत महिला थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

**भीनासर।** सुश्रावक लुणकरण जी सुपुत्र स्व. श्री हनुतमल जी सेठिया का 80 वर्ष की आयु में 11 मार्च को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अगाध श्रद्धा व समर्पणा थी। नवकार महामंत्र की विशेष भक्ति करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

**बड़ीसादड़ी।** सुश्रावक देहदानी अमृतलाल जी सुपुत्र स्व. श्री गेहरीलाल जी मेहता का गत दिनों 94 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने उदयपुर में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के श्री गणेश जैन छात्रावास मे प्रथम गृहपति के रूप में तथा जलगाँव एवं राजनांदगाँव सहित अनेक राज्यों की जैन संस्थाओं में अपनी सेवाएँ प्रदान की। मरणोपरांत आपकी पार्थिव देह मेडिकल कॉलेज को दान की गई। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

# राम गुरु शासन को चंदन की तरह महकाने वाली संथारा साधिका साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. का पंडितमरण

**इंदौर, 25 फरवरी 2025।** आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. का 25 फरवरी को दोपहर 12:55 बजे संथारा सहित पंडितमरण हो गया है। आपश्री जी की डोलयात्रा इसी दिन शाम 4 बजे यशवंत निवास रोड स्थित समता भवन से रामबाग मुक्तिधाम पहुँची। डोल यात्रा मार्ग के दोनों ओर हजारों श्रद्धालुओं ने संथारा साधिका जी के अंतिम दर्शन कर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। डोलयात्रा में सकल जैन समाज के पदाधिकारीगणों सहित सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने शामिल होकर अंतिम विदाई दी। मुक्तिधाम में सांसारिक परिजनों सहित संघ प्रमुखों ने साध्वीश्री जी की पार्थिव देह को मुखाग्नि दी। सकल जैन समाज के गणमान्यजनों ने भावाभिव्यक्ति में गुणानुवाद करते हुए भावसुमन अर्पित किये।

आप बड़ावदा निवासी आदर्श त्यागी श्री सौभाग्यमल जी म.सा. एवं साध्वी श्री सूरज कँवर जी म.सा. की संसारपक्षीय छोटी सुपुत्री एवं साध्वी श्री मंगला कँवर जी म.सा. व साध्वी श्री श्रीकांता जी म.सा. की संसारपक्षीय छोटी बहन थीं। आपने मात्र 12 वर्ष की अल्पायु में ही अपने माता-पिता एवं बहनों के साथ 31 अक्टूबर 1971 को ब्यावर में आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के मुखारविंद से दीक्षा ग्रहण कर 54 वर्ष के दीक्षा पर्याय में दृढ़ संयम का पालन किया। लगभग 30 वर्षों से आप दिन में केवल एक ही बार आहार-धोवन जल ग्रहण करती थीं।

अपूर्व सहनशीलता व धैर्यता के साथ आपका जीवन बहुत ही सरलता व संयम के प्रति सजगता एवं दृढ़ता से परिपूर्ण था। असहनीय वेदना में भी आप दर्शनार्थियों को मांगलिक, मुक्तक व प्रेरणास्पद धर्मसंदेश आदि फरमाते थे।

26 फरवरी को समता भवन में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वी श्री रंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री वैभवप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मुक्ता श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. आदि लगभग 11 चारित्रात्माओं ने ऐसी समत्व साधिका जी का गुणोत्कीर्तन करते हुए भावांजलि अर्पित की। परिवारजन एवं संघ के वरिष्ठगणों व पदाधिकारियों सहित सभी ने संथारा साधिका साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा. के संयमी जीवन का गुणानुवाद किया।

## संक्षिप्त परिचय

## साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा.

**सांसारिक नाम :**

सुश्री चंदनबाला जी सांड

**जन्मस्थान :**

बड़ावदा जिला रतलाम (म.प्र.)

**परिवार से दीक्षित :**

स्मृतिशेष श्री सौभाग्य मुनि जी म.सा. (सांसारिक पिता), स्मृतिशेष साध्वी श्री सूरज कँवर जी म.सा. (सांसारिक माता), स्मृतिशेष साध्वी श्री मंगला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री श्रीकांता जी म.सा. (सांसारिक बड़ी बहनें)

### पारिवारिक परिचय

**भाई :**

इन्द्रमल जी, सुरेन्द्र जी, श्रेणिक जी सांड

**सांसारिक पता :**

1. देवेन्द्र जी सांड, आयशर ट्रेक्टर एजेन्सी, पो. बड़ावदा जि. रतलाम-457227 (म.प्र.)
2. श्री एस.के. जैन, राजहंस, 1 माला, मलबारटिम, डूंगरसी रोड, तीन बत्ती, मुम्बई (महा.)

- तेजकुमार तातेड़

# संयम से प्रेम करने वाली संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. का 56 दिवसीय संथारे सहित महाप्रयाण

**उदयपुर, 2 मार्च 2025।** आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. का 56 दिवसीय संथारे सहित 2 मार्च को सायं लगभग 6.45 बजे पंडितमरण हो गया। आपकी डोलयात्रा 3 मार्च को प्रात: 9 बजे आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र से अशोक नगर मोक्षधाम के लिए रवाना हुई। सम्पूर्ण मार्ग राम गुरु एवं संथारा साधिका साध्वीश्री जी के जयकारों से गुँजायमान हो रहा था। मार्ग के दोनों ओर दर्शनार्थियों का हुजूम उमड़ पड़ा। डोलयात्रा में स्थानीय श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल सहित सकल जैन समाज के पदाधिकारियों व सदस्यों तथा पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही। अंतिम स्थल पर साध्वीश्री जी की पार्थिव देह को परिवारजनों एवं संघ पदाधिकारियों द्वारा मुखाग्नि दी गई।

अंत्येष्टि पश्चात् आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आयोजित गुणानुवाद सभा में चारित्रात्माओं सहित अनेक वक्ताओं ने गुणोत्कीर्तन करते हुए अपने भावसुमन अर्पित किये। संथारा काल में शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. एवं आपश्री के सान्निध्यवर्ती साध्वीवर्याओं की सेवा भावना अत्यंत ही सराहनीय व अनुमोदनीय रही।

ज्ञातव्य है कि संथारा साधिका साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. ने 76 वर्ष की आयु में 6 जनवरी को साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. के मुखारविंद से तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण करने के पश्चात् संयमी जीवन अंगीकार करने की भावना व्यक्त की। आपकी भावना को गुरुचरणों में अर्पित किया गया। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् की विशेष आज्ञा से 13 जनवरी 2025 को साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. ने आपश्री जी को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया।

## संक्षिप्त परिचय

### साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा.

**सांसारिक नाम :**
श्रीमती प्रेम देवी बडालमिया (उम्र : 76 वर्ष)

**जन्मस्थान :**
खोड़ीप जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)

**पारिवारिक परिचय**

**पति :**
स्व. श्री सोहनलाल जी बड़ालमिया

**सास-ससुर :**
स्व. श्रीमती झंकार देवी-स्व. श्री गहरीलाल जी बड़ालमिया

**माता-पिता :**
स्व. श्रीमती राज देवी-स्व. श्री जसुलाल जी सुराणा

**पुत्र-पुत्रवधू :**
सुभाष जी-सीमा जी, जितेंद्र जी-आभा जी बड़ालमिया

**पुत्री-दामाद :**
डॉ. नलिनी-विनोद जी लोढ़ा

**सांसारिक पता :**
सुभाष जी जितेंद्र जी बड़ालमिया
सुंदरवास, उदयपुर (राज.)

- अल्पेश धाकड़

चिंतन की कड़ियाँ

# हिंसा भाव परिहरें

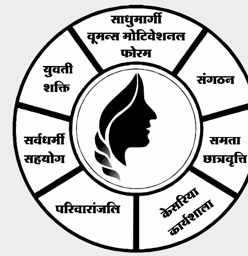


प्राणियों का वध करना ही हिंसा नहीं है, प्राणियों के वध की सोचना भी हिंसा है। हिंसा के चार भेद किये जा सकते हैं। यथा- मानसिक, वाचिक, कायिक एवं भाव हिंसा। प्राणी वध के लिए सोचने, उसका प्लान बनाने, किसी के अनिष्ट का विचार करने में मन के प्रयोग से जो हिंसा होती है, उसे मानसिक हिंसा कहते हैं। वाचिक हिंसा का सम्बध वचन प्रयोग से है। ऐसा वचन प्रयोग करना, जिससे किसी प्राणी के वध की प्रेरणा मिले - इसे मार डालो, इसे काट दो, इसके हाथ-पांव तोड़ दो, इसे तो मार ही देना चाहिए, ये पशु खाने के लिए ही तो हैं, जैसी बोली जाने वाली भाषा वाचिक हिंसा का रूप है। कायिक हिंसा उसे कहा गया है जिसमें प्राणीवध से जुड़ी हुई प्रवृत्ति काया से की जाए। किसी को मारने के लक्ष्य से शस्त्र, तीर, तलवार, रिवाल्वर, बंदूक, भाला, चाकू आदि को उठाना, उससे प्रहार करना आदि काया से की जाने वाली प्रवृत्ति कायिक हिंसा के अन्तर्गत मानी जाती है। भाव हिंसा, अध्यवसाय रूप है। भावना रूप है। भावना में वैसा प्रवाह बने रहना भाव हिंसा का रूप है। अपने या दूसरों के अहित का चिन्तन भी हिंसा ही है। तंदुलमच्छ छोटी अवगाहना वाला एवं अल्प आयुष्य वाला होते हुए भी भाव हिंसा के बल से सातवीं नरक में चला जाता है। उसने एक भी जीव का वध नहीं किया, पर भावों से हिंसा करता हुआ वह सातवीं नरक में अपने लिये स्थान बना लेता है। इसे हिंसा नहीं तो और क्या कहा जाएगा? दूसरे के प्रति बुरा सोचने से दूसरे का बुरा होगा या नहीं होगा निश्चित नहीं है, पर स्वयं के लिए तो बुरा हो ही जाता है। इस दृष्टि से विचार करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि अन्य के प्रति असद् सोच, बुरा विचार भी हिंसा की श्रेणी में आता है। इस प्रकार से विचार करने से हिंसा का दायरा विस्तृत हो जाता है। वह केवल प्राणीवध तक ही सीमित नहीं रहता। हिंसा से बचने का एक ही उपाय है - सदाचार का पालन। (उपांशु)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

## आनंदिनी

आनंदिनी आध्यात्मिक आरोग्यम् से संबंधित एक विशेष कार्यक्रम है, जिसमें मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के सामाजिक और पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव जैसे विषयों पर सेशन की शृंखला संभावित है। इच्छुक महिलाएँ यहाँ दिए गए QR Code के माध्यम से अपना रजिस्ट्रेशन करा सकती हैं।

## :::::: मांसाहार त्याग ::::::

शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन उद्बोधन से प्रेरित होकर बागझाप (असम) निवासी प्रीति तामुलि (पत्नी किशन कुमार बोरुआ) तथा तेजपुर (असम) निवासी सुदीप चौधरी ने मांसाहार आजीवन त्याग का संकल्प लिया।

# गर्भ संस्कार की दिव्य यात्रा

गर्भधारण से लेकर मातृत्व तक, शिशु के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए सिद्धांतों पर आधारित एक विशेष कार्यक्रम।

- संस्कारित गर्भ - उज्ज्वल भविष्य की नींव
- शुद्ध विचार, सत्कर्म और आध्यात्मिक साधना से गर्भस्थ शिशु को संस्कारित करें।
- ध्यान, स्वाध्याय और संयमित आहार से आत्मा को शुद्ध करें और नवजीवन को दिव्यता प्रदान करें।
- जल्द आ रहा है। सभी इस पावन प्रयास से जुड़ें और अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें!

# धार्मिक शिविर

| क्र. | क्षेत्र | विषय |
|---|---|---|
| 1. | गुंडरदेही | ध्यान, सामायिक सूत्र का अर्थ, ध्यान का स्वरूप कैसा हो, ध्यान कैसे करें, ध्यान में मन को कैसे स्थिर करें, अजीव पर्याय का थोकड़ा, उपयोग का थोकड़ा, 50 बोल की बंधी का थोकड़ा, 8 द्रव्येंद्रिय तथा 5 भावेंद्रिय का थोकड़ा **(सान्निध्य - शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.)** |
| 2. | बालोद | गुणस्थान का थोकड़ा, जीवधड़ा **(सान्निध्य - शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.)** |
| 3. | दुर्ग | गमक का थोकड़ा, श्री भगवती सूत्र के थोकड़े, गांगेय अनगार के थोकड़े **(सान्निध्य - शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.)** |
| 4. | अंबागढ़ चौकी | मोक्ष टूर, सचित्त-अचित्त का ज्ञान, धोवन पानी, संसार, अच्छी आदतें जीवन के लिए, छह आरे का वर्णन, तीर्थंकर : 34 अतिशय, समवसरण **(सान्निध्य - शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.)** |
| 5. | डौंडीलोहारा | लवण समुद्र का थोकड़ा, जीवधड़ा, जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रतिक्रमण, जंबूद्वीप **(सान्निध्य - शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.)** |
| 6. | तेजपुर | एक कदम शुद्धता की ओर **(सान्निध्य - शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा. )** |

# धार्मिक कार्य

| क्र.सं. | क्षेत्र | कार्य |
|---|---|---|
| 1. | ब्यावर | संजय इंक्लूसिव स्कूल में 11,000 की राशि प्रदान की गई। |
| 2. | उदयपुर | महाकालेश्वर अंबामाता मंदिर गौशाला में ₹3,100 का चारा डाला गया। |
| 3. | गुवाहाटी | आठगाँव में जरूरतमंद 500 लोगों को भोजन कराया गया। |
| 4. | तेजपुर | महर्षि धर्मचंददेव गौशाला में ₹7100 की सहयोग राशि प्रदान की। गौवंश हेतु रोटियाँ, गुड़ एवं अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। |
| 5. | बड़ीसादड़ी | सरकारी अस्पताल में फल वितरित किये गये एवं कबूतरों को दाने डाले गये। |
| 6. | भदेसर | कबूतरों को दाने डाले गये। |

## रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (फरवरी 2025)

| क्रमांक | अंचल का नाम | आंचलिक गतिविधि | 02–02 | 09–02 | 16–02 | 23–02 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मेवाड़ | आंचलिक उपस्थिति | 1936 | 2140 | 1396 | 1372 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 88 | 93 | 89 | 86 |
| 2 | बीकानेर–मारवाड़ | आंचलिक उपस्थिति | 525 | 5045 | 1196 | 782 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 43 | 39 | 43 | 46 |
| 3 | जयपुर–ब्यावर | आंचलिक उपस्थिति | 392 | 442 | 396 | 413 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 24 | 22 | 24 | 22 |
| 4 | मध्य प्रदेश | आंचलिक उपस्थिति | 1023 | 1254 | 841 | 962 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 76 | 73 | 74 | 73 |
| 5 | छत्तीसगढ़–ओड़िशा | आंचलिक उपस्थिति | 1932 | 3304 | 2021 | 1921 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 146 | 141 | 136 | 150 |
| 6 | कर्नाटक–आंध्र प्रदेश | आंचलिक उपस्थिति | 226 | 302 | 321 | 429 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 26 | 26 | 26 | 24 |
| 7 | तमिलनाडु | आंचलिक उपस्थिति | 210 | 325 | 251 | 291 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 16 | 18 | 14 | 12 |
| 8 | मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई. | आंचलिक उपस्थिति | 382 | 833 | 522 | 512 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 20 | 29 | 24 | 20 |
| 9 | महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश | आंचलिक उपस्थिति | 656 | 859 | 561 | 569 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 56 | 53 | 56 | 54 |
| 10 | बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखंड–आंशिक ओड़िशा | आंचलिक उपस्थिति | 381 | 764 | 401 | 396 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 41 | 46 | 44 | 43 |
| 11 | पूर्वोत्तर | आंचलिक उपस्थिति | 323 | 449 | 273 | 305 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 34 | 32 | 37 | 37 |
| 12 | दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरी | आंचलिक उपस्थिति | 136 | 127 | 93 | 123 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 8 | 8 | 8 | 8 |
| 13 | अंतरराष्ट्रीय शाखा | आंचलिक उपस्थिति | 21 | 38 | 12 | 18 |
| | | आंचलिक क्षेत्र | 10 | 9 | 5 | 8 |
| | संयुक्त रिपोर्ट | | | | | |
| | कुल उपस्थिति | | 8143 | 15882 | 8284 | 8093 |
| | कुल क्षेत्र | | 588 | 589 | 580 | 583 |

फरवरी माह में समता शाखा आराधना में विभिन्न अंचलों में निम्न नवीन क्षेत्र शामिल हुए हैं –

- **मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई अंचल -** (1) मोटी फलोद
- **महाराष्ट्र-खानदेश-विदर्भ अंचल -** (1) बुटीबोरी
- **बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल -** (1) दुर्गापुर (2) पूरी (3) खड़गपुर
- **पूर्वोत्तर अंचल -** (1) फुलेर्तल

इन क्षेत्रों में समता शाखा के लिए प्रयास करने हेतु सभी पदाधिकरियों एवं स्थानीय संघ सदस्यों को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा करते हैं कि इन क्षेत्रों में समता शाखा का आयाम निरंतरता के साथ गतिमान रहे तथा संख्या में अभिवृद्धि होती रहे। जिन ग्राम/शहर में अब तक समता शाखा नहीं हो रही है वहाँ भी आचार्य भगवन् के इस अनुपम आयाम से अवश्य जुड़ें।

# उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत माह संपन्न कार्यक्रमों का विवरण –

1. ममता देवी-कमलचंद जी लुणावत, नोखागाँव के सुपुत्र अमित एवं सुपुत्री अनिता का शुभविवाह सरला देवी-राणुलाल जी पींचा, खारिया पतावतान (श्रीकोलायतजी) की सुपुत्री अंजू एवं सुपुत्र पुनीत के साथ 2 फरवरी को सम्पन्न हुआ।
2. संगीता जी-मुकेश जी सूरिया, भीलवाड़ा की सुपुत्री रुचिका का शुभविवाह स्नेहलता जी-प्रदीप जी भड़कत्या, चित्तौड़गढ़ के सुपुत्र पियूष जी के साथ 2 फरवरी को सम्पन्न हुआ।
3. प्रमिला जी-हंसराज जी सेठिया, जावरा के सुपुत्र सीए प्रियांश का शुभविवाह पुष्पा जी-ललित जी सुराणा, रतलाम की सुपुत्री सीए निहारिका के साथ 13 फरवरी को सम्पन्न हुआ।

**विविध समाचार** – 9 मार्च को समता युवा संघ, सूरत द्वारा आहवा-डांग के ढूंढुनिया-पिंपरी के आदिवासी क्षेत्र में 250 से अधिक जरूरतमन्दों को खाने के पैकेट, साड़ी, चप्पल इत्यादि का वितरण किया गया।

## रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द शब्द सीमा अथवा एक पेज

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी अप्रैल एवं मई माह के धार्मिक अंक **गोचरी, गोचरी विवेक एवं तपस्या, तपस्या विवेक** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

9314055390

news@sadhumargi.com

– श्रमणोपासक टीम

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर ।। ।।जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

# कार्यसमिति बैठक

(सत्र 23-25)

**स्थान – गंगाशहर–भीनासर**
**जिला – बीकानेर (राज.)**

**सत्र-1**
दिनांक: 29 अप्रैल 2025
समय: दोपहर 04 : 15 बजे से

**सत्र-2**
समय: रात्रि 08 : 15 बजे से

षष्ठम बैठक

## श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

**आमंत्रित :** शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह-संयोजक, संयोजन मंडल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

## श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

**आमंत्रित :** शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, संभाग प्रमुखा, प्रवृत्ति संयोजिका, सह-संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्या

षष्ठम बैठक
दिनांक: 28 अप्रैल 2025
समय: रात्रि 08 : 15 बजे से

द्वितीय बैठक
दिनांक: 29 अप्रैल 2025
समय: दोपहर 04 : 15 बजे से

## श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

**आमंत्रित :** शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आंचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ/शाखा अध्यक्ष, एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

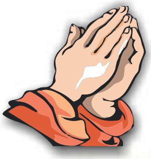

**निवेदक**
**राष्ट्रीय महामंत्री**

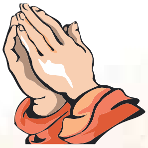

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**

**श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति** **श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

॥ जय गुरू नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरू राम ॥

राम चमकते भानु समाना

# सादर निवेदन

## उदयरामसर में श्री महावीर जयंती का पावन प्रसंग

हुक्म संघ के नवम नक्षत्र, युग निर्माता, निर्लिप्त अध्यात्म योगी, उत्क्रांति प्रदाता, रत्नत्रय के महान आराधक, व्यसनमुक्ति के प्रणेता, नानेश पट्टधर, गुणशील संप्रेरक

**आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय **श्री राजेश मुनि जी म.सा.**

की असीम कृपा से श्री साधुमार्गी जैन संघ, उदयरामसर (राज.) को सौभाग्योदय से वर्ष 2025 के भगवान महावीर स्वामी जी के 'जन्मकल्याणक'

## श्री महावीर जयंती (10 अप्रैल 2025)

का पावन प्रसंग प्राप्त हुआ है। आप सभी से निवेदन है कि अवसर पर पधारकर धर्माराधना का लाभ लेवें।
इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको परम पूज्य आचार्य भगवन्, बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर एवं विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन, प्रवचन का सहज ही लाभ प्राप्त हो सकेगा।

दिनांक 9 अप्रैल को आयोजित होने वाले **विश्व नवकार महामंत्र दिवस** के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में स्थानक में उपस्थित हो नवकार महामंत्र जाप करने का लाभ लेवें।

**:: संपर्क सूत्र एवं आवास-निवास व्यवस्था ::**

नेमीचंद सिपानी 9836939309
नवरतन सिपानी 9351208767
हर्षित तातेड़ 9364881450

*** निवेदक ***
कमल सिपानी
अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन संघ, उदयरामसर

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

राम चमकते भानु समाना

# अक्षय तृतीया एवं अक्षय संयम महोत्सव 2025

महत्तम महोत्सव

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, परमागम रहस्यज्ञाता, परम पूज्य **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर **श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.** की असीम अनुकंपा से 30 अप्रैल 2025 को पावन जैन भागवती दीक्षा एवं अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का पावन प्रसंग सौभाग्योदय से गंगाशहर-भीनासर संघ को प्राप्त हुआ है। सभी स्थानीय संघों एवं वर्षीतप आराधक श्रावक-श्राविकाओं से करबद्ध निवेदन है कि इस पावन अवसर पर पधारकर वर्षीतप पारणा व दीक्षा महोत्सव में सहभागी बनने का लाभ लेवें। इस शुभ अवसर पर पधारने से आपको आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ सहज ही प्राप्त होना संभावित है। आपके आगमन एवं प्रस्थान की पूर्व सूचना नीचे दिए गए संपर्क सूत्र पर प्रदान कर व्यवस्था में सहयोग प्रदान करें।

**:: संपर्क सूत्र ::**

अध्यक्ष (कौशल दुग्गड़) 9001037121
मंत्री (चंचल कुमार बोथरा) 8118824833

आवास-निवास व्यवस्था
पारस डागा : 9636370200
प्रवीण सुराणा : 9982092090

कार्यालय व्यवस्था
पानमल सुराणा
9414430435

**निवेदक**

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ
श्री समता महिला मंडल * श्री समता युवा संघ संघ
श्री समता बहू मंडल * बालिका मंडल
गंगाशहर-भीनासर (राज.)

|| जय् गुरु नाना ||    || जय् महावीर ||    || जय् गुरु राम् ||

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया के पावन अवसर से प्रारंभ होने वाला

# समता जल सेवा प्रकल्प

# अमृतम्

"सेवा की एक बूँद, जीवन का अमूल्य रस!"

**दिनांक : 30 अप्रैल 2025 से**

## जल-सेवा कहाँ कर सकते हैं ?

1. बस स्टैंड, रेलवे स्टैंड, हॉस्पिटल, प्रतीक्षालय।
2. विद्यालय, सार्वजनिक स्थान, व्यस्त मार्ग।
3. स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति अनुरूप स्थान का चयन।

## जल-सेवा में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. स्थान का चयन स्थानीय प्रशासनिक नियमानुसार हो।
2. स्थान साफ-सुथरा व स्वच्छ हो और वहाँ पानी का भराव न हो।
3. स्थानीय सदस्य देखरेख कर सकें, ऐसा स्थान हो।

सभी संघों से निवेदन ग्रीष्मकाल में प्याऊ संचालन का लक्ष्य रखें।

**Save Water - Save Earth**

टीम सामाजिक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

।। जय गुरु नाना।।

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु राम।।

चम चमकते भानु समाना

# श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

## प्रारंभिक परीक्षाएँ

## वैकल्पिक परीक्षाएँ

- वैकल्पिक जैन स्तोक परीक्षा ( थोकड़ों की परीक्षाएँ )
- वैकल्पिक जैन आगम कंठस्थ ( आगमों की परीक्षाएँ )
- वैकल्पिक जैन संस्कृत परीक्षा ( संस्कृत प्राकृत परीक्षाएँ )
- वैकल्पिक जैन हिंदी परीक्षा ( राष्ट्रभाषा की परीक्षाएँ )

**परीक्षा दिनांक :** ये परीक्षाएँ वर्ष में दो बार आयोजित होती हैं। इस वर्ष ये परीक्षाएँ 6 जून, 2025 से प्रारंभ हो रही हैं। आप आज ही आवेदन करें तथा अपने क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा प्रभावना करावें।

अन्य किसी जानकारी हेतु 7231933008 व्हाट्सएप्प कर सकते हैं।
आवेदन करने हेतु QR Code स्कैन करें।

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

# भावभीनी श्रद्धांजलि

## स्मृतिशेष
## कु. वर्षा जी पुगलिया

पलभर भी भूल नहीं पाते, हर पल याद तुम्हारी आती है,
घर-आँगन सूना-सा लगता है, हर जगह तू नजर आती है।
संग तेरे बिताए उन लम्हों को, याद करके आँखे भर जाती हैं,
परछाई की तरह साथ निभाती यादें, मीठी-सी मुस्कान दे जाती है।।

देव, गुरु, धर्म के प्रति निष्ठावान सुश्रावक प्रदीप जी पुगलिया एवं सुश्राविका किरण देवी की सुपुत्री **कु. वर्षा पुगलिया** का 28 वर्ष की अल्पायु में दिनांक **17 दिसंबर 2024** को आकस्मिक निधन हो गया। बारिश की बूंदों के बीच जन्मी वर्षा सभी सुकार्यों में अग्रणी रहती थी। अल्पायु में ही धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक सभी क्षेत्रों में खूब नाम कमाया। जिंदादिली, मिलनसार व्यवहार, हंसमुख एवं सहयोगी स्वभाव के कारण जो भी आपसे मिलता वह अपनत्व से भर जाता था। आप एमबीए की शिक्षा ग्रहण कर वर्तमान में कोयंबटूर में बी.एन.आई. ग्रुप की अध्यक्ष थी। माता-पिता से प्राप्त संस्कारों की धरोहर के कारण आप आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धावान थी। चातुर्मास व अन्य अवसरों पर जब भी चारित्रात्माओं का सान्निध्य मिलता तो आप सेवा का लाभ लेने से नहीं चूकती थी। तपस्या के क्षेत्र में भी आपने अग्रणी रहते हुए उपवास, बेला, लगभग 8 तेले, अठाई एवं एक माह लगातार एकासन आदि तप किये। धर्म-ध्यान सीखने में भी आपकी विशेष रुचि थी।

जाना तो सबको पड़ता है, अमर नहीं रहता है कोई।
पर ऐसे भी कौन जाता है, बारिश की बूँदों की तरह, आई और चली गई।।

विधि के विधान के आगे हम सभी नतमस्तक हैं। शासनदेव से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शीघ्रातिशीघ्र शाश्वत सुख प्रदान करें।

**:: श्रद्धानवत ::**

**किरण-प्रदीप पुगलिया** (माता-पिता), **दिव्या-निहाल जी** (बहन-बहनोई), **हर्षिता** (छोटी बहन), **लक्ष्य** (भांजा), **सुगन जी, प्रसन्न जी** (बड़े पापा), **सुशील जी, बादल जी** (बड़े भैया)
**एवं समस्त पुगलिया परिवार, बीकानेर, कोयंबटूर, चेन्नई।**
**ननिहाल पक्ष : सी.ए. सचिन कोठारी** (मामाजी), **तेजस कोठारी** (भाई)
**एवं समस्त कोठारी परिवार, डेह, गुवाहाटी, नौगाँव (असम)।**

**:: प्रतिष्ठान ::**

**Pugalia Trading Company**
**Power Tape Industries**
**Coimbatore-12**

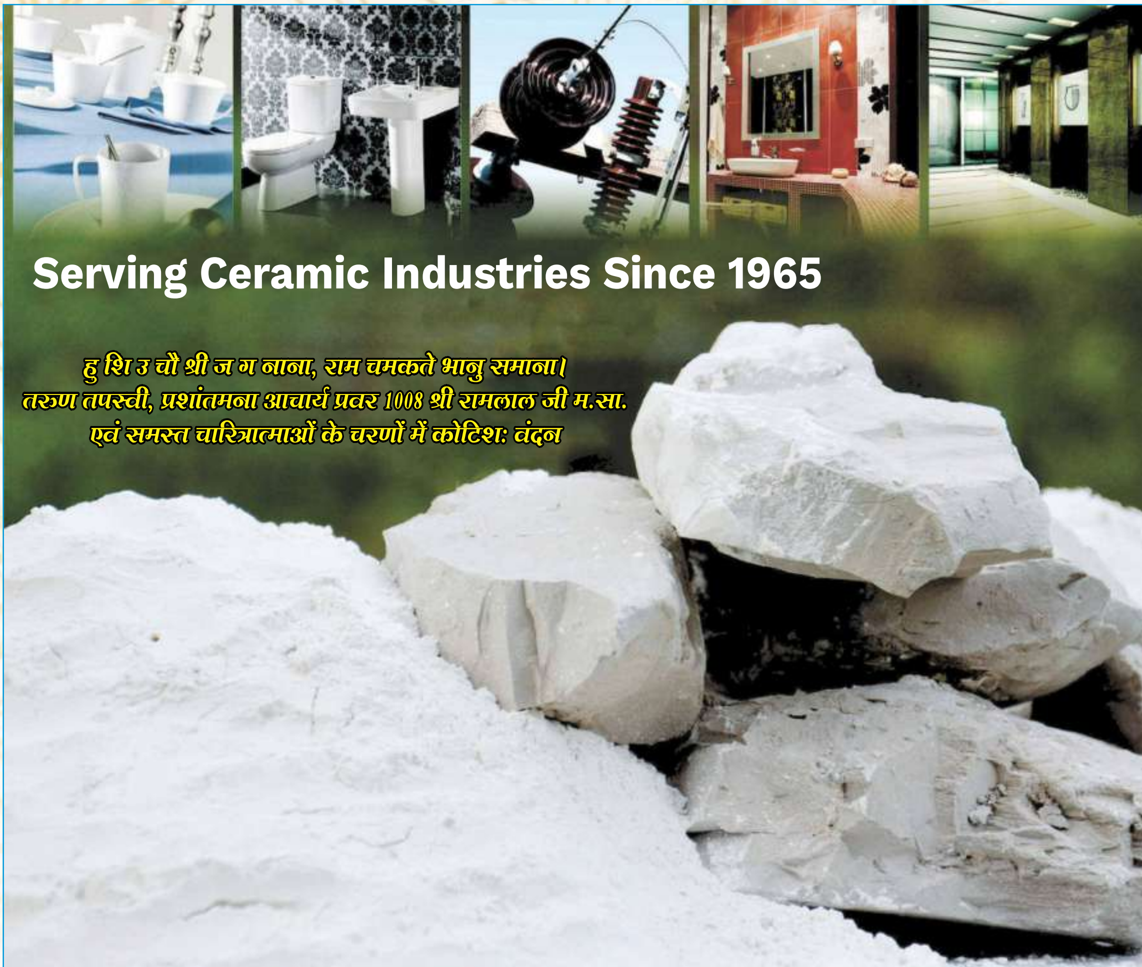


## *A Premier Clay Specialists in The Country...*

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

**JLD MINERALS**
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

# सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

# सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

*Sipani Seva Sadan-2*
*Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106*
*Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335*

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां


प्रकाशक

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261
**helpdesk@sadhumargi.com**

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

**नरेन्द्र गांधी, जावद**

सह संपादिका

**श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर**


## श्रमणोपासक सदस्यता

| | | |
|---|---|---|
| केवल भारत में | 1,000/- | (15 वर्ष के लिए) |
| विदेश हेतु | 15,000/- | (10 वर्ष के लिए) |

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

| | |
|---|---|
| वार्षिक | 50/- |

### संघ सदस्यता

| | |
|---|---|
| **साधारण सदस्यता** | 500/- |
| **आजीवन सदस्यता** | 5,000/- |

### साहित्य सदस्यता

**15 वर्ष** (केवल भारत में) 3,000/-

**संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-**

E-mail : ho@sadhumargi.com

## बैंक खाता विवरण

**Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner**

**State Bank of India**

SCAN & PAY

| | |
|---|---|
| Account No. : | 31264126681 |
| IFSC Code : | SBIN0003401 |
| Branch : | G.S. ROAD, Bikaner |
| Mob. : | 7073311108 |
| E-mail : | accounts@sadhumargi.com |

## व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

| | | |
|---|---|---|
| श्रमणोपासक | 9799061990 | news@sadhumargi.com |
| श्रमणोपासक समाचार | 8955682153 | news@sadhumargi.com |
| साहित्य | 8209090748 | sahitya@sadhumargi.com |
| महिला समिति | 6375633109 | ms@sadhumargi.com |
| समता युवा संघ | 7073238777 | yuva@sadhumargi.com |
| धार्मिक परीक्षा | 7231933008 | examboard@sadhumargi.com |
| कर्म सिद्धांत | 7976519363 | examboard@sadhumargi.com |
| परिवारांजलि | 7231033008 | anjali@sadhumargi.com |
| विहार | 8505053113 | vihar@sadhumargi.com |
| पाठशाला | 9982990507 | pathshala@sadhumargi.com |
| शिविर | 7231833008 | udaipur@sadhumargi.com |
| ग्लोबल कार्ड अपडेशन | 6265311663 | globalcard@sadhumargi.com |
| सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ | 9602026899 | |
| शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ | 7231933008 | |
| संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only) | 8535858853 | |

### -: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

## आवश्यक सूचना

**सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।**

**मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।**

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261